सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
इंदौर
गुरुवार, 26 फरवरी, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 146, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत के लिए अपना एआई स्टैक बनाना अब रणनीतिक जरूरत

मीनाक्षी लेखी

एक युवा महिला के रूप में, मैंने जॉर्ज ऑर्वेल की 1984 पढ़ी थी, जिसमें एक ऐसी दुनिया की कल्पना की गई थी जहां तकनीक हर जगह मौजूद हो और हर चीज़ में दखल देने वाली हो। इंसान लगातार तकनीक की निगरानी में था। यह भविष्य अब दूर नहीं है, जैसा कि हमने पिछले हफ्ते नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में एक ही छत के नीचे दिखाई गई सभी नई तकनीकों के साथ देखा।

यह हमारे लिए बहुत गर्व और राष्ट्रीय महत्व की बात थी कि हम दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच पाए और उसे बनाए रख पाए. इस कार्यक्रम में 5 लाख से ज्यादा लोग आए और कई और लोग ऑनलाइन जुड़े क्योंकि सत्र इंटरनेट पर उपलब्ध कराए गए थे। 88 देशों ने एआई पर नई दिल्ली समझौते पर हस्ताक्षर किए और सभी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस बात को स्वीकार किया कि तकनीक को लोकतांत्रिक बनाना जरूरी है ताकि बदलाव लाया जा सके।

गलगोटिया गेट की शर्मनाक घटना और शोर-शराबे, और राहुल गांधी के बनियान बॉयज़ के तमाशे के धुंध से आगे बढ़ते हुए, यह दुनिया के सबसे बड़े एआई शिखर सम्मेलन की सफलताओं और कमियों पर शांत होकर सोचने का समय है। आइए मुख्य बातों का विश्लेषण करें। एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने प्लेनेट (पृथ्वी), पीपल (लोग) और प्रोग्रेस (प्रगति) के तीन सूत्रों का ढांचा पेश किया था। भारत के लिए यह विचार नया नहीं है, क्योंकि हमारी प्राचीन सोच मानती है कि पृथ्वी एक साझा विरासत है, कोई वस्तु नहीं। इसलिए एआई को शोषण का नहीं, बल्कि सबको साथ लेकर चलने वाला एक साधन बनना चाहिए। भारत का दृष्टिकोण तकनीकी बदलाव के केंद्र में प्लेटफॉर्म नहीं, बल्कि लोगों को रखता है और यही असली प्रगति का संतुलन है। जैसा कि पीएम मोदी ने कहा, 'यह माना जाता है कि यह शिखर सम्मेलन मानव-केंद्रित, संवेदनशील वैश्विक एआई इकोसिस्टम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।' इसलिए, असली प्रगति तब होगी जब तेजी से हो रहे नवाचार में मूल्य सबसे पहले आगे बढ़ें; जहां एआई समृद्धि बढ़ाए, लेकिन धर्म, समावेशिता और भरोसे से जुड़ा रहे।

वैश्विक कॉर्पोरेट नेता और भारत का टेक इकोसिस्टम देश को एआई के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर देख रहे हैं, जहां विशाल मानव संसाधन और डेटा का उपयोग करके भारत डीपटेक और एआई का लीडर बन सकता है।

एआई जिस गति से आगे बढ़ रहा है, वह एक केन्द्रापसारक बल (centrifugal force) की तरह है, जो अपने साथ बदलाव की तेज़ हवाएं ला रहा है। इस संदर्भ में, Sarvam एआई और BharatGen जैसे स्वदेशी मॉडलों का उभरना आम लोगों के लिए खुशी की बात ही हो सकती है। फॉर्च्यून बिज़नेस इनसाइट के अनुसार, 'भारत के एआई मार्केट का आकार 2024 में 9.51 अरब डॉलर था और यह मार्केट 2025 में 13.05 अरब डॉलर से बढ़कर 2032 तक 130.63 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जिसमें अनुमानित अवधि के दौरान 39.00 प्रतिशत की CAGR होगी।' ये आंकड़े खुद ही सब कुछ बताते हैं। भारत उभरती एआई तकनीकों के लिए एक बहुत बड़ा मार्केट है और इसका बड़ा पैमाना इसे वैश्विक एआई कंपनियों के लिए एक आकर्षक बाजार बनाता है। इस स्पीड को दिखाते हुए, शिखर सम्मेलन में 500 से ज्यादा एआई लीडर्स, 100 से ज्यादा संस्थापकों और मुख्य कार्यकारी अधिकारियों, 150 शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं, और लगभग 400 मुख्य तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्था का 70 प्रतिशत हिस्सा डिजिटल होगा। रिपोर्ट के अनुसार, भारत 2028 तक 1 ट्रिलियन डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था बन सकता है और केवल डिजिटल भुगतान 2026 में 10 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकते हैं। एआई की (बदलाव लाने वाली) क्षमता को ध्यान में रखते हुए, यह भी समझदारी है कि एआई कंपनियों को भारत के 1.4 अरब लोगों के डेटा तक जो पहुंच है, उस पर विचार किया जाए और इस बात पर भी कि इतना बड़ा डेटा भंडार अगर गलत हाथों में चला जाए तो कितना खतरा हो सकता है। आधार के विपरीत, जिसे भारत की अपनी संस्थाओं ने विकसित किया था, ज्यादातर बैसिक LLMs अमेरिकी (OpenAI का ChatGPT), फ्रांसीसी (Claude AI) और चीन की कंपनियों के मालिकाना हक में हैं। जब हमारे नागरिकों की निजी डिजिटल जिंदगी–जैसे उनका स्वास्थ्य, आदतें, भाषा और आजीविका–विदेशी एआई सिस्टम द्वारा, जो हमारे नियामक नियंत्रण से बाहर हैं, प्रोसेस और उससे कमाई की जाती है, तो संप्रभुता का मतलब नया हो जाता है। हमने यह फेसबुक और एक्स के मामले में देखा है। एआई में नेतृत्व के लिए स्वदेशी LLMs और तकनीकी ढांचे की ज़रूरत है। डेटा, जमीन और पानी की तरह, अब एक राष्ट्रीय संसाधन है, जिसे सुरक्षित रखना, नियंत्रित करना और जनता के हित में यूज़ करना ज़रूरी है। हालांकि, भारत की चुनौती यह नहीं है कि वह ग्लोबल इनोवेशन से पीछे हट जाए, बल्कि उसके साथ बराबरी की शर्तों पर जुड़ना है, यह सुनिश्चित करते हुए कि भारतीय जीवन से ट्रेन किया गया एआई आखिरकार भारतीय लोगों के लिए, भारतीय लोगों द्वारा, और भारतीय लोगों का हो। भारत को अपना खुद का एआई स्टैक बनाना चाहिए, और इसके लिए स्पष्ट guardrails (सुरक्षा नियम) की ज़रूरत है– संप्रभुता, localisation और accountability पर। इसके लिए सार्वजनिक डिजिटल ढांचे और डिजिटल निगरानी का समर्थन चाहिए, ताकि भारत नवाचार में दुनिया के साथ एक रणनीतिक भागीदार के रूप में जुड़ सके। जैसा कि ऑर्वेल की 1984 ने चेतावनी दी थी कि एक ऐसी दुनिया होगी जहां शक्ति उन लोगों के पास होगी जो जानकारी को नियंत्रित करते हैं, एआई के युग में यह सवाल उठता है: हमारे जीवन को परिभाषित करने वाले डेटा का मालिक कौन है? जब डिजिटल जिंदगी का टकराव व्यापार से होता है, तो स्वायत्तता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता बिग डेटा के सामने कमज़ोर हो सकती है।

इस पृष्ठभूमि में, भारत ने अपना आत्मनिर्भर एआई प्लेटफॉर्म Sarvam एआई डेवलप किया है और शुरुआती रिपोर्ट अच्छी हैं। 'भारत के लिए खास तौर पर एआई सिस्टम बनाने के विजन के साथ, Sarvam एआई एक ऐसा संगठन है जो बुनियादी घटकों का निर्माण करके और उन्हें भारत की अनोखी भाषा, एंटरप्राइज और शासन की ज़रूरतों पर लागू करके भारत के लिए एआई डेवलप कर रहा है।' संगठन अपने मिशन का वर्णन करता है। यह फुल-स्टैक एआई प्लेटफॉर्म पूरी तरह भारत में डिजाइन, विकसित और लागू किया गया है, जो सच में मेक इन इंडिया पहल है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

एनसीईआरटी किताब में 'ज्यूडीशियल करप्शन' पर संग्राम

● चैप्टर पर सीजेआई का ऐक्शन, कहा-बदनाम करने की इजाजत नहीं ● चीफ जस्टिस बोले- यह सोचा-समझा कदम लग रहा, केस खुद देखूंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने एनसीईआरटी की 8वीं कक्षा की किताब में 'न्यायपालिका में भ्रष्टाचार' का चैप्टर शामिल किए जाने पर नाराजगी जताई है। सीजेआई ने कहा- किसी को भी न्यायपालिका को बदनाम करने की इजाजत नहीं दी जाएगी। बुधवार को सीजेआई सूर्यकांत, जस्टिस विपुल एम पंचोली और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच में यह मामला सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने उठाया था। इस पर चीफ जस्टिस ने कहा-मुझे इसकी पूरी जानकारी है। यह पूरे ज्यूडीशियल इंस्टीट्यूशन के लिए चिंता की बात है। यह सोचा-समझा कदम लग रहा है। मैं किसी को भी, चाहे वे कितने भी ऊंचे पद पर क्यों न हों, इंस्टीट्यूशन को बदनाम नहीं करने दूंगा। मैं इस मामले पर खुद नोटिस ले रहा हूं। इंडिया एंड बियॉन्ड पार्ट 2' में 'द रोल ऑफ द ज्यूडीशियरी इन अवर सोसायटी' टॉपिक के अंदर ज्यूडिशियरी में करप्शन का टॉपिक जोड़ा है। इसका पहला पार्ट जुलाई 2025 में रिलीज किया गया था। ये किताब एकेडमिक सेशन 2026-27 से स्कूलों में पढ़ाई जानी है।

● किताब में पूर्व सीजेआई बीआर गवई का भी जिक्र

किताब में भारत के पूर्व चीफ जस्टिस बीआर गवई का भी जिक्र है, जिन्होंने जुलाई 2025 में कहा था कि ज्यूडिशियरी के अंदर करप्शन और गलत कामों के मामलों का पब्लिक ट्रस्ट पर बुरा असर पड़ता है। उन्होंने कहा था, हालांकि, इस ट्रस्ट को फिर से बनाने का रास्ता इन मुद्दों को सुलझाने के लिए उठाए गए तेज, निर्णायक और ट्रांसपेरेंट एक्शन में है... ट्रांसपेरेंसी और अकाउंटेबिलिटी डेमोक्रेटिक गुण हैं। एनसीईआरटी की 8वीं क्लास की सोशल साइंस का पार्ट 2 इसी हफ्ते जारी हुआ है। सीजेआई की टिप्पणी के बाद फिलहाल ये किताब एनसीईआरटी की वेबसाइट पर उपलब्ध नहीं है।

● **किताब में लिखा, इंसाफ में देरी नाइंसाफी की तरह है**– सोशल साइंस की इस किताब में लिखा गया है– इंसाफ में देरी नाइंसाफी की तरह है। यहां सुप्रीम कोर्ट में 81 हजार, हाईकोर्ट्स में 62 लाख 40 हजार, डिस्ट्रिक्ट और सबऑर्डिनेट कोर्ट के 4 करोड़ 70 लाख पेंडिंग केस की संख्या भी बताई गई है। सीनियर वकील कपिल सिब्बल और अभिषेक एम सिंघवी ने सीजेआई की बेंच के सामने कहा– बच्चों को ज्यूडिशियरी में करप्शन का सब्जेक्ट ऐसे पढ़ाया जा रहा है जैसे यह कहीं और, किसी और इंस्टीट्यूशन में है ही नहीं। यह चिंता का विषय है। हम यहां बार काउंसिल की चिंता लेकर आए हैं। दोनों वकीलों ने कहा, किताब में ब्यूरोक्रेसी, पॉलिटिक्स वगैरह को छोड़ दिया है। दूसरे सेक्टर्स पर एक शब्द भी नहीं। वे ऐसे पढ़ा रहे हैं जैसे यह सिर्फ इसी इंस्टीट्यूशन में है। जवाब में सीजेआई ने कहा, प्लीज थोड़ा इंतजार करें। मुझे बार और बेंच दोनों से बहुत सारे कॉल, मैसेज आ रहे हैं। सभी हाईकोर्ट के जज समेत सिस्टम का हर स्टेकहोल्डर परेशान है। मैं इस मामले को खुद देखूंगा। कानून अपना काम करेगा। बेंच में शामिल जस्टिस बागची ने भी कहा कि यह किताब बेसिक स्ट्रक्चर के ही खिलाफ लगती है।

शरद की सुबह

करके फांके गुजर गया कोई
और खा-खा के मर गया कोई।
चलते चलते मेरे घर के आगे
एक पल क्यों ठहर गया कोई।
घर मे, बाहर भी बस अंधेरा था
दीप देहरी पे धर गया कोई।
मैं खड़ा देखता था मेले में
इधर आया उधर गया कोई।
रोज़ मंज़र यहाँ बदलते हैं
कोई सँवरा बिखर गया कोई।
वाक़ये भी अजब गुजरते हैं
किसका चारा था चर गया कोई।
बस सियासत का बोलबाला है
है बचा गाँव न शहर कोई।

– दिनेश मालवीय 'अश्क'

40 साल बाद बाहर जाएगी नक्सली संगठन की कमान

● माओवाद के तेलंगाना युग का अंत, एक साल में ढेर हुए 10 टॉप कमांडर

रायपुर (एजेंसी)। माओवादी संगठन में पहली बार तेलंगाना कैडर से बाहर नेतृत्व जाने की संभावना है। थिप्पिरि तिरुपति उर्फ देवजी और मल्लाजी रेड्डी उर्फसंग्राम के समर्पण के बाद संगठन में नेतृत्व का संकट गहरा गया है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि ये दोनों शीर्ष माओवादी तेलंगाना पुलिस की हिरासत में हैं। देवजी के समर्पण से तेलंगाना कैडर का वह दबदबा खत्म हो रहा है, जो करीब 40 सालों से माओवादी हिंसा की दिशा तय कर रहा था। अब संगठन की कमान मिशिर बेसरा के हाथों में जाने की आशंका है। देवजी माओवादी संगठन के हिंसक दल का प्रमुख था और अनौपचारिक रूप से भाकपा (माओवादी) के महासचिव की भूमिका निभा रहा था। उसके समर्पण से तेलंगाना कैडर का वह वर्चस्व समाप्त हो गया है, जो पिछले चार दशकों से था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मिशन क्षमतावर्धन कार्यशाला का किया शुभारंभ

आजीविका मिशन की दीदियाँ प्रदेश की अर्थव्यवस्था को कर रही हैं सशक्त

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आजीविका मिशन से जुड़ी दीदियाँ एकता की शक्ति का सजीव उदाहरण है। बहनों द्वारा एकजुटता से किए जा रहे प्रयास 'बंद मुट्ठी लाख की' के भाव को चरितार्थ करते हुए देश और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। बहनें आज ट्रैक्टर से लेकर ड्रोन तक चलाने के साथ गैस और पेट्रोल रिफिलिंग जैसे कार्य भी कर रही हैं। कैफे संचालन से लेकर मार्केट का टारगेट पूरा करने में अव्वल बहनें अचार, पापड़ निर्माण सहित कई छोटे उद्योगों से बेहतर कमाई कर रही हैं। भारतीय संस्कृति में मातृ सत्ता का विशेष महत्व है। राज्य सरकार के प्रयासों से प्रदेश की बहनें सशक्त हो रही हैं। प्रदेश के 5 लाख स्व-सहायता समूहों से 65 लाख से अधिक दीदियां जुड़कर सशक्त हुई हैं। इनमें से 12 लाख से अधिक दीदियां लखपति दीदी बन चुकी हैं। राज्य सरकार प्रदेश की बहनों के सशक्तिकरण के लिए संकल्पित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व-सहायता समूहों ने एक वर्ष में विभिन्न कंपनी और मेलों के माध्यम से 310 करोड़ रुपए का व्यापार किया है। मध्यप्रदेश,

देश का सर्वाधिक प्राकृतिक खेती वाला राज्य है। हमारे स्व-सहायता समूहों की 50 हजार बहनें प्राकृतिक खेती में जुटी हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2026-27 के बजट में महिला बाल विकास विभाग में 26 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। साथ ही बजट का कुल 34 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण विकास पर खर्च किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में स्वसहायता समूहों की आजीविका मिशन क्षमतावर्धन कार्यशाला का शुभारंभ कर कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया। कार्यशाला में पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, कौशल विकास मंत्री श्री गौतम टेटवाल और पंचायत और ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह उपस्थित थीं।

रीवा में रावण की 60 साल पुरानी प्रतिमा पर टकराव

एक पक्ष बोला- विकास रुका, अशुभ है, हटाओ, दूसरे ने कहा- विद्वान था, खरोंच नहीं आने देंगे

रीवा (नप्र)। विंध्य की धरती पर इन दिनों आस्था और मान्यता के बीच टकराव की स्थिति बन गई है। टकराव का कारण रीवा जिले के त्योंथर में करीब 60 साल पुरानी रावण की 10 फीट की प्रतिमा है। एक पक्ष का दावा है कि यह प्रतिमा दोष, बीमारी और विकास में बाधा का कारण है, इसलिए इसे हटा दिया जाना चाहिए। ज्योतिषी और धर्मगुरु इसे वास्तु दोष की वजह बता रहे हैं। वहीं दूसरा पक्ष लंका के राजा रावण की विद्वता का प्रतीक मानते हुए प्रतिमा को खरोंच तक नहीं आने देने की चेतावनी दे रहा है।

पीडब्ल्यूडी के एक अधिकारी ने लगवाई थी प्रतिमा- त्योंथर के बीचों-बीच दशानन मैदान में रावण की प्रतिमा स्थापित है। बैठे हुए रावण की यह प्रतिमा काफी बड़ी है। लोगों के अनुसार- करीब 6 दशक पहले पीडब्ल्यूडी के एक अधिकारी ने कुछ लोगों के सहयोग से इसे स्थापित किया था। इतने सालों तक दशहरा पर सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में इसे मानते आ रहे हैं। समय के साथ क्षेत्र की पहचान रावण की प्रतिमा ही बन गई।

6 महीने पहले बीमारी फैली तो बनी टकराव की स्थिति- करीब 6 महीने पहले क्षेत्र में बीमारी फैली। यहां बड़े से लेकर बच्चे तक बुखार, थायराइड, चर्म रोग से पीड़ित हो गए। कुछ को कैंसर डिटेक्ट हुए। ज्यादातर बच्चे मौसमी बीमारी की चपेट में थे। कुछ लोग रीवा आकर बस गए। क्षेत्र विकास की दृष्टि से काफी पिछड़ा है, ऐसे में बीमारी से लेकर विकास कार्यों के ठप होने को लेकर कुछ ग्रामीणों ने रावण की प्रतिमा को ही अशुभ संकेत से जोड़ना शुरू कर दिया।

● **सोशल मीडिया ग्रुपों पर चलने लगीं भ्रामक खबरें**– नगर के कई सोशल मीडिया ग्रुपों पर ऐसी भ्रामक खबरें चलने लगीं। यह बात तेजी से फैली कि मूर्ति हटेगी तो दोष खत्म होगा और विकास का रास्ता खुलेगा। कुछ लोग तो ज्योतिषियों के शरण में पहुंच गए। कई इसे वास्तुदोष भी मानकर चलने लगे। हालात ऐसे बने कि नगर के ही दो गुट आमने-सामने हो गए। एक प्रतिमा हटाने पर अड़ गया। दूसरा ग्रुप प्रतिमा हटाने वालों को देख लेने की धमकी देने लगा।

झारखंड के पूर्व सीएम चंपई सोरेन के पोते की मौत

दवा खाने के बाद मुंह से निकला झाग, पुलिस जांच में खुले कई राज

मनाली (एजेंसी)। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन के पोते वीर सोरेन की हिमाचल प्रदेश के मनाली में मौत पर कई सवाल उठ रहे हैं। पुलिस जांच में कई राज खुले हैं। वीर दोस्तों के साथ चार दिन पहले मनाली पहुंचा था। चर्चा थी कि हाई एल्टीट्यूड पर जाने से उसकी तबीयत खराब हुई, लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं हा रहा है। वीर सोरेन की मंगलवार सुबह तबीयत ठीक नहीं थी। इस कारण वह दोस्तों के साथ घूमने नहीं गया था और होम स्टे में ही रहा। दोपहर को दोस्त लौटे तो वीर ने सिरदर्द होने की बात बताई थी। दोस्तों ने उसे ऑनलाइन दवाई मंगवाई, जिसे खाने के बाद उसकी मौत हो गई।

हेलीकॉप्टर में चम्पाई सोरेन, पोस्टमार्टम से किया मना- वीर सोरेन के दादा पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन भी मनाली पहुंचे। उन्होंने शव का पोस्टमार्टम करवाने से मना कर दिया। उन्होंने पोते का शव घर ले जाने की इच्छा जताई है। दोपहर को स्वजन शव लेकर चले गए। पूर्व सीएम किराये के हेलीकॉप्टर में मनाली पहुंचे थे। हेलीकॉप्टर में ही शव लेकर रवाना हो गए। डीएसपी मनाली केडी शर्मा ने बताया कि वीर के शरीर पर चोट के निशान नहीं हैं। पुलिस हर पहलू को ध्यान में रखते हुए -मामले की जांच कर रही है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 26 फरवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

4 लाख 42 हजार से अधिक किसानों ने समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये कराया पंजीयन

भोपाल (नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने जानकारी दी है कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये अब तक 4 लाख 42 हजार 288 किसानों ने पंजीयन करा लिया है। किसान 7 मार्च तक पंजीयन करा सकते हैं। उन्होंने किसानों से अपील की है कि निर्धारित समय में पंजीयन जरूर करा लें। उन्होंने बताया है कि किसान पंजीयन की व्यवस्था को सहज और सुगम बनाया गया है। कुल 3186 पंजीयन केन्द्र बनाये गए हैं। केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2026-27 के लिये गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 2585 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया है, जो गत वर्ष से 160 रूपये अधिक है।

मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि अभी तक इंदौर संभाग में 54 हजार 587, उज्जैन में एक लाख 48 हजार 905, ग्वालियर में 9695, चम्बल में 4692, जबलपुर में 39 हजार 885, नर्मदापुरम में 34 हजार 181, भोपाल में एक लाख 9 हजार 134, रीवा में 13 हजार 260, शहडोल में 2551 और सागर में 25 हजार 398 किसानों ने पंजीयन कराया है।

पंजीयन की नि :शुल्क व्यवस्था

पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था ग्राम पंचायत और जनपद पंचायत कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर, तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर और सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्र पर की गई है।

पंजीयन की सशुल्क व्यवस्था

पंजीयन की सशुल्क व्यवस्था एम.पी. ऑनलाईन कियोस्क, कॉमन सर्विस सेन्टर कियोस्क, लोक सेवा केन्द्र और निजी व्यक्तियों द्वारा संचालित साइबर कैफे पर की गई है।

प्रसव पीड़ा से तड़प रही थी, अस्पताल बंद मिला

गेट पर जन्मा बच्चा, परिजनों का आरोप- डॉक्टर, नर्स नहीं थे, डॉक्टर सहित तीन को नोटिस

खरगोन (नप्र)। खरगोन में एक गर्भवती महिला को प्रसव पीड़ा होने पर जब अस्पताल ले जाया गया तो वह बंद मिला। प्रसव पीड़ा से तड़प रही महिला का मजबूरी में अस्पताल के बाहर गेट पर प्रसव कराना पड़ा। यह मामला बुधवार सुबह 6 बजे झिरन्या ब्लॉक के आभापुरी स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का है। इसकी जानकारी सुबह जब प्रशासन को लगी तो अफरा तफरी मच गई। अब अधिकारी अपने बचाव में सफाई दे रहे हैं। परिजनों का आरोप है कि जब वे स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे, उस समय वहां कोई भी डॉक्टर, नर्स या अन्य स्वास्थ्य कर्मी मौजूद नहीं था। परिजन रवींद्र भूरिया ने बताया कि स्टाफ के अभाव में महिला को तत्काल इलाज नहीं मिल सका। इसी दौरान महिला को तेज प्रसव पीड़ा शुरू हो गई और मजबूरी में स्वास्थ्य केंद्र के बाहर ही प्रसव कराना पड़ा। कुछ समय बाद स्थानीय लोगों की मदद से महिला और नवजात को संभाला गया।

घटना से नाराज परिजनों ने स्वास्थ्य विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि यदि समय पर स्टाफ मौजूद होता तो महिला को सुरक्षित रूप से अंदर भर्ती कर प्रसव कराया जा सकता था। परिजनों ने मामले की जांच और जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग की है।

सीएमएचओ बोले- परिजन समय पर अस्पताल नहीं पहुंचे

मामले में खरगोन जिले के सीएमएचओ डॉ. डीएस चौहान ने बताया कि उन्हें स्वास्थ्य केंद्र के बाहर प्रसव की जानकारी मिली है। उनके अनुसार, महिला को फुल टाइम प्रसव पीड़ा चल रही थी और परिजन उसे समय पर अस्पताल नहीं पहुंचा पाए।

सीएमएचओ ने यह भी स्पष्ट किया कि घटना के बावजूद जच्चा और बच्चा दोनों पूरी तरह स्वस्थ हैं। फिलहाल, महिला और नवजात की देखरेख की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा पूरे मामले की जानकारी जुटाई जा रही है।

सखियों ने पुलिसवालों को मारे लट्ठ,होली की धूम

मथुरा के बरसाना में लट्ठमार होली में ढोल-नगाड़ों पर डांस

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा के बरसाना में बुधवार को प्रसिद्ध लट्ठमार होली खेली जा रही है। सुबह से ही बरसाने की गलियां भक्तों से सजी-धजी हैं। हर तरफ अबीर-गुलाल दिखाई दे रहा है। गुलाल से रंगे भक्त ढोल-नगाड़ों की धुन पर झूम रहे हैं। डांस कर रहे हैं। होली के गीत गा रहे हैं। इससे पहले सुरक्षा व्यवस्था में तैनात पुलिसवालों के साथ महिलाओं ने लट्ठमार की। नंदगांव से आने वाले हुरियारों के स्वागत की तैयारियां पहले ही पूरी कर ली गई थीं। बरसाना पीली पोखर पर स्वागत के लिए 2000 किलो ठंडाई बनाई गई है। होली देखने और खेलने के लिए 20 लाख श्रद्धालु बरसाना पहुंचे हैं। इनमें विदेशी टूरिस्ट भी शामिल हैं। प्रशासन के मुताबिक, सुरक्षा के लिहाज से 4500 से ज्यादा पुलिसकर्मी और एंटी रोमियो टीम तैनात की गई है। इससे पहले मंगलवार को राधारानी (लाड़लीजी) मंदिर में लड्डूमार होली खेली गई थी। महंतों ने मंदिर की छत पर बनी सफेद छतरी से लड्डू लुटाए थे। बरसाना राधा रानी का जन्मस्थान है। लट्ठमार होली में नंदगांव यानी श्रीकृष्ण का जहां बचपन बीता, वहां के हुरियारे 8 किमी दूर बरसाना में होली खेलने आते हैं। कुंज और रंगीली

गलियों से होते हुए करीब 3 किमी तक चलते हैं। गलियों में दोनों तरफ खड़ी हुरियारने लाठियां मारती हैं, इनसे बचने के लिए हुरियारे ढाल का सहारा लेते हैं। ऐसी मनोरम और वर्ल्ड फेमस होली देखने के लिए बड़ी संख्या में टूरिस्ट मथुरा-वृंदावन पहुंचते हैं। नंदगांव से आए हुरियारे ने बताया- बस पगड़ी बंध जाए, हम होली खेलने के लिए तैयार हैं। ढाल पूरी तैयार है। इसमें हुरियारी लट्ठ मारेंगी। और हम लट्ठ खाने के लिए तैयार हैं। राधा रानी के दर्शन करके रंगीली गली में होली खेलेंगे। मनीष गोस्वीमी नंदबाबा मुख्य पुजारी ने बताया- ये परंपरा ठाकुर जी के समय से चली आ रही है। जो मेरे हाथ में ध्वजा दिख रहा है आपको, ये स्वंय कृष्ण-बलराम का रूप है। नंदबाबा से आशीर्वाद लेकर नंदमहल से निकले। ठाकुर जी का हाथ छुआकर। ऐसे ही रास्ते में चलते चले आए। फिर राधा-रानी के स्मृति पहुंचे पीली पोखर। यहां अब हमारा ठंडाई-पान-भोग हो रहा है। ये तीन पग वाली जो पगड़ी दिख रही है ये बहुत प्राचीन परंपरा है। ठाकुर जी, जो मुकुट धारण करते हैं रास के समय आते हैं तो बिना पाग के नहीं आते। वहीं परंपरा चली आ रही है। ये स्वयं कृष्ण भगवान हैं हमारे। अभी हम इसे किसी को छूने नहीं देते। सबसे पहले ये श्रीजी के चरणों के पास ले जाएंगे। श्रीजी से स्पर्श कराएंगे। वहां समाज गायन होगा। उसके बाद रंगीली गली में लट्ठमार होली खेली गई।

चार राज्यों के 5407 गांवों के लिए सरकार की सौगात

मोदी कैबिनेट ने 9072 करोड़ के रेल प्रोजेक्ट किए मंजूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंगलवार को प्रधानमंत्री के नए कार्यालय सेवा तीर्थ में हुई बैठक में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने रेल मंत्रालय की अनुमानित 9072 करोड़ रुपये की इन तीन परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इनमें गोंदिया-जबलपुर दोहरीकरण, पुनारख-किउल तीसरी और चौथी लाइन तथा गम्हरिया-चांडिल तीसरी तथा चौथी लाइन शामिल है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार और झारखंड के आठ जिलों से गुजरने वाली इन परियोजनाओं पर काम पूरा होने के बाद देश में रेलवे का मौजूदा नेटवर्क 307 किलोमीटर बढ़ जाएगा। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इन प्रस्तावित मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना से 98 लाख की आबादी वाले 5,407 गांवों में रेल संपर्क में सुधार होगा।

जबलपुर-गोंदिया परियोजना को दी गई स्वीकृति

वैष्णव ने कहा कि ये तीनों रेल परियोजनाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और देश के प्रमुख रेल कॉरिडोरों की क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से तैयार की गई हैं। इनमें से पहली प्रमुख परियोजना जबलपुर से गोंदिया रेल लाइन है। उनका कहना था कि यदि हम उत्तर भारत, विशेषकर पूर्वांचल के प्रयागराज, वाराणसी (काशी), इसके बाद बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश का रीवा संभाग को देखें तो इन सभी क्षेत्रों से दक्षिण भारत की ओर जाने वाला पारंपरिक मार्ग जबलपुर से इटारसी, इटारसी से नागपुर और वहां से आगे दक्षिण की ओर जाता है। यह मार्ग लंबा होने के साथ-साथ अत्यधिक व्यस्त भी है।

● **वाराणसी और प्रयागराज उत्तर भारत के प्रमुख संगम-** वैष्णव ने कहा कि समग्र रूप से देखा जाए तो वाराणसी और प्रयागराज उत्तर भारत के प्रमुख संगम और जंक्शन बिंदु हैं। विशेष रूप से प्रयागराज एक महत्वपूर्ण जंक्शन है जहा मालगाड़ियों, यात्री गाड़ियों, मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों की आवाजाही एक साथ होती है। यहां विभिन्न दिशाओं से आने वाली गाड़ियां एक ही स्थान पर एकत्रित हो जाती हैं, जिससे बड़ा अवरोध (बॉटलनेक) उत्पन्न होता है और गाड़ियों के परिचालन में विलंब होता है। इसी समस्या के समाधान के लिए तीसरी और चौथी रेल लाइन का अत्यंत सावधानीपूर्वक डिजाइन तैयार किया गया है, ताकि पूर्व से पश्चिम जाने वाला यातायात प्रभावित न हो और उत्तर से दक्षिण जाने वाला यातायात भी सुचारु रूप से चलता रहे।

अरुणाचल की महिलाओं पर नस्लीय कमेंट पड़ गया भारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश की 3 महिलाओं पर नस्लीय टिप्पणी करने के मामले में दिल्ली पुलिस ने आरोपी रूबी जैन और हर्ष सिंह को बुधवार को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के मुताबिक आरोपियों को एसटीएससी ऐक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया है। इससे पहले मंगलवार को मुख्य आरोपी और महिला के पति हर्ष सिंह ने न्यूज एजेंसी से कहा कि हम निश्चित रूप से शर्मिंदा हैं। मैं ऐसा इंसान नहीं हूं, ये सब कुछ हीट ऑफ द मूमेंट में हो गया। हर्ष ने कहा कि मामले में हम दिल्ली पुलिस का पूरी तरह से सहयोग कर रहे हैं। वहीं, वीडियो वायरल होने के बाद केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि उनका ऑफिस पहले दिन से ही पीड़ितों और दिल्ली पुलिस के लगातार संपर्क में है। उन्होंने कहा कि आरोपियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। रिजिजू ने कहा कि मामले में गिरफ्तारियां हुई हैं। उन्होंने कहा नॉर्थईस्ट के लोगों के खिलाफ यह ठीक नहीं।

9 साल बाद इजराइल पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी

● जबरदस्त स्वागत, इजराइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू खुद लेने पहुंचे ● पत्नी के साथ एयरपोर्ट पर किया रिसीव,संसद को संबोधित किया

तेल अवीव (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिन के इजराइल दौरे पर पहुंचे हैं। इजराइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू और उनकी पत्नी सारा नेतन्याहू ने एयरपोर्ट पर मोदी को रिसीव किया। इस दौरान राष्ट्रगान के साथ पीएम का स्वागत किया गया। पीएम मोदी और नेतन्याहू ने राजधानी तेल अवीव में प्राइवेट बातचीत भी की। मोदी 9 साल बाद इजराइल पहुंचे हैं। इससे पहले वे जुलाई 2017 में गए थे। मोदी के इस दौरे पर भारत और इजराइल के हथियारों से जुड़ी डील पर बातचीत की संभावना है। इनमें ड्रोन और एंटी बैलिस्टिक मिसाइल सिस्टम शामिल हैं। इजराइली अखबार, द जेरूसलम पोस्ट ने पीएम मोदी के दौरे पर उनके स्वागत के लिए एक खास फ्रंट पेज छापा। फ्रंट पेज पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर के साथ हिंदी में लिखा 'नमस्ते' नजर आ रहा है। वहीं उसके बगल में हिब्रू भाषा में भी 'शालोम' लिखा है, जिसका मतलब हेलो या नमस्ते है।

अमेरिकी संसद में ट्रम्प बोले-भारत-पाकिस्तान जंग रुकवाई

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारतीय समय के मुताबिक बुधवार सुबह संसद में भाषण दिया। साल की शुरुआत में संसद में प्रेसिडेंट के भाषण को 'स्टेट ऑफ द यूनियन' स्पीच कहा जाता है। ट्रम्प ने 1 घंटा 50 मिनट के भाषण में एक बार फिर भारत-पाकिस्तान संघर्ष रुकवाने का दावा किया। ट्रम्प यह बात 100 से ज्यादा बार दोहरा चुके हैं। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के हवाले से कहा कि दोनों देशों के बीच परमाणु जंग में 3.5 करोड़ लोगों के मारे जाने की आशंका थी। हालांकि, भारत इस दावे को हमेशा खारिज करता आया है। अपने भाषण में ट्रम्प ने इजराइल-हमास के बीच गाजा सीजफायर को अपनी उपलब्धि कहा।

हिंदुत्व खतरे में है, सिर्फ ड्रेस पहनकर खुद को हिंदू बता रहे

● शंकराचार्य बोले-हिंदुत्व को हिंदुओं के बीच घुसे ऐसे लोगों से है खतरा

वाराणसी (एजेंसी)। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ बच्चों के यौन शोषण मामले में एफआईआर दर्ज होने के बाद प्रयागराज पुलिस पिछले तीन दिनों से वाराणसी में डेरा डाले हुए है। पुलिस उनसे पूछताछ कर सकती है, हालांकि अभी तक आश्रम नहीं पहुंची है। सूत्रों के मुताबिक, प्रयागराज पुलिस फिलहाल शंकराचार्य से जुड़े सबूत जुटाने में लगी है। मामला हाई-प्रोफाइल होने के कारण पुलिस फूंक-फूंककर कदम आगे बढ़ा रही है। माना जा रहा है कि पूरी तैयारी और होमवर्क के बाद ही पुलिस शंकराचार्य या उनके शिष्यों से पूछताछ करेगी। उधर, बुधवार को शंकराचार्य ने एक बार फिर मीडिया से बात की। उन्होंने कहा,हिंदुत्व खतरे में है। जब केवल ड्रेस पहनकर लोग खुद को हिंदू बताने लगेंगे और बार-बार हिंदू-हिंदू कहेंगे, तो हिंदू को खतरा होना स्वाभाविक है। हिंदुत्व को हिंदुओं के बीच घुस आए ऐसे लोगों से खतरा है, जो वास्तव में हिंदू नहीं हैं, बल्कि दिखावे के लिए खुद को हिंदू बताते हैं। उन्होंने कहा,एक-डेढ़ महीने से कहा जा रहा है कि और भी छात्रों का यौन शोषण हुआ है। अगर ऐसा है तो बाकी लोगों को क्यों बचाकर रखा गया है। यदि किसी के साथ अन्याय हुआ है और सिर्फ दो लोगों से मुकदमा दर्ज कराया गया है, तो इससे पता चलता है कि इसके पीछे साजिश है। जब उन्हें मुफीद होगा, तब उन्हें पेश किया जाएगा।

शंकराचार्य के समर्थन में कांग्रेस का प्रदर्शन, पुलिस से धक्का-मुक्की

वाराणसी (एजेंसी)। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के अपमान और उत्पीड़न के आरोपों को लेकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पूरे प्रदेश में प्रदर्शन कर रही है। काशी में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शंखनाद कर सरकार को चेतावनी दी।

पुलिसकर्मियों से धक्का-मुक्की करते हुए कार्यकर्ता डीएम पोर्टिको तक पहुंच गए और जमकर नारेबाजी की। आगरा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शंकराचार्य के पोस्टर लहराए, जबकि लखनऊ में प्रदर्शन कर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। मेरठ, बुलंदशहर, गोरखपुर और ललितपुर सहित पूरे प्रदेश में कांग्रेसियों ने नारेबाजी कर प्रदर्शन किया और ज्ञापन सौंपा।

सीएम योगी के जापान दौरे में मिले मेगा निवेश प्रस्ताव

पहले दिन 11 हजार करोड़ रुपये का एमओयू हुआ साइन

● कुबोता व मिंडा सहित कई जापानी कंपनियों ने किए करार

नई दिल्ली/लखनऊ (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जापान दौरे के पहले दिन औद्योगिक निवेश को लेकर महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। विभिन्न जापानी कंपनियों के साथ लगभग 11 हजार करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। जिन कंपनियों के साथ करार हुआ है उनमें कुबोता कारपोरेशन, मिंडा कारपोरेशन, जापान एविएशन इलेक्ट्रॉनिक्स इंडस्ट्री, नागासे एंड कंपनी लिमिटेड, सीको एडवांस, ओएंडओ ग्रुप, फूजी जैपनीज जेवी और फूजीसिल्वरटेक कंक्रीट प्रालि शामिल हैं। ये समझौते कृषि यंत्र निर्माण, औद्योगिक मशीनरी निर्माण, जल और पर्यावरण अवसंरचना समाधान, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, औद्योगिक प्रिंटिंग एवं ग्राफिक्स, हॉस्पिटैलिटी और रियल एस्टेट जैसे विविध क्षेत्रों से जुड़े हैं। इससे विनिर्माण क्षमता के विस्तार और औद्योगिक सहयोग को नई दिशा मिलने की उम्मीद है। कुबोता कारपोरेशन, वर्ष 1890 में स्थापित जापान की एक अग्रणी बहुराष्ट्रीय कंपनी है और जिसका मुख्यालय ओसाका में स्थित है। यह कृषि और औद्योगिक मशीनरी निर्माण में वैश्विक पहचान रखती है। कंपनी ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, इंजन और निर्माण उपकरण के साथ साथ जल और पर्यावरण अवसंरचना समाधान जैसे पाइप, पंप और ट्रीटमेंट सिस्टम के क्षेत्र में भी कार्यरत है। एस्कॉर्ट्स कुबोता लिमिटेड के साथ सहयोग के माध्यम से कंपनी भारत में अपने विनिर्माण विस्तार और फार्म मैकेनाइजेशन क्षेत्र में उपस्थिति को मजबूत कर रही है।

● **एडवांस कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग को मिलेगा बढ़ावा-** नागासे एंड कंपनी लिमिटेड, एक विविधीकृत जापानी ट्रेडिंग और टेक्नोलॉजी कंपनी है जो केमिकल्स, एडवांस्ड मैटेरियल्स, मोबिलिटी सॉल्यूशंस और इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में सक्रिय है। इन कंपनियों के बीच सहयोग से ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स और एडवांस कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा मिलेगा। सीको एडवांस जापान मूल की कंपनी है जो उच्च प्रदर्शन स्क्रीन प्रिंटिंग इंक और कोटिंग सॉल्यूशंस के लिए जानी जाती है। इसके उत्पाद ऑटोमोटिव डीकल्स, इंडस्ट्रियल ग्राफिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स पैनल, ग्लास प्रिंटिंग और कंज्यूमर अप्लायंसेज में उपयोग होते हैं। कंपनी भारत में अपनी विनिर्माण इकाई के माध्यम से विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों को आपूर्ति कर रही है। इसके अतिरिक्त ओ एंड ओ ने हॉस्पिटैलिटी और रियल एस्टेट क्षेत्र में निवेश को लेकर समझौता किया। पहले दिन हुए इन समझौतों को भारत और जापान के बीच औद्योगिक सहयोग को नई गति देने वाला कदम है।

प्रमोद भार्गव को मिलेगा सूरतगढ़ में लक्ष्मणराम सेवटा स्मृति कथा सम्मान

शिवपुरी। भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला एवं सामाजिक जागरण को समर्पित संस्था विविधा, सूरतगढ़ राजस्कीथान की ओर से प्रतिवर्ष दिए जाने वाले सम्मानों की घोषणा की गई है। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष डॉ एनके सोमानी ने बताया कि साल 2024-25 के लिए स्व. श्री लक्ष्मण राम सेवटा स्मृति कथा सम्मान प्रमोद भार्गव (शिवपुरी मध्यप्रदेश) को उनके कथा संग्रह 'प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियां' पर दिया जाएगा।प्रमोद को हाल ही में इसी कथा संग्रह पर महाराष्ट्र के नासिक में विद्योतमा सम्मान भी मिला है।मार्च के अंत में राजस्थान के सूरतगढ़ में भव्य समारोह में इस सम्मान के अंतर्गत 11,000 हजार की राशि,स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र शॉल और श्रीफल भेंट लिए जाएंगे।

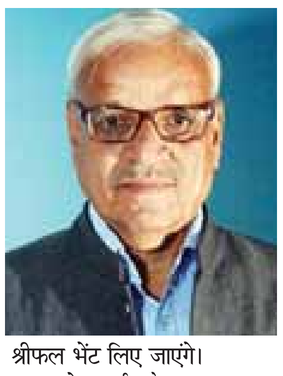

प्रमोद भार्गव के अलावा कृष्णा देवी कामरा स्मृति हिंदी कविता सम्मान डॉ. प्रभा मुजुमदार (गुजरात) को उनके कविता संग्रह 'नकारती हूं निर्वासन' पर दिए जाने का निर्णय लिया गया है। राजस्थानी कविता के क्षेत्र में दिया जाने वाला श्रीमती गोपी देवी चांडक स्मृति सम्मान चांदकौर जोशी (जोधपुर) को उनके कविता संग्रह 'बिलखता बादल' को, जुगल किशोर सोमानी स्मृति व्यंग पुरस्कार वरिष्ठ व्यंगकार अखिलेश श्रीवास्तव (लखनऊ) को उनके व्यंग्य संग्रह 'दफ्तरनामा' पर दिया जाएगा। उपन्यास के क्षेत्र में दिया जाने वाला भेरूदान सोमानी स्मृति उपन्यास पुरस्कार अलंकार रस्तोगी (लखनऊ) को उनके उपन्यास 'पंडित भया न कोई' तथा अर्जुन राम सुथार स्मृति प्रथम प्रकाशित पुस्तक पुरस्कार डॉ नेहल शाह(भोपाल) को उनकी पहली कविता पुस्तक 'और इन सब के बीच' पर दिया जाएगा । संस्था के सचिव संजय कामरा ने चयनित साहित्यकारों को बधाई दी और कहा कि सभी साहित्यकारों को मार्च माह के अंत तक आयोजित होने वाले भव्य समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

संदिग्ध टीपी, बिना बिल की लकड़ी का देर रात में धड़ल्ले से परिवहन

इंदौर से धार-झाबुआ-अलीराजपुर तक फैला माफिया का नेटवर्क

इंदौर। जिले इंदौर में अवैध लकड़ी कारोबार ने फिर सिर उठा लिया। शहर की लकड़ी मंडी (जीएनटी मार्केट) भले ही बाहर से बंद दिखाई देती हो, लेकिन अंदरूनी तौर पर संदिग्ध ट्रांजिट पास (टीपी) और बिना बिल की लकड़ियों का कारोबार जारी होने की जानकारी मिली। मंडी से जुड़े कुछ कथित दलाल पूरे नेटवर्क को नियंत्रित कर रहे हैं और तय करते है कि लकड़ी कब,कहां से और किस माध्यम से भेजी जाएगी। बताया जा रहा है कि ट्रक, ट्राले, आयशर, छोटा हाथी, पिकअप और अन्य वाहनों के जरिए रात के अंधेरे में और सुबह-सुबह लकड़ी की खेप इंदौर लकड़ी मंडी में धार, झाबुआ, अलीराजपुर, मनावर,सरदारपुर, धामनोद,बड़नगर, मंदसौर, उज्जैन,देवास, सोनकच्छ,सिवनी, सिहोर, शाजापुर,गुना अशोक नगर, बुरहानपुर,बालाघाट, से इंदौर लकड़ी मंडी पहुंचाई जा रही है। जीएनटी मार्केट क्षेत्र में कई आरा मशीनों पर लकड़ियों के ढेर लगे होने की भी चर्चा है। आरोप है कि निजी एजेंट के माध्यम से वाहनों की एंट्री दर्ज की जाती है,ताकि कार्रवाई की स्थिति में जिम्मेदारी से बचा जा सके।

हाईकोर्ट के आदेशों की अनदेखी- पेड़ों की कटाई पर सख्ती के न्यायालयीन निर्देशों के बावजूद अवैध कटाई और परिवहन जारी रहने से सवाल उठ रहे हैं। धार रोड, देवास नाका,देव गुराड़िया और सिमरोल तलाई जैसे प्रमुख नाकों पर वन विभाग की मौजूदगी के बावजूद बड़े वाहनों की धरपकड़ न होना मिलीभगत की आशंका को बल देता है। आरोप है कि औपचारिक जांच और गश्त तक ही कार्रवाई सीमित है, जिससे माफिया निडर होते जा रहे हैं।

सख्ती से मचा था हड़कंप

जानकारी के अनुसार पूर्व डीएफओ प्रदीप मिश्रा के कार्यकाल में अवैध परिवहन पर लगाम कसी गई थी और दलालों के साथ विभागीय स्टाफ पर भी निगरानी रखी गई थी। उस दौरान माफियाओं में हड़कंप की स्थिति बताई जाती है। अवैध कारोबार से शासन को करोड़ों रुपये के राजस्व की हानि की भी आशंका जताई जा रही है। इस बारे में डीएफओ लाल सुधाकर सिंह ने कहा कि मामला मेरी जानकारी में आया है और अन्य माध्यमों से भी सूचना मिली है। जांच कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

परीक्षा केंद्र के शौचालय में 10वीं की छात्रा ने बच्चे को जन्म दिया

108 एंबुलेंस बुलाई गई और छात्रा को स्वास्थ्य केंद्र भेजा

इंदौर। धार जिले के औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर के सेक्टर-एक थाना क्षेत्र में 10वीं की परीक्षा के दौरान एक नाबालिग छात्रा द्वारा बच्चे को जन्म देने की एक सनसनीखेज घटना सामने आई। यह घटना शहर के हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित निजी स्कूल परीक्षा केंद्र पर हुई, जहां छात्रा गणित का पेपर दे रही थी। परीक्षा केंद्र प्रभारी नरेंद्र कुमार पोथे ने फोन पर चर्चा में बताया कि 17 वर्षीय छात्रा गणित का पेपर देते समय शौचालय गई थी। लगभग 15 मिनट तक वापस न लौटने पर एक महिला कर्मचारी को उसे देखने भेजा गया। बाथरूम का दरवाजा अंदर से बंद था और अंदर से बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी, जिसके बाद स्कूल प्रबंधन ने पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। सूचना मिलने पर तत्काल 108 एंबुलेंस बुलाई गई और छात्रा को पीथमपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया।

जच्चा और नवजात दोनों स्वस्थ- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर ने बताया कि जच्चा और नवजात दोनों स्वस्थ हैं। सेक्टर-एक थाना पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

प्राथमिक जांच अधिकारी उप निरीक्षक चांदनी सिंगार ने बताया कि पीड़िता ने पूछताछ में बताया कि कान्हा बर्मन नामक युवक से उसकी दो साल से बातचीत थी और पिछले एक साल से उसके साथ शारीरिक संबंध भी थे, जिससे वह गर्भवती हुई। बालिका के परिजनों को इसकी जानकारी नहीं थी, बालिका बेटमा थाना क्षेत्र की निवासी है। सेक्टर-एक पुलिस ने बालिका के बयानों के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है और आरोपी की तलाश की जा रही है।

मासूम पानी से भरे गड्ढे में गिरा, मौत

इंदौर। निगम द्वारा निर्माण कार्य के लिए खोदे गए गड्ढे ने मासूम की जान ले ली। गड्ढे में पानी भरा था। हादसा हीरानगर थाना क्षेत्र के अमरपुरी कालोनी में सोमवार को हुआ। मृतक का नाम रुद्र पिता विनोद (2) है। पुलिस को परिजनों ने बताया कि बच्चा घर के बाहर खेल रहा था। जब काफी देर तक वह घर में नहीं लौटा तो बाहर जाकर देखा। लेकिन, वह दिखाई नहीं दिया तो आसपास के घरों में बच्चे को ढूंढा। परिजनों की नजर गड्ढे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने गड्ढे में देखा, रुद्र तैर रहा था। तत्काल उसे परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे जहां उसकी मौत हो गई। आसपास के लोगों ने बताया कि रुद्र इकलौता बेटा था। परिजनों का आरोप है कि गड्ढा खुदाई के दौरान कई बार सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं रहती है। लोगों ने निर्माण कंपनी के इस संबंध में शिकायत की, मगर ध्यान नहीं दिया गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

झांसा देकर निवेश के नाम पर 21 लाख ठगे

इंदौर। प्रापर्टी में निवेश पर अधिक मुनाफे, क्रेडिट कार्ड बिल भुगतान से लाभ दिलाने का झांसा देकर बदमाश ने लाखों रुपए हड़प लिए। लसूड़िया पुलिस के मुताबिक, आरोपी अक्षय जायसवाल निवासी शिवालिक अपार्टमेंट लिंबोदी ने महालक्ष्मी नगर में रुचिका चौधरी और अन्य आवेदकों को विश्वास में लिया कि यदि वे उसकी बताई स्कीम और प्रॉपर्टी में निवेश करते हैं तो उन्हें कम समय में मोटा मुनाफा होगा। उसने क्रेडिट कार्ड बिल पेमेंट के जरिए भी लाभ कमाने का लालच दिया। ठग के झांसे में आकर पीड़ितों ने 21 लाख 30 हजार से अधिक की राशि उसे सौंप दी। पीड़ितों को जब लंबे समय तक मुनाफा और न मूल राशि नहीं मिली तो ठगी का अहसास हुआ।

मालिक से पूर्व कर्मचारी ने मारपीट की

इंदौर। लेनदेन के विवाद में पूर्व कर्मचारी ने युवक से रास्ते में रोककर मारपीट कर दी। मारपीट की घटना श्रीधर गोडाउन के सामने न्यू लोहा मंडी में हुई। फरियादी संजय पिता सतीशचन्द्र अग्रवाल निवासी गणेश धाम ने लसूड़िया पुलिस को बताया कि मेरे यहां पूर्व में काम करने वाला कल्याण पटेल, अपने साथी अनिल पटेल व अन्य के साथ आया और कहने लगा कि अपने हिसाब में पैसे तुम्हारे ऊपर निकल रहे हैं। मैंने बोला कि तुम्हारा पूरा हिसाब क्लियर है फिर किस बात के पैसे। इसी बात को लेकर आरोपियों ने मारपीट की।

युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

इंदौर। दोपहर में खाना खाकर लेटे युवक की अचानक तबीयत बिगड़ गई। तत्काल परिजन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने साइलेंट अटैक से मौत होने की बात कही। मृतक का नाम रजत शर्मा(23) निवासी शारदा नगर है। परिजनों ने बताया कि वह सोमवार सुबह जरूरी काम से बाहर गया था। दोपहर करीब एक बजे घर लौटा और खाना खाकर अपने रुम में जाकर लेट गया। कुछ देर बाद उसने मां से बेचैनी और घबराहट होने की बात कही। उसने गैस की शिकायत भी की थी। पिता उसे दवा देकर कोल्ड ड्रिंक लेने चले गए थे। दवा खाने के कुछ देर बाद रजत की तबीयत बिगड़ गई और वह मां की गोद में ही अचेत हो गया था। हीरानगर पुलिस के अनुसार, रजत निजी कंपनी में नाइट शिफ्ट में काम करता था। उसके दो बड़े भाई हैं। पिता फर्नीचर का काम करते थे।

15 बड़ी कंपनियां देंगी हजारों युवाओं को रोजगार, आईटी पार्क-4 जल्द पूरा

86 हजार वर्ग फुट क्षेत्र में 10 मंजिला भवन का काम अगले महीने तक

इंदौर। परदेशीपुरा स्थित इलेक्ट्रॉनिक कॉम्प्लेक्स में बन रहा आईटी पार्क-4 अब लगभग तैयार हो चुका। भवन का मुख्य निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है और फिलहाल इंटीरियर तथा रंगाई-पुताई का काम अंतिम दौर में है। अगले महीने से यहां कंपनियों को स्थान आवंटित करने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसके लिए निविदाएं आमंत्रित की जाएंगी। इस परियोजना को एक वर्ष पहले ही पूरा किया जाना था। निर्माण कार्य की शुरुआत कोरोना काल में हुई थी और लक्ष्य मई 2025 तक इसे पूर्ण करने का था। लेकिन, विभिन्न कारणों से समय पर काम पूरा नहीं हो सका। अब प्रशासन ने शेष कार्य तेजी से पूरा कर भवन को संचालन के लिए तैयार कर लिया है। एमपीआईडीसी द्वारा तीन तलघर पार्किंग सहित 10 मंजिला इमारत का निर्माण कराया गया है। कुल 86 हजार वर्गफीट क्षेत्र कार्यालयों के लिए निर्धारित है, जहां लगभग 15 बड़ी कंपनियां अपने दफ्तर स्थापित कर सकेंगी। भवन में दो तलघर में वाहन पार्किंग की सुविधा रहेगी। साथ ही कर्मचारियों के लिए कैफे, जिम और अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

नए आईटी पार्क बन रहे - इंदौर पहले से आईटी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है। शहर में क्रिस्टल आईटी पार्क और अतुल्य आईटी पार्क जैसे

परिसरों में कई राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियां कार्यरत हैं। भंवरकुआं क्षेत्र में आईटी पार्क-3 का निर्माण भी जारी है, जबकि इलेक्ट्रॉनिक कॉम्प्लेक्स में आईटी पार्क-4 तैयार हो रहा है। नए पार्क के शुरू होने से आईटी सेक्टर को और मजबूती मिलने की उम्मीद है। कई कंपनियों ने यहां कार्यालय खोलने के लिए प्रारंभिक जानकारी लेना भी शुरू कर दिया है।

युवाओं को रोजगार की संभावना- एमपीआईडीसी के कार्यकारी निदेशक हिमांशु प्रजापति ने बताया कि भवन का निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है। शासन से अनुमति मांगी गई है और स्वीकृति मिलते ही कंपनियों को स्थान देने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। अनुमान है कि यहां कंपनियों के संचालन शुरू होने पर 2000 से 3000 युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। वहीं, 15 बड़ी कंपनियों के पूरी तरह स्थापित होने पर यह संख्या 5000 तक पहुंच सकती है।

'प्लग एंड प्ले' पार्क निर्माणाधीन

इसी परिसर के पास रेडीमेड कॉम्प्लेक्स में प्लग एंड प्ले पार्क का निर्माण भी किया जा रहा है। इसकी योजना इस प्रकार तैयार की गई है कि सड़क के दोनों ओर इमारतें विकसित होंगी, जिससे अधिक से अधिक कंपनियों को स्थान मिल सके। इस परियोजना को पूरा होने में लगभग दो वर्ष का समय लग सकता है। इसके शुरू होने पर करीब 5 हजार लोगों को रोजगार मिलने का अनुमान है। निर्माण कार्य यहां भी तेजी से चल रहा है। आईटी पार्क-4 और प्लग एंड प्ले पार्क के शुरू होने से इंदौर में निवेश और रोजगार के नए अवसर खुलेंगे, जिससे स्थानीय युवाओं को अपने ही शहर में बेहतर संभावनाएं मिल सकेंगी।

मकान और दुकान में लाखों की चोरी

इंदौर। रविवार-सोमवार की दरमियानी रात चोरों ने मकान और दुकान में घुसकर लाखों के माल पर हाथ साफ कर दिया। पहली घटना देवास नाका में स्थित आल इंडिया ट्रेडर्स% के कार्यालय की जहां का शटर तोड़कर बदमाश लाखों का माल ले गए। लसूड़िया पुलिस को फरियादी धीरज पटेल ने बताया कि वह 21 फरवरी को दुकान बंद करके गए थे। 23 फरवरी की सुबह वे दुकान पहुंचे तो सारा सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था। चोर दुकान से तिजोरी में रखे 3 लाख 37 हजार 349 रुपए ले गए। दूसरी घटना किला मैदान स्थित बंगला नंबर ए-15 में हुई, जहां कई दिनों से ताला लगा है। फरियादी पुष्पेंद्र सिंह की शिकायत पर मल्हारगंज पुलिस ने आरोपी सरफराज उर्फ सद्दाम निवासी चंदन नगर और धर्मेंद्र निवासी कंडिलपुरा के खिलाफ मामला दर्ज किया है। आरोपीगण यहां से कॉपियां, नोटबुक, प्लास्टिक की कुर्सियां, ट्रैक सूट, साड़ियां और स्कूल बैग ले गए।

पेपर बिगड़ा तो तनाव में छात्रा ने फांसी लगाई, शाम को पता चला

कोई सुसाइड नोट नहीं मिला, छात्रा का मोबाइल जब्त किया

इंदौर। हाईस्कूल परीक्षा का सोमवार को संस्कृत का प्रश्न पत्र था। छात्रा का प्रश्न पत्र बिगड़ गया, इससे उसने तनाव में आकर फांसी लगा ली। घटना के समय घर पर कोई मौजूद नहीं था। शाम को जब परिजन घर लौटे तो उसे फंदे से उतारा। घटना चंदन नगर थाना क्षेत्र के रामानंद नगर में सोमवार को हुई। मृत छात्रा का नाम पलक पिता विजय श्रीवास्तव (16) है। पिता ने बताया कि पलक पिछला पेपर बिगड़ने के कारण तनाव में थी। छात्रा के पिता प्राइवेट नौकरी और मां गृहिणी है। पलक की छोटी बहन भी है। छात्रा के कमरे से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस ने छात्रा के मोबाइल को जब्त कर लिया है, ताकि घटना का मूल कारण स्पष्ट हो सके।

अज्ञात कारण से खुदकुशी

उधर, मयूर नगर में रहने वाले मोहब्बत पिता रमेश वसुनिया (24) ने अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस को मृतक के रुममेट शैलेश ने बताया कि सोमवार शाम 5 बजे जब वह कमरे पर आया तो उसे मोहब्बत फंदे पर लटका मिला। वह एक साल पहले झाबुआ से इंदौर आया था। उसके परिवार में छोटा भाई और माता-पिता हैं, जो गुजरात में रहते हैं। आजाद नगर पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

फंदे पर लटका मिला

एमआईजी थाना क्षेत्र रुस्तम का बगीचे में मंगलवार सुबह युवक ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह कुछ समय से तनाव में चल रहा था। मृतक आकाश पिता राजू लोखंडे (35) पेशे से पेंटर था। परिजनों के अनुसार, इलाज के लिए मंगलवार सुबह उसकी मौसी उड्डसके रुम पर पहुंची थीं। जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, आकाश फंदे पर झूल रहा था। आकाश की शादी 8 साल पहले हुई थी, लेकिन वैवाहिक विवाद के चलते 2 साल बाद पत्नी उसे छोड़कर चली गई थी। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पांच कॉलोनियों में देर रात बदमाशों का आतंक, वाहनों के कांच फोड़े

गाड़ियों के कांच फोड़ने वाले का कमिश्नर ने निकलवाया जुलूस

इंदौर। चंदन नगर इलाके में सोमवार देर रात अज्ञात बदमाशों ने पांच कॉलोनियों में खड़ी गाड़ियों को निशाना बनाते हुए जमकर तोड़फोड़ की। मंगलवार सुबह जब लोग घरों से बाहर निकले तो कई वाहनों के शीशे टूटे मिले। राजनगर में एक बदमाश को पकड़कर पुलिस ने उसका जुलूस निकाला। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। क्षेत्र के राजनगर, रामानंद नगर, नंदन नगर, दामोदर नगर और पंचमूर्ति नगर में करीब एक दर्जन से अधिक वाहनों के कांच फोड़ दिए गए।

पूर्व पार्षद राजेश चौहान सहित अंकित बहनिया, जितेंद्र धारवा और भाऊ साहब की गाड़ियां भी बदमाशों का शिकार हुईं। कुछ वाहनों के अंदर ईंट के टुकड़े मिले हैं, जिससे पथराव की आशंका जताई जा रही है। इधर छत्रीपुरा पुलिस ने इसी तरह की घटना में तीन संदिग्धों को हिरासत में लिया है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर पूरे मामले का खुलासा किया जाएगा।

असामाजिक तत्व सक्रिय

स्थानीय लोगों के मुताबिक, रात करीब ढाई से चार बजे के बीच यह वारदात हुई। रहवासियों का कहना है कि रात के समय क्षेत्र में असामाजिक तत्व सक्रिय रहते हैं और इसकी शिकायत पहले भी की जा चुकी है। सूचना मिलने पर डायल 112 और बीट स्टाफ ने मौके पर पहुंचकर हालात का जायजा लिया। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के अनुसार, सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं और आरोपियों की पहचान की जा रही है। अब तक छह लोगों ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है।

धरी रह गई बदमाशी

इंदौर के राजनगर, नंदन नगर, दामोद नगर से लेकर पंचमूर्ति नगर में बदमाशगिरी करते हुए गाड़ियों के कांच फोड़कर पुलिस को चुनौती देने वाले बदमाशों की धरपकड़ जारी है और बदमाशों का जुलूस निकलना भी शुरू हो गया। इस कड़ी में छत्रीपुरा थाना क्षेत्र के पंचमूर्ति नगर में एक बदमाश धुर्वे करोसिया का पुलिस द्वारा जुलूस निकाला गया। पुलिस ने इसका वीडियो भी जारी किया, जिसमें धुर्वे भरे बाजार में कान पकड़ते हुए कह रहा 'अपराध करना पाप है, पुलिस हमारी बाप है!'

वाहनों को हटाया गया तब सड़कें चौड़ी दिखी, नो-पार्किंग पर सख्ती

बाजारों में पेट्रोलिंग, समझाइश दी और व्हील लॉक भी लगाए

इंदौर। शहर की यातायात व्यवस्था को और अधिक सुचारू बनाने यातायात पुलिस ने अभियान तेज कर दिया है। पुलिस उपायुक्त यातायात के निर्देशन में चारों जोन में पेट्रोलिंग टीमें लगातार कार्रवाई कर रही है। वाहन चालकों को गाड़ियां पार्किंग में ही खड़ी करने की चेतावनी दी गई। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य व्यस्त मार्गों, प्रमुख बाजारों और यातायात दबाव वाले क्षेत्रों में अव्यवस्थित पार्किंग पर नियंत्रण कर ट्रैफिक को सुगम बनाना है। 24 फरवरी को सभी जोन की टीमों ने अपने-अपने क्षेत्रों में भ्रमण कर स्थिति का जायजा लिया और नियम तोड़ने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई की।

पुलिस ने जोन-1 मरीमाता से बाणगंगा, कालानी नगर से एयरपोर्ट रोड, जोन-2 विजयनगर, खजराना होते हुए कनाड़िया रोड, जोन-3 एमजी रोड, पलासिया से व्हाइट चर्च, आरएनटी मार्ग, झाबुआ टॉवर, मधुमिलन, एमटीएच, पालिका प्लाजा, जोन-4 भंवरकुआं से टॉवर चौराहा, राजवाड़ा, जवाहर मार्ग, खजूरी बाजार और सराफा क्षेत्र में अभियान चलाया।

व्हील लॉक लगाए गए- इस दौरान पेट्रोलिंग के दौरान पीए सिस्टम, बॉडी वॉर्न कैमरा, क्रेन, व्हील लॉक और पीओएस मशीन की मदद से अवैध पार्किंग, फुटपाथ पर खड़े वाहनों और सड़क पर यातायात बाधित करने वालों पर सख्ती की गई। पहले वाहन चालकों को समझाइश दी गई, लेकिन उल्लंघन जारी रहने पर चालानी कार्रवाई करते हुए कई वाहनों पर व्हील लॉक लगाए गए और क्रेन से हटाया गया। कार्रवाई के बाद कई प्रमुख मार्गों पर सड़कें खुली और चौड़ी नजर आईं, जिससे आम लोगों को राहत मिली। यातायात पुलिस द्वारा की जा रही निरंतर कार्यवाही के परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में यातायात व्यवस्था अधिक सुगम हुई है तथा आम नागरिकों को राहत मिली है। इंदौर यातायात पुलिस द्वारा शहर में यातायात व्यवस्था को अधिक व्यवस्थित एवं सुरक्षित बनाने हेतु यह अभियान निरंतर जारी रहेगा तथा आगामी दिनों में भी विभिन्न क्षेत्रों में विशेष पेट्रोलिंग एवं सख्त कार्यवाही लगातार की जाएगी।

इंद्रपुरी में 50 साल पुराना पेड़ कटने पर निगम सख्त, 1 लाख का जुर्माना

संपत्तिकर खाता न खुलने पर अलग से वसूली की जाएगी

इंदौर। नगर निगम ने इंद्रपुरी कॉलोनी में 50 वर्ष पुराने हरे-भरे पेड़ को बिना अनुमति काटे जाने के मामले में सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। भवन मालिक मयूर कुकरेजा द्वारा कथित रूप से बिना सक्षम स्वीकृति पेड़ कटवाने की सूचना पर उद्यान विभाग की टीम मौके पर पहुंची और पंचनामा तैयार किया। जानकार्य समिति प्रभारी राजेंद्र राठौर ने बताया कि नगर निगम नियमों के तहत संबंधित भवन मालिक पर 1 लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। निगम अधिकारियों के अनुसार शहर में हरित आवरण को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ लगातार कड़ी कार्रवाई की जा रही है।

जांच के दौरान यह भी सामने आया कि संबंधित भवन का संपत्तिकर खाता अब तक निगम में खुला ही नहीं है। इसे गंभीर लापरवाही मानते हुए राजस्व विभाग ने नोटिस जारी करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। दंड राशि के साथ बकाया संपत्तिकर की वसूली भी की जाएगी। इसके अलावा भवन अनुज्ञा शाखा से स्वीकृत नक्शे और निर्माण अनुमति की जांच कराई जा रही है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि निर्माण नियमों का पालन किया गया या नहीं। निगम ने चेतावनी दी है कि बिना अनुमति पेड़ काटने और कर नियमों की अनदेखी पर भविष्य में और सख्त कदम उठाए जाएंगे।

संपादकीय

भारत की आतंकवाद विरोधी नीति

भारत सरकार ने पहली बार अपनी आतंकवाद विरोधी नीति एवं रणनीति की स्पष्ट व्याख्या की है, जिसका स्वागत किया जाना चाहिए। हालांकि कुछ जानकारों के मत में जो ड्राफ्ट सरकार ने जारी किया है, उसमें नीति जैसा कुछ नहीं है, व्याख्या भर है। बहरहाल, इस आतंकवाद विरोधी नीति को 'प्रहार' (अंग्रेजी में PRAHAAR) नाम दिया गया है। आठ पेज की इस नीति में आतंकी हमलों को रोकने पर खास जोर दिया गया है। साथ ही खतरे के मुताबिक तेज और संतुलित कार्रवाई की बात कही गई है। केंद्र ने नीति की प्रस्तावना में PRAHAAR का फुल फॉर्म बताया है। प्रस्तावना में कहा गया है कि हमारे 'कुछ पड़ोसी देशों ने आतंकवाद को अपनी सरकारी नीति के एक औजार के रूप में इस्तेमाल किया है। फिर भी भारत आतंकवाद को किसी खास धर्म, जाति, देश या सभ्यता से जोड़कर नहीं देखता।' नीति में कहा गया कि आतंकी इंटरनेट का इस्तेमाल आपस में संपर्क, संगठन में भर्ती और जिहाद के महिमामंडन के लिए करते हैं। सरकार ने आतंकवाद को लेकर भारत की भारत की जीरो टॉलरेंस नीति दोहराई है। कहा गया है कि आतंकवाद को किसी भी धार्मिक, जातीय या वैचारिक आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि भारत हर तरह के आतंकवाद की हमेशा कड़ी निंदा करता रहा है। विदेशों की जमीन से काम करते हुए आतंकियों ने भारत में हिंसा फैलाने की साजिशें रची हैं। उनके संचालक (हैंडलर) ड्रोन समेत नई तकनीकों का इस्तेमाल कर पंजाब और जम्मू-कश्मीर में आतंकी गतिविधियों और हमलों को अंजाम देने में मदद करते हैं। नीति में आतंकवाद को रोकने और उससे निपटने के लिए एक व्यवस्थित और खुफिया जानकारी पर आधारित स्ट्रक्चर बनाने और सरकारी एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल बढ़ाने पर जोर दिया गया है। नीति में यह भी कहा गया है कि आतंकी संगठन अब तेजी से संगठित आपराधिक गिरोहों की मदद ले रहे हैं, ताकि लॉजिस्टिक सपोर्ट और भर्ती के जरिए भारत में आतंकी हमले कर सकें। प्रचार, आपसी संपर्क, फंडिंग और हमलों को दिशा देने के लिए ये आतंकी समूह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और इंस्टेंट मैसेजिंग ऐप्स का इस्तेमाल करते हैं। 'प्रहार' में सरकार के साथ पूरे समाज की भागीदारी वाला तरीका अपनाने की बात कही गई है। आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले कट्टरपंथ जैसे हालात को खत्म करने पर भी ध्यान देने की बात कही गई है। इसमें कहा गया है कि राष्ट्रीय आतंकवाद-विरोधी नीति का मुख्य मकसद भारतीय नागरिकों और देश के हितों की रक्षा के लिए आतंकी हमलों को रोकना है। इसके अलावा खतरे के मुताबिक तेज और संतुलित जवाब देना है। नीति में कहा गया है कि आतंक के खिलाफ सरकार के अलग-अलग विभागों की ताकत को मिलाकर काम करना है। खतरों से निपटने के लिए मानवाधिकार और कानून आधारित प्रक्रियाएं अपनानी हैं। भारत सक्रिय और खुफिया जानकारी पर आधारित रणनीति अपनाता है। इसमें मल्टी एजेंसी सेंटर (MAC) की अहम भूमिका है। इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) के तहत काम करने वाली जॉइंट टास्क फोर्स ऑन इंटेलिजेंस (JTFI) का भी जिक्र है, जो देशभर में रियल-टाइम खुफिया जानकारी साझा करने और संयुक्त कार्रवाई के लिए काम करते हैं। यूं इस नीति में कई बातें कही गई हैं, लेकिन असल सवाल इस नीति पर प्रभावी अमल की नीयत और तैयारी का है। सरकारें इस पर कितनी ईमानदारी और असरदार ढंग से अमल करती है, इस पर नीति की सफलता निर्भर है। लेकिन यह नीति उस दिशा में एक ठोस और जरूरी कदम है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। खासकर तब कि जब भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए पड़ोसियों के साथ और भी कई एजेंसियां सक्रिय हैं।

एआई में आम आदमी को मिलेगी कितनी जगह?

नजरिया

प्रो. महेश चंद गुप्ता
लेखक दिल्ली यूनिवर्सिटी में शिक्षक रहे हैं।

हाल में नई दिल्ली में एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का समापन हुआ है। यह केवल एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का अंत नहीं है बल्कि यह भारत के लिए एक नई तकनीकी यात्रा की शुरुआत का संकेत है। आज जब पूरी दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को भविष्य की धुरी मानकर आगे बढ़ रही है, भारत ने यह संदेश दे दिया है कि वह इस दौड़ में पीछे नहीं रहेगा। यह संदेश इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि एआई तकनीक अब किसी एक देश, एक कंपनी या कुछ अमीर समाजों तक सीमित तकनीक नहीं रह गई है। एआई वह औजार बन चुका है जो शासन, अर्थव्यवस्था, समाज और व्यक्ति सबके जीवन को गहराई से प्रभावित करने वाला है। भारत एआई में आगे बढ़ना चाहता है पर सवाल यह है कि क्या देश एआई को केवल उपभोक्ता की तरह या फिर निर्माता और दिशा निर्देशक के रूप में अपनाएगा?

समिट के उद्घाटन अवसर पर पीएम नरेंद्र मोदी ने जिस दृष्टि को सामने रखा है, वह दरअसल आत्म निर्भर और समावेशी सोच का विस्तार है। मोदी ने कहा है कि एआई केवल अमीर देशों की तकनीक नहीं होनी चाहिए बल्कि 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' का माध्यम बनना चाहिए। मोदी का यह कथन मौजूदा वैश्विक तकनीकी विमर्श में भारत की अलग पहचान को रेखांकित करने वाला है। यह कथन सिर्फ एक राजनीतिक वक्तव्य नहीं है बल्कि उस ऐतिहासिक अनुभव का निचोड़ है जिसमें भारत ने अंतरिक्ष कार्यक्रम, डिजिटल भुगतान और आधार जैसी पहचान प्रणाली हर बड़ी तकनीक को अंततः आम आदमी के जीवन से जोडने् की कोशिश की है।

वास्तविकता यह है कि एआई आज हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। कृषि में फसल पूर्वानुमान से लेकर स्वास्थ्य में रोग पहचान तक, शिक्षा में व्यक्तिगत रूप से सीखने के मॉडल से लेकर यातायात प्रबंधन और आपदा पूर्व चेतावनी प्रणालियों तक हर जगह एआई की भूमिका बढ़ती जा रही है। दुनिया के विकसित और विकासशील देश इस तकनीक को अपने-अपने ढंग से साधने में जुटे हैं। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में यदि भारत एआई टूल्स विकसित करने में पीछे रह जाता है तो उसे अनिवार्य रूप से इसके लिए दूसरों पर निर्भर होना पड़ेगा। यह निर्भरता केवल तकनीकी नहीं होगी बल्कि नीतिगत और रणनीतिक भी होगी। ऐसे में एआई इम्पैक्ट समिट भारत के लिए एक रोडमैप की तरह उभरा है। इस आयोजन ने ऐसा रोडमैप बनाया है, जिससे हमें पता चलता है कि हमें किस दिशा में और किस गति से आगे बढ़ना है।

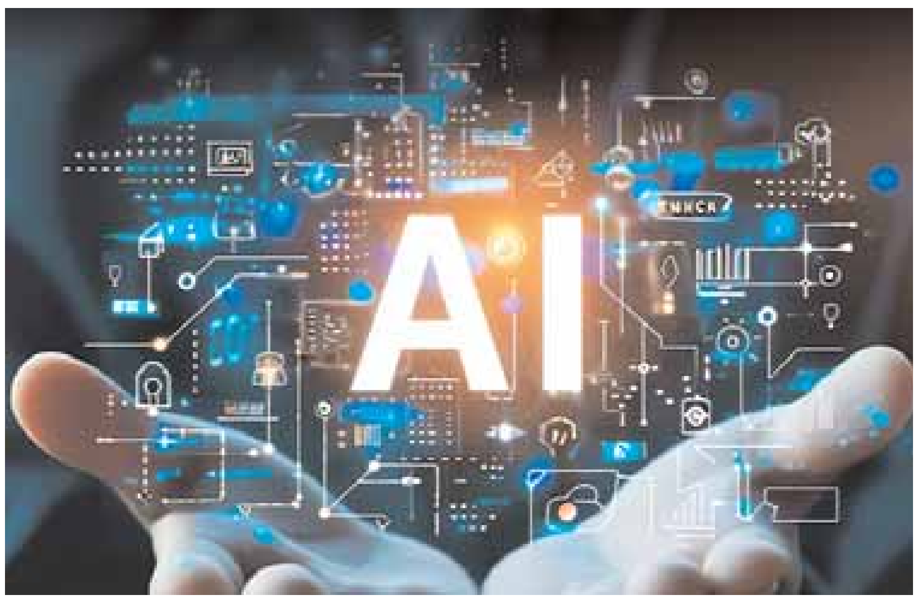

हालांकि किसी भी बड़े तकनीकी सपने की असली परीक्षा उसकी धरातल पर उतरने की क्षमता में होती है। सरकार की ओर से एआई को लेकर जो पहलें सामने आ रही हैं, उन्हें कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। अनुसंधान, स्टार्टअप्स, कौशल विकास और नीति निर्माण सभी स्तरों पर प्रयास दिखाई देते हैं लेकिन भारतीय व्यवस्था का एक कड़वा सच यह भी है कि अक्सर योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंचने से पहले ही कुछ 'लपके' लोग बीच में समेट लेते हैं। एआई जैसी जटिल और शक्तिशाली तकनीक के साथ यह खतरा और भी बढ़ जाता है। यदि एआई का लाभ केवल बड़े शहरों, बड़ी कंपनियों और सीमित तबकों तक सिमट गया तो इसका उद्देश्य ही विफल हो जाएगा।

इसलिए अब आवश्यकता इस बात की है कि एआई विशेषज्ञ, नीति निर्माता, मंत्रालय और नौकरशाही मिलकर इस बात पर गंभीरता से विचार करें कि आम आदमी को इससे सीधे कैसे जोड़ा जाए। आम आदमी को इसका प्रत्यक्ष लाभ कैसे मिले। उदाहरण के तौर पर यदि एआई के जरिये यह पता चल सके कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली में कहां अनाज खुर्दबुर्द हो रहा है तो यह तकनीक भूख के खिलाफ एक प्रभावी हथियार बन सकती है। यदि टीकाकरण या प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं में गिरावट का संकेत एआई पहले ही दे दे तो समय रहते हस्तक्षेप संभव है। यदि मौसम और भूगर्भीय डेटा के विश्लेषण से यह अनुमान लगाया जा सके कि किस क्षेत्र में प्राकृतिक आपदा की आशंका है तो जान-माल की हानि को काफी हद तक रोका जा सकता है।

लेकिन इन सभी संभावनाओं के साथ निगरानी और जवाबदेही का प्रश्न भी जुड़ा है। हमने देखा है कि योजनाएं कागज से धरातल तक आते-आते कैसे बदल जाती हैं? हमारे देश में नई तकनीक का स्वागत पूरे उत्साह से होता है लेकिन कुछ समय बाद वही तकनीक निगरानी और जवाबदेही के अभाव में अपनी धार खोने लगती है। एआई के क्षेत्र में यह लापरवाही भारी पड़ सकती है। हमें न केवल यह देखना होगा कि हम क्या कर रहे हैं बल्कि यह भी निगरानी रखनी होगी कि दुनिया क्या कर रही है और हम उससे क्या सीख सकते हैं। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में आत्म मुग्धता के लिए कोई जगह नहीं है। इसके साथ ही एआई के दुरुपयोग की आशंकाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। डीपफेक, डिजिटल जालसाजी, निजता का उल्लंघन और गलत सूचना आदि एआई के स्याह पहलू हैं। सरकार ने इन पर लगाम लगाने के लिए कुछ कदम उठाने की घोषणा की है, जो स्वागत योग्य है लेकिन यह काम आधे-अधूरे प्रयासों से नहीं चलेगा। इसके लिए मजबूत कानूनी ढांचा, तकनीकी समाधान और जन-जागरूकता की जरूरत होगी।

एआई इम्पैक्ट समिट को लेकर विपक्षी दलों ने आपत्तियां जताई हैं। लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक है पर यदि हर नई तकनीक और हर दीर्घकालिक सोच का विरोध केवल विरोध के लिए किया जाए तो देश का हित पीछे छूट जाता है। आजादी के बाद यदि बाँध, अंतरिक्ष कार्यक्रम, कम्प्यूटर क्रांति और डिजिटल ढांचा जैसे हर बड़े विकास कार्यों का विरोध किया जाता तो क्या देश की तस्वीर आज जैसी होती? मोदी का 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का सपना तभी साकार हो सकता है, जब इस दिशा में उठाए गए कदमों में व्यापक सहमति और सामूहिक भागीदारी हो। विपक्षी दलों को इस पर सोचना चाहिए।

एआई को लेकर सबसे बड़ा भरोसा यही है कि यह भविष्य की प्रगति का एक सशक्त माध्यम बनेगा। यह प्रशासन को अधिक पारदर्शी बना सकता है, सेवाओं को तेज और सटीक कर सकता है और संसाधनों के बेहतर उपयोग में मदद कर सकता है लेकिन यह भरोसा तभी टिकेगा जब आम नागरिक को यह महसूस हो कि एआई उसके जीवन को रोजमर्रा अनुभवों में वास्तव में बेहतर बना रहा है। एआई इम्पैक्ट समिटन केवल भारत को मौका दे रहा है बल्कि आईना भी दिखाता है। अब यह हम पर है कि हम इसे क्या बनाते हैं? हमारे लिए अवसर है कि हम सही नीतियों, सही निवेश और सही इरादों के साथ दुनिया को नेतृत्व दे सकते हैं। इसके साथ चेतावनी यह है कि यदि हमने आम आदमी को केंद्र में नहीं रखा और यदि निगरानी और नैतिकता को नजरअंदाज किया तो यही तकनीक असमानताओं को और गहरा कर सकती है। भारत की ताकत हमेशा उसकी मानवीय दृष्टि रही है। यदि एआई को उसी दृष्टि से साधा गया तो यह सचमुच विकसित भारत की नींव बन सकती है।

आरक्षण हटाने की नहीं, उसकी विसंगतियों पर चर्चा हो

मुद्दा

डॉ. गरिमा संजय दुबे
लेखक प्राध्यापक हैं।

यदि आप एक संवेदनशील, न्यायप्रिय मन के व्यक्ति हैं और ज़मीनी हक़ीक़त को जानते हैं तो आप सामाजिक न्याय की अवधारणा में आरक्षण के महत्व को नकार नहीं सकते । आरक्षण क्यों आवश्यक था, आज भी क्यों आवश्यक है इस विषय पर चर्चा अवश्य होनी चाहिए किंतु किसी दुर्भावना के साथ नहीं तथ्य पर आधारित हो ।

शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े होने के कारण नित्य ही ऐसे कई मामलों से सामना होता है जब लगता है कि आज भी आरक्षण आवश्यक है। लोक कल्याण की योजनाओं पर कार्य करने वाले अधिकारी भी इनसे रोज दो चार होते होंगे, यदि कोई पूर्वाग्रह मन में न हो तो आरक्षण की आवश्यकता पर कोई संशय नहीं होता आज भी ।

यह एक बड़ा कटु सत्य है कि सामाजिक विसंगतियों की खाई के चलते यदि स्वतंत्रता के पश्चात आरक्षण नहीं होता तो केवल कुछ समुदायों की समृद्धि भारत की समृद्धि नहीं हो पाती । सामाजिक न्याय की अवधारणा में वे बी एन राव रहे हों, आंबेडकर रहे हों या कोई और जो नियम डाले गए वह एक समाज के तौर पर सबके विकास का बीज थे । यदि आरक्षण नहीं होता दलित वंचित पीड़ित कभी भी आगे नहीं बढ़ पाते, आज ही यदि आरक्षण न हो तो कई बच्चे नहीं पढ़ पाएंगे, उनकी आर्थिक स्थिति आज भी वैसी नहीं है कि वे विद्यालय महाविद्यालय का शुल्क जमा कर पाएं, जब दरिद्र इतने रहे तो कि भोजन के लिए ही संघर्ष करना पड़ा तो पुस्तकें कहां से आतीं, तो बुद्धि का जो डीएनए विकसित होना चाहिए वह कैसे हो, इसलिए आरक्षण की व्यवस्था को मिटाने की बात आज भी नहीं की जा सकती, हां उसे न्यायसंगत विसंगति रहित और प्रत्येक वंचित, दरिद्र के लिए लागू करवाने की होनी चाहिए चाहे वह किसी भी जाति समुदाय से आता हो। सरकार की अनेक लोक कल्याणकारी योजनाएं इसी आधार पर कार्य कर रही हैं, उनका निरिक्षण सही हो और सही व्यक्ति तक सहायता पहुंचे इसकी और चुस्त व्यवस्था बनाई जानी चाहिए।

उसमें जो विसंगतियां हैं, राजनीतिक विकृति और सामाजिक भ्रष्टाचार ने जो विसंगतियां पैदा की है आरक्षण की अवधारणा में, उसपर खुल कर चर्चा होनी चाहिए ।

सर्वप्रथम बात आती है भेद की, हमें भेद पर बात करनी चाहिए, जाति पर नहीं। किंतु होता यह रहा कि जाति, धर्म पर आधारित भेद को ही एकमात्र सत्य मानकर कुछ जातियां सदा पीड़ित मानी गईं, कुछ सदा शोषक ।

भेद इस सृष्टि में हर कहीं हैं, इस्लाम सिया, सुन्नी, अहमदियां, यहूदी के भेद से उबरा नहीं है, ईसाई में, कैथोलिक, ऑर्थोडॉक्स ओल्ड और न्यू प्रोटेस्टेंट, और उनमें पद के कई भेद हैं, जैन, बुद्ध, इत्यादि सभी में भेद है, जहां कोई और भेद नहीं है वहां काले गोरे का भेद है, अमेरिका और अफ्रीका अभी भी इस भेद में उलझे हैं । भारत में भेद की बहुतायत है, एक जटिल सामाजिक संरचना में धर्म, मज़हब, जाति, भाषा, रंग, भोजन, पहनावा, परम्पराओं के अनगिनत भेद हैं उन सभी भेद को समाप्त करने की बात होनी चाहिए ।

किंतु आरक्षण की विसंगतियों ने जाति प्रमुख कर दी भेद पीछे रह गया । केवल आरक्षण से भेद कहां समाप्त हुआ, बल्कि बढ़ा ही है, आरक्षित अनारक्षित का भेद, इसलिए भेद केवल जातियों के बीच है ऐसा नहीं है और पीड़ित केवल निचली जातियां होती हैं ऐसा भी नहीं है। भारत जैसे देश में कौन पीड़ित नहीं है, कौन ऐसा है जिसने कभी न कभी किसी न किसी तरह के भेद का सामना नहीं किया । इसलिए भेद मिटे इसकी बात होनी चाहिए, किसी एक जाति विशेष के लिए भेद मिटे, शेष के लिए लागू रहे यह अन्याय होगा । किसी एक जाति के नाम को लेना अपराध और दूजी जाति पर निरंतर आपत्तिजनक शब्दों की बौछार को प्रगतिशीलता और न्याय मानना न केवल असंवैधानिक है बल्कि अमानवीय भी ।

इसलिए आरक्षण चलता रहे किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए, किंतु उसके आधार पर भेद दृष्टि बढ़े और एक हथियार की तरह उसका उपयोग हो इसे रोक जाना चाहिए । भेद को समाप्त कीजिए किसी भी स्तर पर, जाति,धर्म, भाषा, रंग, लिंग, भोजन आधारित भेद किसी के भी साथ हो गलत माना जाए तभी समरसता की अवधारणा बल पाएगी ।

दूसरा आरक्षण के आवंटन में विसंगति और और आज भी क्यों वंचित हैं लोग, क्योंकि जिन्होंने आरक्षण ले लिया वे पीढ़ियों तक अभी भी आरक्षण ले रहे हैं । किसी वंचित का अधिकार किसी सवर्ण ने नहीं मारा है, वह तो अपने पचास प्रतिशत में संघर्ष कर रहा है, उसने देखा ही नहीं कि आपको क्या मिला रहा है, वह अपने प्रयास बढ़ाता रहा ।

उसने इसे सामाजिक न्याय की आवश्यकता समझ स्वीकार किया है, विरोध वह अन्याय का करता है । वे जो पीढ़ियों से आरक्षण ले रहे हैं अपने ही तबके के लिए आरक्षण नहीं छोड़ पा रहे वह क्रीमी लेयर इस आवंटन में विसंगति को देखे । एक पीढ़ी के बाद आरक्षण नहीं मिलना चाहिए यह नियम उनके ही दलित वंचित पीड़ित भाईयों के लिए सही होगा, वे अपना आरक्षण नहीं छोड़ना चाहते और सवर्णों से द्वेष पालते हैं, सवर्ण इसमें कहां दोषी है ।

तीसरा, स्कूल शिक्षा में सभी विद्यार्थियों को समान सुविधाएं दी जानी चाहिए चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि और जाति समाज से आते हो, विद्यालय महाविद्यालय समानता सीखाने के केंद्र हैं, वहीं से बीज गलत पड़ जायेगा तो आगे सुधार कैसे होगा, इसलिए बहुत कुछ सरकार कर रही है जो कुछ थोड़ा बहुत सुधार और है उसमें आरक्षित अनारक्षित सभी को समान सुविधाएं मिलें । आर्थिक स्थिति पर बात होनी चाहिए लेकिन हम जाति पर ही बात करना चाहते हैं । गरीबी की कोई जाति नहीं होती, भूख का कोई धर्म नहीं होता । हर गरीब को सुविधा और हर भूखे को भोजन मिले यही सामाजिक न्याय है । क्या भूखे ब्राह्मण,बनिया, क्षत्रिय को भोजन का अधिकार नहीं, क्या गरीब ब्राह्मण, बनिया, क्षत्रिय सुविधा का अधिकारी नहीं । आरक्षण का विरोध केवल इन्हीं विसंगतियों के कारण है । छात्रवृत्ति का आधार भी यही हो । सरकार ने कई मेरिट छात्रवृत्ति चालू कर सामान्य मेधावी,EWS के लिए व्यवस्था की है जो कुछ कुछ सहारा बनी है यह अच्छी पहल है, ऐसे और अवसर तैयार किए जाने चाहिए । प्रतियोगी परीक्षाओं की फीस निर्धारण में सरकार सीधा हस्तक्षेप कर ही सकती है, सब पढ़ें सब बढ़े में जाति आधारित परीक्षा शुल्क, फॉर्म भरने की फीस की विसंगतियां बहुत बड़ी नहीं हैं, इन्हें हर विद्यार्थी के लिए समान शुल्क लागू करके राहत आसानी से दी जा सकती है ।

अनुकूलता का सिद्धांत जानते हैं न, एक वर्ग ने अपने लिए संघर्ष जान अपने प्रयास बढ़ा लिए और कुछ न होते हुए भी वे आज आगे हैं, दूसरे वर्ग को बैसाखियां इतनी थमा दी कि वे अपने पैरों की ताकत ही खो बैठे। बैसाखियां उतनी ही दीजिए जितनी आवश्यक हों, कहीं अपना परिश्रमी चरित्र ही न भूल जाएं एक पूरा तबका ।

अनंत बैकलॉग सीट, भारत का लगभग हर विभाग कर्मचारियों की कमी से जूझ रहा है, और बाहर युवा बेरोजगार घूम रहा है, कैसी विडम्बना है। बैकलॉग की सीट अन्नत काल तक खाली पड़ी रहेगी, लेकिन उसपर कोई योग्य बेरोजगार को वह सीट नहीं दी जाएगी, जब आपको योग्य लोग मिल जाएं वह सीट खाली करवा लीजिए, लेकिन जब तक नहीं मिलते हैं उनपर प्रवेश खुला रख उन युवाओं को दीजिए जो पढ़ना चाहते हैं ।

और अब बात बिलकुल अभी अभी की, UGC किसी के साथ भी (दलित, वंचित, पीड़ित, अल्पसंख्यक, विकलांग महिला, अनारक्षित आरक्षित कोई भी वर्ग) भेद होने पर समान दंड की व्यवस्था हो, जांच पहले दंड बाद में और झूठी शिकायत पाने पर तीन गुना दंड की व्यवस्था, केवल यही तीन परिवर्तन चाहता है हर न्यायप्रिय मनुष्य चाहे वह समाज के किसी भी वर्ग से आता हो ।

यकीन मानिए हम सब भारतीय भारत को एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं, जहां सभी समृद्ध हों, सभी सुखी हों। समृद्धि किसे बुरी लगती है, दरिद्रता किसे भाती है, हम सब यह भी जानते हैं कि हम अकेले आगे बढ़े तो यह अधूरी समृद्धि होगी, अधूरा विकास होगा इसलिए समस्त विसंगतियों के बाद भी सामाजिक न्याय की अवधारणा, लोक हितकारी राज्य (वेलफेयर स्टेट) को अपनाया गया, उसी संविधान ने बहुत सी जड़ताओं पर प्रहार किया है अब कोई किसी से जाति पूछ कर साथ नहीं बैठता समाज में, कार्यस्थलों पर जाति पूछकर भोजन पानी नहीं लिया जाता, भंडारों में सब वैष्णव ही माने जाते हैं, मंदिरों में जाति नहीं पूछी जाती, अपवाद छोड़ दें कुछ कुत्सित मानसिकता वाले हर कहीं होते हैं, उनमें से भी अनेक क्षुद्र राजनीति से प्रेरित, अन्यथा भौतिक समृद्धि में जाति की दीवारें वैसे ही ढह जाती हैं, रोटी बेटी के संबंध बहुत सामान्य हो चले हैं, किंतु मंच से बेटियों के लिए कही जाने वाली आपत्तिजनक बातें किसी भी समुदाय की बेटी बहन के लिए स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए ।

सब मिलकर ही आगे बढ़ सकते हैं, किंतु राष्ट प्रथम रहे, अपने भेद मिटाएं जाएं । यदि सत्ता भ्रमित हो रही हो तो जनमानस का यह कर्तव्य है कि वह उसे उसके कर्तव्य याद दिलाएं, और कहे कि हमें बांटने के हर प्रयास को हम असफल करेंगे, कर रहे हैं ।

हम भ्रमित न हो, आखिर में पीड़ित आम इंसान ही होता है, दुःख आम इंसान के हिस्से आते हैं, और पीड़ा और दुःख का भी न कोई जाति होती है न कोई धर्म ।

आईये 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की अवधारणा पर काम करें, एक सामान्य मनुष्य के हाथ में केवल यही है कि वह शुभ भावनाओं को प्रसारित कर सके अपने अपने स्तर पर।

मप्र में हो निमहंस: उत्तर भारत की जरूरत व राष्ट्रीय प्राथमिकता

मानसिक सेहत

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी
कंसल्टेंट साइकियाट्रिस्ट

केंद्र सरकार ने हाल ही में आम बजट में उत्तर भारत में निमहंस 2.0 (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज) स्थापित करने की घोषणा की है। केंद्र सरकार ने यह घोषणा कर स्पष्ट संदेश दिया है कि वह मानसिक स्वास्थ्य को लेकर संवेदनशील है और बढ़ते मानसिक रोगों के बोझ को कम करने के लिए गंभीरता से काम करना चाहती है। यह निर्णय सराहनीय है क्योंकि सरकार अब मानसिक स्वास्थ्य को राष्ट्रीय स्वास्थ्य ढांचे की अग्रिम पंक्ति में रख रही है।

देश में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जारी एक नयी रिपोर्ट ने बीते दिनों हड़कंप मचा दिया था। रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर पांचवां किशोर या युवा, किसी न किसी स्तर के डिप्रेशन, एंग्जायटी या अन्य मानसिक विकार से जूझ रहा है। इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी की 77 वीं वार्षिक राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस एनसिप्स 2026 में यह तथ्य चिंता का विषय था कि भारत में करीब 60 प्रतिशत मानसिक रोग 35 साल से कम उम्र के लोगों में पाए जा रहे हैं। पढ़ाई पूरी करने, कॅरियर बनाने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने की उम्र में मानसिक समस्याओं के शुरू हो जाने से इनका असर पूरी जिंदगी पर पड़ता है। अध्ययनों और अनुभव ने यह तथ्य भी रखा है कि कोविड-19 महामारी, आर्थिक अस्थिरता और बदलती सामाजिक संरचना ने युवाओं के तनाव को और बढ़ा दिया है।

जब 60 प्रतिशत मानसिक रोग 35 साल से कम उम्र में ही सामने आ रहे हैं, तो यह समस्या अधिक ध्यान आकृष्ट करती है। एक तरह से यह देश की मानसिक सेहत का नक्शा भी है। भारत में मानसिक रोगों के बढ़ने की एक बड़ी वजह यह है कि लोग समय पर इलाज के बारे में जागरूक नहीं हैं। अगर मानसिक समस्याओं की पहचान शुरुआती दौर में हो जाए, तो लगभग सभी मानसिक रोगों का सफल इलाज संभव है और व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है।

इन तथ्यों के साथ यह भी स्पष्ट है कि दक्षिण भारत में स्थित प्रतिष्ठित निमहंस पहले से ही पूरे देश के मरीजों का अत्यधिक भार संभाल रहा है। उत्तर, मध्य और पूर्वी भारत के मरीजों को इलाज के लिए हजारों किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ती है। ऐसे में बजट में घोषित निमहंस 2.0 का सबसे उपयुक्त स्थान मध्यप्रदेश है क्योंकि यह देश के भौगोलिक केंद्र में है और उत्तर भारत के विशाल जनसमूह के लिए स्वाभाविक रूप से सुलभ है।

मध्यप्रदेश में इस संस्थान की स्थापना से उत्तरप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली-एनसीआर, छत्तीसगढ़, बिहार और झारखंड तक के लाखों लोगों को तृतीयक स्तर की मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ सहजता से मिल सकेंगी। आज डिप्रेशन, एंग्जायटी, सब्स्टेंस यूज़, डिजिटल एडिक्शन और न्यूरोलॉजिकल विकारों का बोझ तेजी से बढ़ रहा है, जबकि सुपर-स्पेशियलिटी संस्थान बहुत कम हैं। निमहंस 2.0 इस कमी को पूरा करते हुए रिसर्च, ट्रेनिंग और नीति-निर्माण का राष्ट्रीय केंद्र बनेगा।

इस आलेख के माध्यम से मैं आमजन, मनोचिकित्सकों, न्यूरोलॉजिस्टों और न्यूरो सर्जनों से अपील करता हूँ कि उत्तर भारत में निमहंस 2.0 को मध्यप्रदेश में स्थापित कराने के लिए अपना-अपना योगदान दें। यह सिर्फ एक संस्थान नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों की मानसिक स्वास्थ्य क्रांति की नींव है। सरकार का यह दूरदर्शी कदम तभी सफल होगा जब समाज और विशेषज्ञ मिलकर इसे आगे बढ़ाएँ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल

संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी

स्थानीय संपादक
हेमंत पाल

प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

तन-बदन में आग लगाते शब्द याने कि शब्दास्त्र

व्यंग्य

राजेंद्र बज
लेखक व्यंग्यकार हैं।

इसमें कोई दो मत नहीं कि शब्दों का अस्त्र याने कि 'शब्दास्त्र' का असर भी ब्रह्मास्त्र के समकक्ष हो सकता है। कोई जरूरत नहीं है वाद-विवाद अथवा टकराव की स्थिति में अस्त्र-शस्त्र उठाने की, आप मजे में 32 दांतों के बीच मचलती जुबान चलाकर भी मनोरथ की प्राप्ति कर सकते हैं। सही समय पर सही शब्द का उपयोग भी एक कला है। कभी-कभी तो एक ही चुनिंदा शब्द विरोधी पक्ष के तन-बदन में आग लगा देता है। अब यदि हमें लेकर विरोधी पक्ष द्वारा उछाले गए घातक और मारक शब्द की काट नहीं की जाएं तो निश्चित रूप से अवसाद में डूब जाने के अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता ही शेष नहीं बचता।

इसलिए विशेष कर राजनीति के मैदान में डटे रहने के लिए हर छोटे-बड़े राजनेता को शब्दकोश खंगाल कर चुनिंदा शब्दों का संग्रह तैयार कर लेना चाहिए। इसके चलते राजनीति में चाहे सम परिस्थिति हो या विषम, हर एक स्थिति में आत्मविश्वास ही इस कदर प्रबल हो जाता है कि चोरी करने पर भी सीनाजोरी करने लायक पर्याप्त सामर्थ्य आ जाता है। आध्यात्मिक एवं भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी शब्दों की महिमा को अपरंपार दर्शाया गया है। इसलिए यदि हमारे पास कुछ भी नहीं हो लेकिन दिल और दिमाग में शब्दों का भंडार हो तो केवल राजनीति ही नहीं अपितु व्यापार व्यवसाय या किसी पेशे में भी अपना डंका बजाया जा सकता है। खैर।

लोकतंत्र के चलते अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दौर में तो यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि शब्दों के हथियार

साथ रखे जाएं। अन्यथा राजनीति के मैदान में राह चलते हर कोई राह चलता हमें धराशाही कर सकता है। वैसे आए दिन राजनेताओं की जुबान इस कदर फिसल भी जाती है कि कुर्सी पर बैठे हुए हो तो कुर्सी फिसल जाने का अंदेशा हो जाता है। या फिर कुर्सी पाने की अभिलाषा तार-तार हो जाती है। इसलिए यह भी जरूरी है कि कुछ एक मामलों में मन की भड़ास को घुमावदार शब्दों का उपयोग करते हुए व्यक्त कर दी जाएं। लेकिन इस कला में पारंगत होने के लिए भी राजनेताओं को शब्द ज्ञानी बनाने की जरूरत है।

आजकल के दौर में कब सेर को सवा सेर मिल जाएं? यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि राजनीति में अपने मूल उद्देश्य (?) को पाने के लिए भाषा विज्ञान की दृष्टि से तमाम तरह के संसदीय एवं असंसदीय शब्दों का दिल और दिमाग में संचय कर लिया जाएं। इसका सीधा लाभ यह होगा कि जब हमें कोई सवा सेर मिल जाएं तो हम डेढ़ सेर सिद्ध हो सकें। और इसी अनुपात में अपने शाब्दिक सामर्थ्य के बलबूते अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का रसास्वादन कर सके। व्यवहार में देखा गया है कि शब्दों से खेल-खेल कर कुछ एक शख्सियत तो सत्ता के सिंहासन पर भी विराजमान होती रही है।

जनमानस को लुभाने के लिए जुमलों के उपयोग का चमत्कारिक प्रभाव तो आप और हम देख ही रहे हैं। वास्तव में हमारे यहां की राजनीति एक प्रकार से शब्दों की बाजीगरी के इर्द-गिर्द घुमा करती है। तमाम तरह के नारे और वादे अब बीते दौर की बात हो चले हैं। आजकल तो शब्दों और जुमलों के आधार पर सदन में इधर या उधर स्थान मिलने लगा है। सदन से बाहर जो राजनीति हुआ करती है वह भी इसी तर्ज पर होने लगी है। आदमी बैठे-बैठे जुमलों और शब्दों को उछाल-उछाल कर मनवांछित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यदि राजनीति के मैदान में लंबी रेस का घोड़ा बनना हो, तो स्कूल या कॉलेज में जाने के बजाय शब्दकोष को अच्छी तरह से खंगाल कर 'शब्दास्त्र' का जखीरा संग्रह कर लेना चाहिए।

दृष्टिकोण

डॉ. मनीष जैसल
मीडिया प्राध्यापक और टिप्पणीकार

डेटा के जंगल में खोती मानवीय संवेदना

डिजिटल संस्कृति पर काम करने वाली मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री शेरी टर्कल ने अपनी शोध में बार-बार चेताया है कि तकनीक हमें 'जुड़े हुए लेकिन अकेले' बना रही है। उनका तर्क है कि डिजिटल इंटरफेस भावनात्मक जटिलताओं को सरल संकेतों में बदल देता है जैसे इमोजी, लाइक और कमेंट में। यह बदलाव केवल सुविधा का नहीं, संवेदना के क्षरण का संकेत है। गहन पठन वह प्रक्रिया है जिसमें पाठक पात्रों के साथ दुखी होता है, उनके संघर्ष में खुद को देखता है और समाज को नए नज़रिए से समझता है।

आज मानव सभ्यता एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ स्मृति, संस्कृति और अनुभव, तीनों तेज़ी से डेटा में बदल रहे हैं। जो इतिहास कभी मौखिक परंपराओं में बहता था, जो साहित्य पाठक के भीतर भावनात्मक कंपन पैदा करता था, और जो सामाजिक जीवन रिश्तों की गर्माहट से चलता था, वह अब एल्गोरिद्म, सर्वर और डिजिटल आर्काइव्स में संरक्षित हो रहा है। डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ इसी परिवर्तन का एक अकादमिक नाम है। इसका उद्देश्य ज्ञान को सुरक्षित करना, सुलभ बनाना और नए तरीकों से विश्लेषित जानकार मानते हैं । लेकिन ज़मीनी हकीकत यह भी है कि इस प्रक्रिया में मानवीय संवेदना धीरे-धीरे आँकड़ों की भीड़ में दबती जा रही है।

मीडिया सिद्धांतकार मार्शल मैक्लुहान ने दशकों पहले कहा था कि हर नई तकनीक केवल सूचना का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह मनुष्य की सोचने और महसूस करने की संरचना को बदल देती है। उनका प्रसिद्ध विचार था कि 'माध्यम ही संदेश है।' आज डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ इसी सिद्धांत को साकार करती दिखती है, जहाँ किताब का अर्थ बदल रहा है क्योंकि उसका माध्यम बदल चुका है।

आज दुनिया की सबसे बड़ी डिजिटल पुस्तक परियोजना गूगल बुक्स है। कंपनी के सार्वजनिक आँकड़ों के अनुसार अब तक लगभग 4 करोड़ से अधिक किताबें स्कैन की जा चुकी हैं। हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड और अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की दुर्लभ रचनाएँ अब ऑनलाइन खोजी जा सकती हैं। लेकिन इसी परियोजना पर कई शोध यह भी दिखाते हैं कि पाठकों का व्यवहार बदल गया है। अधिकांश उपयोगकर्ता किताबें पूरी पढ़ने के बजाय शब्द खोजते हैं, अंश उठाते हैं और तुरंत आगे बढ़ जाते हैं।

डिजिटल संस्कृति पर काम करने वाली मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री शेरी टर्कल ने अपनी शोध में बार-बार चेताया है कि तकनीक हमें 'जुड़े हुए लेकिन अकेले' बना रही है। उनका तर्क है कि डिजिटल इंटरफेस भावनात्मक जटिलताओं को सरल संकेतों में बदल देता है जैसे इमोजी, लाइक और कमेंट में। यह बदलाव केवल सुविधा का नहीं, संवेदना के क्षरण का संकेत है। गहन पठन वह प्रक्रिया है जिसमें पाठक पात्रों के साथ दुखी होता है, उनके संघर्ष में खुद को देखता है और समाज को नए नज़रिए से समझता है।

इतिहास के क्षेत्र में यह संकट और गहरा है। विश्वभर में संग्रहालय और आर्काइव्स अपने दस्तावेज़ों को डिजिटल रूप दे रहे हैं ताकि समय और आपदाओं से उन्हें बचाया जा सके। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की लगभग 60 प्रतिशत सांस्कृतिक धरोहर नष्ट होने के खतरे में है, इसलिए डिजिटलीकरण को प्राथमिकता दी जा रही है। लेकिन इसी संस्था की रिपोर्ट यह भी बताती है कि डिजिटाइज़ हो रही सामग्री में भारी हिस्सा औपनिवेशिक और संस्थागत रिकॉर्ड का है। यानी सत्ता के पास जो इतिहास था, वही डिजिटल भविष्य में भी हावी हो रहा है।

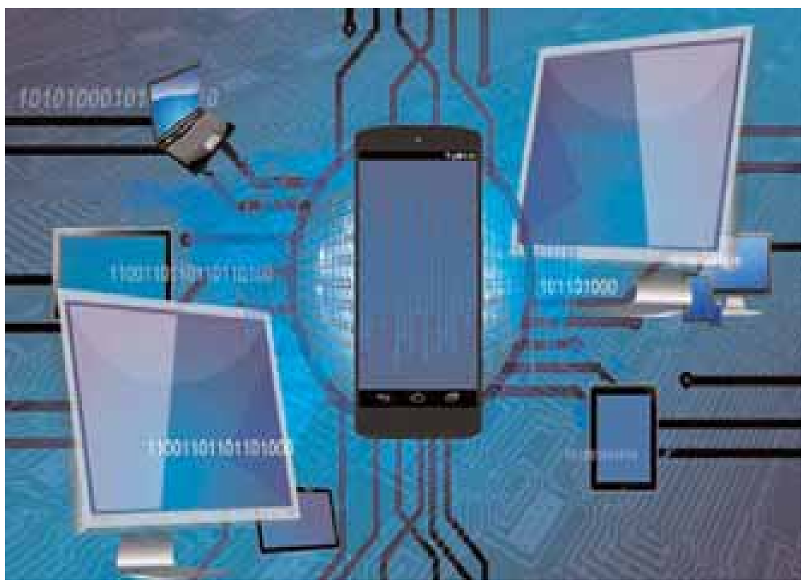

भारत, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों की मौखिक परंपराएँ, लोककथाएँ और स्मृति-आधारित इतिहास डिजिटल डेटाबेस में बहुत कम दिखाई देते हैं। कारण साफ़ है, एल्गोरिद्म लिखित, संरचित और स्कैन योग्य सामग्री को प्राथमिकता देता है। परिणाम यह होता है कि डिजिटल इतिहास देखने में विशाल लगता है, लेकिन उसमें आम लोगों की आवाज़ें गायब रहती हैं।

इस क्षेत्र के प्रमुख विद्वान Franco Moretti ने 'डिस्टेंट रीडिंग' की अवधारणा पेश की, जिसमें हज़ारों पुस्तकों को एक साथ डेटा के रूप में विश्लेषित किया जाता है, बजाय कुछ रचनाओं को गहराई से पढ़ने के। मोरेत्ती ने इसे साहित्य को समझने का नया तरीका बताया, लेकिन कई आलोचकों ने इसे साहित्यिक संवेदना से कटाव का माध्यम माना। स्वयं मोरेत्ती ने स्वीकार किया कि इस पद्धति में व्यक्तिगत अनुभव और भावनात्मक गहराई पीछे छूट जाती है।

कई अकादमिक अध्ययनों ने दिखाया है कि इस गूगल बुक्स संग्रह में अंग्रेज़ी और यूरोपीय भाषाओं की पुस्तकों का अनुपात अत्यधिक है, जबकि एशियाई और अफ्रीकी भाषाओं की सामग्री बहुत सीमित है। इसका अर्थ यह हुआ कि वैश्विक ज्ञान का डिजिटल स्वरूप भी पश्चिम-केंद्रित बनता जा रहा है। आने वाली पीढ़ियाँ जिस 'डिजिटल इतिहास' को पढ़ेंगी, वह दुनिया की विविधता नहीं, बल्कि एक खास सांस्कृतिक दृष्टिकोण को दर्शाएगा।

2020-21 के दौरान ट्विटर पर लगभग 27 मिलियन ट्वीट्स किसान आंदोलन से जुड़े हुए दर्ज किए गए। नेटवर्क एनालिसिस, सेंटिमेंट स्टडी और ट्रेंड मैपिंग पर आधारित कई डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ शोध हुए। डेटा से यह साबित हुआ कि आंदोलन वैश्विक स्तर पर चर्चा में था। लेकिन यही डेटा यह नहीं दिखा सका कि महीनों सड़कों पर बैठे किसानों पर मानसिक तनाव कितना भारी था, कितने परिवार आर्थिक संकट में गए और कितनों ने अपनों को खोया। डिजिटल विश्लेषण ने आंदोलन का आकार दिखाया, उसकी पीड़ा नहीं।

ओईसीडी की 2022 की रिपोर्ट में भी बताया गया है कि जो छात्र अत्यधिक डिजिटल रीडिंग प्लेटफॉर्म पर निर्भर हैं, उनमें आलोचनात्मक सोच और गहन विश्लेषण क्षमता अपेक्षाकृत कम पाई गई। स्क्रीन पर तेज़ी से स्क्रॉल करने की आदत ध्यान की अवधि घटाती है। डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ के औज़ार छात्रों को तेज़ निष्कर्ष देते हैं, लेकिन सोचने की प्रक्रिया को छोटा कर देते हैं।

वैश्विक स्तर पर देखे तो सीरिया और इराक में कई ऐतिहासिक स्थल नष्ट हो गए। कुछ को डिजिटल स्कैन के ज़रिए संरक्षित किया गया, ताकि भविष्य में उनकी वर्चुअल प्रतिकृति मौजूद रहे। यह तकनीकी उपलब्धि है, लेकिन सवाल यह है कि क्या एक थ्री-डी मॉडल उस सांस्कृतिक स्मृति की भरपाई कर सकता है, जो पीढ़ियों से उन स्थलों से जुड़ी थी? मंदिर, मस्जिद या बाज़ार केवल संरचना नहीं होते, वे सामाजिक जीवन के केंद्र होते हैं।

डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ का मूल संकट यही है कि वह वही देख पाती है, जिसे मापा जा सके। एल्गोरिद्म शब्द गिन सकता है, नेटवर्क बना सकता है, भावनात्मक टोन का अनुमान लगा सकता है, लेकिन वह मौन, भय, उम्मीद और करुणा जैसी मानवीय अवस्थाओं को नहीं समझ सकता। जो चीज़ें डेटा में नहीं बदलतीं, वे ज्ञान के दायरे से बाहर होने लगती हैं। यह स्थिति धीरे-धीरे हमारी सोच को भी प्रभावित कर रही है। हम किसी सामाजिक समस्या को तब बड़ा मानते हैं, जब उसके आँकड़े बड़े हों। हम किसी आंदोलन को तब महत्वपूर्ण समझते हैं, जब वह ट्रेंड करे। हम किसी किताब को तब उपयोगी मानते हैं, जब उसके डेटा पॉइंट्स ज़्यादा हों।

मानविकी का उद्देश्य हमेशा मनुष्य की पीड़ा, उसकी रचनात्मकता, उसकी नैतिक उलझनें को समझना रहा है। यह समझ धीमी होती है, जटिल होती है और अक्सर माप से बाहर होती है। जब हम इसे एल्गोरिद्मिक ढाँचे में ढालने की ज़िद करते हैं, तो हम उसी को काटने लगते हैं, जो सबसे मूल्यवान है।

हालाँकि इसका समाधान तकनीक से दूरी बना लेना नहीं है। डिजिटल आर्काइव्स, टेक्स्ट एनालिसिस और ऑनलाइन संसाधन ज्ञान को फैलाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन उन्हें अंतिम सत्य नहीं बनाना चाहिए। डेटा संकेत दे सकता है, लेकिन अर्थ मनुष्य को गढ़ना होगा। आँकड़ों के साथ कथाएँ, विश्लेषण के साथ संवेदना और तकनीक के साथ नैतिक दृष्टि जोड़नी होगी।

डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ को यह स्वीकार करना होगा कि हर इतिहास स्कैन नहीं हो सकता, हर भावना ग्राफ़ में नहीं उतर सकती और हर संस्कृति एल्गोरिद्म की भाषा नहीं बोलती। डेटा का जंगल हर दिन घना होता जा रहा है। उसमें रोशनी भी है, रास्ते भी हैं, लेकिन भटकने का खतरा भी उतना ही बड़ा है। अगर हम केवल आँकड़ों पर भरोसा करेंगे और मानवीय संवेदना को पीछे छोड़ देंगे, तो हमारे पास सूचना का अंबार होगा, लेकिन समझ का अकाल।

विचार

चैतन्य नागर
लेखक पत्रकार हैं।

पुरानी वीणाओं पर भी बजती हैं सुरीली धुनें

दुनिया हमें सिखाती है कि हमारे होने का अर्थ है लगातार कुछ करते रहना, कुछ न कुछ बनाते-बनाते जाना और लोगों को प्रभावित भी करना। जब देह के पहिये घिसने लगते हैं, तो मन में एक अजीब तरह का शोक उतरने लगता है। मनोवैज्ञानिकों के मुताबिक बुढ़ापे की चिंता अक्सर अपनी स्वायत्तता को खोने से जुड़ी होती है। बचपन में होने वाले भय का एक दिलचस्प और दर्दनाक विलोम है यह। एक बच्चा अंधेरे में खो जाने से डरता है; बुजुर्ग समाज की भीड़ में ओझल हो जाने से। वह अपनों पर ही बोझ बन जाने से डरता है। जिस दुनिया में सिर्फ नवीन, शक्तिशाली और गतिमान को पूजा जाता है, वहां पुराना अक्सर हाशिए पर धकेल दिया जाता है। उम्र का लिहाज पहले हमारी संस्कृति का हिस्सा था, वृद्ध लोगों की इज्जत करना बचपन से ही सिखाया जाता था।

धीरे-धीरे देह की सीढ़ियां चढ़ती है उम्र। आहिस्ता-आहिस्ता दीमक समय कुतरता है हड्डियों को। त्वचा सिकुडती है बगैर किसी शोर-शराबे के। आँखों की रोशनी बुझने लगती है। ऐसा नहीं होता कि अचानक कोई सुबह उठे और देखे कि वह बूढ़ा हो गया है। ऐसी ही है जीवन की सांझ—इसकी आहट किसी कैलेंडर की तारीख से नहीं, बल्कि आईने से झांकते उस खामोश सच से आती है जिसमें हमें अक्सर जेरंटॉफोबिया या बुढ़ापे का डर दिखाई देता है। यह डर वक्त के बीतने का नहीं, जितना कि अपने वजूद के धीरे-धीरे घुलने का है। घबराहट होती है कि व्यक्तिगत पहचान की जिस इमारत को हमने ताकत, सौन्दर्य और उपयोगिता की चट्टान पर बनाया था, वह कहीं भविष्य की धुंधली अनिश्चितता में ढह न जाए।

इस डर की गहराई को समझने के लिए उस ढांचे को देखना चाहिए जो हमने अपने अहंकार की नींव पर बनाया है। दुनिया हमें सिखाती है कि हमारे होने का अर्थ है लगातार कुछ करते रहना, कुछ न कुछ बनाते-बनाते जाना और लोगों को प्रभावित भी करना। जब देह के पहिये घिसने लगते हैं, तो मन में एक अजीब तरह का शोक उतरने लगता है। मनोवैज्ञानिकों के मुताबिक बुढ़ापे की चिंता अक्सर अपनी स्वायत्तता को खोने से जुड़ी होती है। बचपन में होने वाले भय का एक दिलचस्प और दर्दनाक विलोम है यह। एक बच्चा अंधेरे में खो जाने से डरता है; बुजुर्ग समाज की भीड़ में ओझल हो जाने से। वह अपनों पर ही बोझ बन जाने से डरता है। जिस दुनिया में सिर्फ नवीन, शक्तिशाली और गतिमान को पूजा जाता है, वहां पुराना अक्सर हाशिए पर धकेल दिया जाता है। उम्र का लिहाज पहले हमारी संस्कृति का हिस्सा था, वृद्ध लोगों की इज्जत करना बचपन से ही सिखाया जाता था। अब ऐसा नहीं रहा। पश्चिम की संस्कृतियाँ यौवन की तारीफ करते नहीं थकतीअ वृद्ध वहां अनुपयोगी हो जाता है। अर्थव्यवस्था पर एक बोझ और किसी काम के लिए अनुपयुक्त। अक्सर हम झुर्रियों से सिर्फ इसलिए नहीं डरते कि वे खराब दिखती हैं, बल्कि इसलिए कि वे समाज के लिए हमारी अनुपयोगिता का प्रतीक बन जाती हैं।

साहित्य ने हमारे इस डर बखूबी बयान किया है। ऑस्कर वाइल्ड के कालजयी उपन्यास 'द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' को याद करें। डोरियन का डर मौत से ज्यादा बदलाव को लेकर है। वह जानता है कि उसकी ताकत और आकर्षण उसकी शीशे जैसी चिकनी त्वचा में है। उसका लगातार बूढ़ा और बदसूरत होता चित्र इसी बात का प्रतीक है कि हम अपने भीतर के डर को चाहे कितना भी छिपा लें, समय की सुइयां किसी के लिए नहीं रुकतीं। शेक्सपियर के 'किंग लियर' की त्रासदी सिर्फ सत्ता को नहीं, बल्कि उस गरिमा को खोने में है जो उसे समाज में प्रासंगिक बनाए रखती थी।उसकी चीख दरअसल संज्ञानात्मक पतन और स्मृति के धुंधलाने का वह सार्वभौमिक डर है, जो हर इंसान को सताता है। अज्ञेय की कविताओं में बुढ़ापा अक्सर एक खाली घर की तरह आता है। वे लिखते हैं कि उम्र के साथ शब्द साथ छोड़ देते हैं और मनुष्य अपनी ही स्मृतियों के पिंजरे में कैद हो जाता है। कुँवर नारायण बुढ़ापे को एक ऐसी 'किताब' की तरह देखते हैं जिसे अब कोई पढ़ना नहीं चाहता। मुक्तिबोध की कविताओं में बुढ़ापा एक अंधेरे की तरह आता और यह समझौते का पर्याय है, जिससे वे सबसे ज्यादा डरते हैं। मंगलेश डबराल की कविताओं में यह डर 'घर खो जाने' के डर जैसा है।

जहाँ साहित्य हमारे जख्मों को दिखाता है, वहीं धर्मग्रंथ उन पर मरहम लगाते हैं। कई बार वे ढलते शरीर को एक 'टूटते हुए मकान' के रूप में नहीं, बल्कि एक परिपक्व होती 'आत्मा' के रूप में देखते हैं। बाइबिल के 'एक्लेसिएस्टेस' में बुढ़ापे का वर्णन बहुत ही बेबाक और सच्चा है। वहां शरीर को एक ऐसे घर की तरह बताया गया है जिसके खिड़कियां धुंधली हो गई हैं और पहरेदार कांप रहे हैं। लेकिन, इसे दुख की तरह नहीं बल्कि एक 'पवित्र उल्टी गिनती' की तरह पेश किया गया है। ऐसे भी विचार हैं जो हमें शरीर के साथ होने वाले जुड़ाव से शायद मुक्त करते हैं। वृद्ध का दिखना राजकुमार सिद्धार्थ के लिए वैराग्य और नवीन अंतर्दृष्टि का कारण बना। बुढ़ापा उनके लिए 'अनित्यता' या अनिक्क का सन्देश लेकर आता है।

आज का मनोविज्ञान बुढ़ापे के बारे में एक सकारात्मक कहानी भी सुनाता है। जिसे हम 'कमी' समझते हैं, वह अक्सर एक बहुत बड़ी 'उपलब्धि' होती है। जैसे-जैसे लोगों की उम्र बढ़ती है, लोग उन रिश्तों को छोड़ देते हैं जो केवल औपचारिक या दिखावे मात्र के होते हैं। वे अपना समय और ऊर्जा केवल उन लोगों पर खर्च करते हैं जिनसे उन्हें सच्चा प्रेम मिलता है। बुढ़ापे में भले ही सीखने की गति कम हो जाए, लेकिन जीवन भर का संचित अनुभव एक ऐसी बुद्धिमत्ता को जन्म देता है, जो युवाओं के पास नहीं होती। यह समस्याओं को सुलझाने की वह जादुई क्षमता है जो केवल वक्त के साथ आती है। समाजशास्त्री लार्स टॉर्नस्टैम के अनुसार, बुढ़ापे में व्यक्ति भौतिकवादी दुनिया से ऊपर उठकर एक ब्रह्मांडीय नजरिया अपना लेता है। वह अब खुद को केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि इस अनंत ब्रह्मांड का एक हिस्सा मानने लगता है।

देखा जाए तो, बुढ़ापा सिर्फ बंद होते दरवाजों और खिडकियों का नाम नहीं, बल्कि एक नए नजरिए के खुलने का भी संकेत है। यह वह समय है जब हम नायक बनने की होड़ को एक तरफ सरका कर जीवन के द्रष्टा बन जाते हैं। अथर्ववेद की प्रार्थना 'पश्येम शरदः शतम्' (हम सौ शरद ऋतुएं देखें) हमें सिखाती है कि लंबी उम्र एक सजा नहीं, बल्कि एक अवसर है। अगर जीवन एक उपन्यास जैसा है, तो बुढ़ापा उसका अंतिम अध्याय नहीं, बल्कि उसका सार है—वह क्षण जहाँ कहानी के सभी बिखरे हुए तार एक सुंदर पैटर्न में जुड़ जाते हैं। बालों का सफेद होना सिर्फ रोशनी का कम होना नहीं, बल्कि आत्मा का स्वच्छ होना भी है।

बुढ़ापा नए डर लाता है और नए अवसर भी। यह पूरी तरह हम पर निर्भर करता है कि हम चुनते क्या हैं। बुढ़ापा इस बात का सबूत है कि हमने दिन की तपिश को झेला है ताकि सांझ की शीतलता तक पहुँच सकें। भागदौड़ से निकलकर अब हम लहरों की उस लय में भी शामिल हो जाते हैं, जहाँ शांति ही संगीत है। झुर्रियों से भरी देह और क्लांत मन के पास भी शायद इस चयन की ऊर्जा तो बचती ही है। ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ जाएँ तो साँसें तो फूलती हैं, पर पर्वतों का सौन्दर्य अपनी पूरी गरिमा के साथ दिखाई भी देता है। अंग्रेजी कवि एमर्सन कहता था कि सबसे बेहतरीन धुनें उन्ही वायलिन पर बजती हैं जो सबसे पुरानी होती हैं। संगीतकार भले ही इस बात पर बहस करें, पर बुढ़ापे की गरिमा को कायम रखने के लिए तो यह ख्याल तो बढ़िया है!

विक्रमोत्सव 2026

डॉ. हरीशकुमार सिंह

उन्नत तकनीक और आध्यात्म से परिपूर्ण महाभारत के अस्त्र-शस्त्र

महाभारत और रामायण के युद्ध में प्रमुख अंतर युग, उद्देश्य और युद्ध की प्रकृति का रहा है। रामायण त्रेता युग में आज से लगभग नौ लाख वर्ष पूर्व घटित हुई जबकि महाभारत द्वापरयुग में लगभग आज से पांच हजार वर्ष पूर्व हुआ। रामायण का युद्ध भगवान राम और पंडित रावण के बीच सीमित था तो महाभारत में देश के सभी राज्य सम्मिलित थे और यह विश्वयुद्ध ही था। रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम मर्यादा, त्याग और रिश्तों को महत्व देते हैं तो महाभारत में श्रीकृष्ण कूटनीति, अधिकार और ज्ञान को प्रमुखता देते हैं। महाभारत में कुरुक्षेत्र में कौरव और पांडव आमने सामने हैं और दोनों के पक्ष में अपने अपने विश्वसनीय राज्यों के राजा और उनकी सेना हैं। अठारह दिन चले महाभारत के युद्ध में दोनों और कई महारथी हैं जिनसे हम सभी परिचित हैं। मगर इन महारथियों के शस्त्र और अस्त्र महारथियों के नाम की तरह ही अनुपम, अनूठे, अलौकिक और विज्ञान सम्मत हैं और कईयों ने ये शस्त्र और अस्त्र अपने गुरुओं की सेवा कर उन्हें प्रसन्न कर या तपस्या कर महर्षि परशुराम, देवताओं के राजा इंद्र और सूर्यदेव आदि से प्राप्त किये थे। ऐसे ही शस्त्र और अस्त्र से परिचित कराती है उज्जयिनी में चल रहे विक्रमोत्सव के अंतर्गत, विक्रमादित्य शोध पीठ में लगी विशाल और भव्य प्रदर्शनीङ्क महाभारत।

महाभारत प्रदर्शनी में महाभारत के युद्ध में दोनों और के सेनापतियों द्वारा ग्यारह विभिन्न जटिल व्यूह रचनाओं का उपयोग किया गया था और इन व्यूह रचनाओं को प्रतीकात्मकता से बहुत सुन्दरता से प्रदर्शित किया गया है। कौरवों की और से गुरु द्रोणाचार्य ने सबसे कठिन व्यूह रचना चक्रव्यूह निर्मित की थी जिसमें अन्दर जाने का रास्ता तो था मगर बाहर निकलने का नहीं और यह अर्जुन की अनुपस्थिति में उनके पुत्र, अभिमन्यु को फंसाने के लिए थी और युद्ध के दिन अभिमन्यु इसमें फंसकर वीरगति को प्राप्त हुए थे। चक्रव्यूह से हम सभी भलीभांति परिचित हैं मगर युद्ध के अठारह दिनों में भीष्म ने गरुड़ व्यूह, मंडल व्यूह और मकर व्यूह, अर्जुन द्वारा वज्र एवं अर्धचन्द्र व्यूह, पांडवों का क्रोंच व्यूह, गुरु द्रोण द्वारा चक्रशकट व्यूह, कच्छप व्यूह, श्रीन्गातका व्यूह, ओरमी व्यूह, सर्वतोमुखी दंड व्यूह का प्रदर्शन हुबहू किया है क्योंकि ये व्यूह शत्रु की रणनीति को असफल करने के लिए निर्मित किये जाते थे और यह बताते हैं कि महाभारत काल में सेनापतियों का विवेक और चिंतन अत्यंत उन्नत और वैज्ञानिक था। उदहारण के लिए गरुड़ व्यूह, भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ के अनुरूप था जिसमें सेना का अग्रभाग तेज, सुद्रढ़ पार्श्व और विस्तृत पृष्ठभाग। गरुढ व्यूह वेग, प्रतीक और आक्रामक सैन्य कला का प्रतीक है और इन व्यूहों का आधार ज्यामिति भी है। प्रदर्शनी महाभारत में इन व्यूहों की रचना देखना रोमांचित करता है।

इस प्रदर्शनी में अर्जुन का प्रख्यात धनुष गांडीव (जिसे अर्जुन को अग्निदेव द्वारा प्रदान किया गया था), नकुल-सहदेव का आग्नेय धनुष, कर्ण का विजय धनुष, दुर्योधन का शरासन धनुष, युधिष्ठिर का रौद्र धनुष और वैजयंती धनुष, भीष्म का अजगव धनुष, अश्वथामा का कोदण्ड धनुष, घटोत्कच का पौलस्त्य धनुष, शिव जी का पिनाक धनुष, सुतसोम का आग्नेय धनुष, अर्जुन का अक्षय तुणीर (कभी न समाप्त होने वाले बाणों का दिव्या तरकश) आदि प्रतीकात्मक रूप से प्रदर्शित किये गये हैं। भगवान श्रीकृष्ण का धर्म और न्याय का प्रतीक सुदर्शन चक्र भी दिव्यता के साथ यहाँ मौजूद है। भीम और दुर्योधन की गदाएँ, फरसे, तलवार, भाले और वज्र भी प्रदर्शनी में हैं और ऐसे करीब सौ से अधिक अस्त्र- शस्त्र यहाँ हैं। महाभारत में एक और अस्त्र ब्रह्मास्त्र का प्रयोग हुआ था। ब्रह्मास्त्र के अलावा ब्रह्मान्दास्त्र, ब्रह्मिशरास्त्र, अन्जलिकास्त्र, नारायणास्त्र आदि भी दर्शाए गये हैं। चतुरंगिनी सेना के बारे में भी चित्रित और प्रदर्शित किया गया है।

असल में जितने भी युद्ध हुए हैं उनमें सामने वाले को किसी भी तरह मारना-काटना ही युद्ध का प्रमुख उद्देश्य रहा है मगर महाभारत का महायुद्ध सिर्फ दो सेनाओं का भीषण युद्ध नहीं बल्कि उस समय की उन्नत प्रोद्योगिकी, ऋषियों के ज्ञान और योद्धाओं को शस्त्र का वरदान देना, अस्त्र और शस्त्र का मन्त्र की शक्तियों से चलना, महारथियों की विज्ञानपरक समझ से उपजे अस्त्र और शस्त्र का उपयोग था जिसमें रणनीतिक कौशल के लिए शास्त्र सम्मत व्यूह रचना के कारण महाभारत सबको आकर्षित करता है। पांडवों की और से भगवान श्रीकृष्ण ने बिना शस्त्र उठाये, अपने ज्ञान और कूटनीति से पांडवों को विजयी दिलाई। महाभारत के अस्त्र, शस्त्र, शौर्य और विज्ञान का दिव्य संगम है यह प्रदर्शनी महाभारत। अस्त्र और शस्त्र के साथ उनकी महत्ता को प्रदर्शित करते आलेख दर्शकों को सहूलियत प्रदान करते हैं। प्रदर्शनी में पोस्टरों के जरिये महाभारत के अठारह दिन के युद्ध का वर्णन पढ़ना रोमांचित करता है। प्रदर्शनी के शोधकर्ता और क्यूरेटर राज बेंद्रे बताते हैं कि महाभारत शौर्य, विज्ञान और आध्यात्म का संगम था और महाभारत सिर्फ युद्ध नहीं, सभ्यता का आईना भी है। राज बेंद्रे के अनुसार इस प्रदर्शनी के लिए काफी अनुसन्धान किया गया है और प्रदर्शनी का उद्देश्य महभारत को पौराणिक ग्रन्थ के साथ भारत की प्राचीन सैन्य, वैज्ञानिक, और रणनीतिक चेतना का दस्तावेज भी सिद्ध करना है। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की परिकल्पना है विक्रमोत्सव और उनके सांस्कृतिक सलाहकार डॉ. श्रीराम तिवारी के संयोजन में महाभारत प्रदर्शनी अनूठी और अनुपम ज्ञान का सागर है।

जनसुनवाई

जिला मुख्यालय पर जनसुनवाई में 100 आवेदनों को निर्धारित समयावधि में निराकरण के निर्देश

सोहागपुर। जिला मुख्यालय पर मंगलवार को आयोजित जनसुनवाई अपर कलेक्टर अनिल जैन की उपस्थिति में संपन्न हुई। इस अवसर पर नागरिकों ने करीबन 100 आवेदन श्रम, वित्त, राजस्व, अनुकंपा नियुक्ति आदि समस्याओं के लिए सुनवाई के दौरान प्रदान किए थे। अपर कलेक्टर श्री जैन ने प्राप्त आवेदनों पर विचार करते संबंधित विभागों के अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। आवेदनों में नागरिकों की समस्याओं का परीक्षण करके विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे नागरिकों की समस्याओं और मांगों से संबंधित आवेदनो

का समाधान किया गया। जनसुनवाई में पहुंचे ग्राम-दहलवाड़ा तहसील-बनखेड़ी निवासी शिवम राय ने उनके पिता के स्थान पर ग्राम पंचायत सचिव के पद पर अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान करने का आवेदन प्रदान किया था । श्री जैन ने संबंधित अधिकारी को उक्त समस्या के शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए। वहीं डोलारिया निवासी रवि प्रसाद बनवारी ने आवास योजना का लाभ प्रदान करने का आवेदन दिया था।श्री जैन ने मुख्य कार्यालय अधिकारी जनपद डोलारिया को उचित सहायता प्रदान करने के लिए निर्देशित किया। इसी क्रम में कृषि-भूमि सीमांकन, अतिक्रमण की समस्या, नजूल रिकॉर्ड अद्यतन, पट्टा वितरण, अन्य राजस्व संबंधी समस्याओं का निराकरण किया गया।इस अवसर पर अपर कलेक्टर बृजेंद्र रावत, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती डॉ.बबीता राठौर, डिप्टी कलेक्टर नीता कोरी सहित कई अधिकारी उपस्थित थे।

आयु सीमा पूर्ण करने के कारण अपात्र हुई महिलाएं

जनवरी 2026 को 2899 लाड़ली बहना योजना से बाहर

एस द्विवेदी, बैतूल। प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी लाडली बहना योजना का दायरा हर साल सिमटता जा रहा है। जब यह योजना शुरू हुई थी, तब इस योजना में हितग्राहियों की संख्या 2,81,527 दर्ज थी, लेकिन योजना शुरू होने से अब तक करीब 9 हजार लाड़ली बहनें योजना से बाहर हो चुकी हैं। जो महिलाएं योजना से बाहर हुई हैं, उनकी उम्र 60 वर्ष से ऊपर हो गई है। बता दे कि मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने महिलाओं के हित में लाडली बहना योजना शुरू की थी। वर्ष 2023 में लाडली बहना योजना में रजिस्ट्रेशन किए गए थे। इस योजना का लाभ उन महिलाओं को दिया गया, जिनके परिवार की आय 2.50 लाख रुपए से अधिक नहीं है। दूसरे चरण में उन महिलाओं को लाड़ली बहना योजना में जोड़ा गया, जिनके पति के नाम ट्रैक्टर था। जिले में वर्ष 2023 में 2 लाख 81 हजार 527 महिलाएं शामिल हुई थी। लेकिन अब इस योजना में 2 लाख 68 हजार 762 लाड़ली बहने ही रह गई है। इस

योजना की मासिक राशि 1250 रुपए से बढ़ाकर 1500 रुपए प्रतिमाह कर दी गई है। जिससे लाड़ली बहनों को आर्थिक राहत की उम्मीद है।

तीन साल में 9078 महिलाएं योजना से बाहर – वर्तमान में योजना से जुड़ी कुल महिलाओं की संख्या 2 लाख 68 हजार 762 लाड़ली बहने बताई गई है, जबकि सत्यापित हितग्राहियों की संख्या 2,81,527 थी। इस दौरान महिलाओं कई महिलाओं की मृत्यु और अपनी स्वेच्छा से महिलाओं ने इस योजना का परित्याग कर दिया। आधार से समग्र लिंक नहीं होने की वजह से भी महिलाएं अपात्र हो गई। जबकि समग्र से नाम डिलिट होने की वजह से महिलाओं का नाम सूची से हटाया गया। वहीं जनवरी 2027 में 60 वर्ष की आयु पूरी करने से महिलाएं योजना से अपात्र हो गई है। 2025 में 2993 महिलाएं और जनवरी 2024 में 3186 लाड़ली बहनाएं अपात्र हो गई थी। देखा जाए तो हर साल लाड़ली बहनों की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है।

वंचित महिलाएं कर रही योजना शुरू होने का इंतजार

वंचित महिलाएं लाडली बहना योजना का पंजीयन पुनः शुरू होने का इंतजार कर रही है। कई महिलाओं ने योजना शुरू होने की आस में अपने सारे दस्तावेज भी पूर्ण कर रखे है। उन्हें इंतजार है तो प्रदेश सरकार के आदेश का, जिसके बाद वह फार्म भरकर लाड़ली बहना योजना में शामिल हो जायेगी। गौरतलब रहे कि पूर्व में लाडली बहना योजना में आयु की बाध्यता थी। पूर्व में 23 से 59 वर्ष की तक की आयु की विवाहिताओं को ही योजना का लाभ मिल रहा था। इसमें भी कई महिलाएं ऐसी है, जिन्होंने योजना का फॉर्म तो भरा था, लेकिन वह योजना में शामिल नहीं हो पाई वहीं कई दस्तावेजों की कमी सहित अन्य कारणों से योजना में शामिल नहीं हो पाई। ऐसी महिलाएं अब लाडली बहना योजना का पंजीयन पुनः शुरू होने का इंतजार कर रही है, ताकि उन्हें भी लाडली बहना योजना का लाभ मिल सके।

अभी योजना में 2,68,762 महिलाएं शामिल

जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग गौतम अधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री लाडली बहन योजना के तहत बैतूल जिले में 2 लाख 68 हजार 762 लाड़ली बहने शामिल है। इनमें जनपद पंचायत बैतूल की 30194, जनपद पंचायत आमला की 25416, जनपद पंचायत आठनेर 18235, जनपद पंचायत भैंसदेही 21073, जनपद पंचायत भीमपुर 25559, जनपद पंचायत चिचोली 14947, जनपद पंचायत घोड़ाडोंगरी 26869, जनपद पंचायत मुलताई 24380, जनपद पंचायत प्रभात पट्टन 22610, जनपद पंचायत शाहपुर 18190 तथा नगर पालिका बैतूल 14030, नगर पालिका आमला की 3670, नगर पालिका मुलताई 4393, नगर पालिका सारनी 8844, नगर परिषद आठनेर 2099, नगर परिषद बैतूल बाजार 1872, नगर परिषद भैंसदेही 1956, नगर परिषद चिचोली 1710, नगर परिषद घोड़ाडोंगरी की 1408, नगर परिषद शाहपुर की 1307 बहनें शामिल हैं।

तीन साल में अपात्र हुई महिलाओं की संख्या

	वर्ष	अपात्र महिलाएं
जनवरी	2024	3186
जनवरी	2025	2993
जनवरी	2026	2899

इनका कहना है –

60 वर्ष की आयु पूर्ण होने या आकस्मिक मृत्यु होने पर भी बहुत सी महिलाएं योजना से बाहर हो जाती है। इसके अलावा कुछ महिलाएं अन्य योजनाओं का लाभ लेते समय समग्र आईडी के डी लिंक होने से भी योजना से बाहर हो जाती है, परंतु बाद में वापस लिंक होने पर उन्हें पुनः योजना का पूरा-पूरा लाभ मिल जाता है।

– **गौतम अधिकारी,** जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, बैतूल

प्रिंट और डिजिटल मीडिया के प्रतिनिधियों को ब्रह्माकुमारीज़ ने किया सम्मानित

प्रोफेसर गिरीश ने सार्थक संवाद के माध्यम से बताए नकारात्मक वातावरण में भी सकारात्मक रहने के तरीके

बैतूल। ब्रह्माकुमारी संस्थान के स्थानीय सेवाकेंद्र भाग्यविधाता भवन बटामा में आज बधवार को सुबह 10.30 बजे से पत्रकार बंधुओं, प्रिंट और डिजिटल मीडिया के प्रतिनिधियों के लिए 'विशेष संवाद एवं सम्मान समारोह' का आयोजन आध्यात्मिक एवं दिव्य वातावरण में किया गया। कार्यक्रम में जिले के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल मीडिया से जुड़े बडी संख्या में पत्रकार बंधु उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर, कॉरपोरेट ट्रेनर एवं लाइफ कोच मुंबई से पधारे प्रोफेसर ई. वी. गिरीश ने अपने प्रेरक उद्बोधन में पत्रकारिता को समाज का सजग दर्पण बताते हुए सभी को उनके प्रयासों, कार्यों और देश व समाज के प्रति योगदान को सराहा। उन्होंने सभी को आध्यात्मिकता का वास्तविक अर्थ समझाते हुए कहा कि आध्यात्मिकता का मतलब धर्म, जाति, लिंग, आयु की सीमाओं से ऊपर उठकर सबको एक जैसी दृष्टि और समान भाव से देखना और इसे व्यवहार में लाना है। हमें स्वयं को, परिवार और समाज के लिए अच्छा बनना है। आज के बदलते और तनावपूर्ण माहौल में स्वयं को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। यदि आपका मन, आत्मा सशक्त रहेगी तो आप बुरी से बुरी परिस्थितियों का सामना भी अच्छे से कर सकोगे। उन्होंने उपस्थित जनों से आह्वान किया कि वे अपने मन को सकारात्मक दिशा में स्थिर रखते हुए जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाएं। इस अवसर पर बैतूल सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने सभी पत्रकार बंधुओं का स्वागत करते हुए धन्यवाद व्यक्त करते हुए जानकारी दी कि आगामी 27, 28 फरवरी एवं 01 मार्च को तीन दिवसीय विशेष कार्यक्रम 'वाह जिंदगी वाह' का आयोजन किया जाएगा। जो प्रतिदिन सायं 6 से 8 बजे तक ब्रह्माकुमारीज़ भाग्यविधाता भवन बैतूल में आयोजित होगा। उन्होंने सभी से कार्यक्रम में सहभागिता का आग्रह किया है। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ करते हुए

उपस्थित सभी पत्रकारों को तिलक लगाकर सम्मान स्वरूप पटका पहनाकर अभिनंदन किया गया। वहीं इस सम्मान समारोह में पत्रकारिता में पीएचडी करने वाले जिले के पहले पत्रकार डॉ. मयंक भार्गव को प्रोफेसर ईवी गिरीश एवं भाग्य विधाता भवन की प्रभारी मंजू दीदी द्वारा शाल-श्रीफल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी पत्रकार बंधुओं को गिफ्ट दिए गए और ब्रह्माभोज का आयोजन हुआ, जिसमें सभी पत्रकार बंधुओ ने आदर प्रेम के साथ स्वीकार किया।

मुंबई से आए प्रोफेसर ने सिखाए जिंदगी को खुशहाल बनाने के तरीके

ब्रह्माकुमारी संस्थान के भौंरा सेवा केंद्र द्वारा मंगल भवन पंचायत परिसर भौंरा में वाह जिंदगी वाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मुंबई से पधारे प्रोफेसर ईवी गिरीश ने अपने उद्बोधन में सभी को समाज का सजग दर्पण बताते हुए उनके परिवार तथा समाज के लिए किए प्रयासों, कार्यों और

देश तथा समाज प्रति योगदान को सराहा। उन्होंने आध्यात्मिकता का वास्तविक अर्थ समझाते हुए कहा कि आध्यात्मिकता धर्म, जाति, लिंग आयु की सीमाओं से उठकर सबको एक जैसी दृष्टि और समान भाव से देखना और व्यवहार में आना है। यह स्वयं, परिवार और समाज के लिए अच्छा बनना है। आज के बदलते और तनावपूर्ण माहौल में स्वयं को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने उपस्थित जनों से आह्वान किया कि वे अपने मन को सकारात्मक दिशा में स्थिर रखते हुए जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाएं। इस अवसर पर बैतूल सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी मंजू दीदीजी ने सभी को जानकारी दी कि आगामी 27, 28 फरवरी एवं 1 मार्च को तीन दिवसीय विशेष कार्यक्रम वाह जिंदगी वाह का आयोजन किया गया है। जो प्रतिदिन सायं 6 बजे से 8 बजे तक ब्रह्माकुमारीज़ भाग्यविधाता भवन में आयोजित होगा। उन्होंने सभी से कार्यक्रम में सहभागिता का आग्रह किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ करते हुए उपस्थित सभी लोगों को तिलक लगाकर सम्मान स्वरूप पटका पहनाकर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज बैतूल की बीके मंजू दीदी, सारणी से बीके सुनीता दीदी, बीके अर्चना बहन, बीके सुनीता बहन, बीके नंदकिशोर भाई सहित भौंरा के कई वरिष्ठ नागरिक उपस्थित रहे।

लूट की तीन वारदातों का खुलासा, चार नाबालिग गिरफ्तार

बाइक पर घूमकर राहगीरों से लूटपाट करते थे आरोपी

बैतूल। कोतवाली पुलिस ने लूट की तीन अलग-अलग वारदातों का खुलासा करते हुए 4 नाबालिगों को गिरफ्तार किया है। आरोपी मोटरसाइकिल से घूम-घूमकर राह चलते व्यक्तियों से मोबाइल फोन, नकदी एवं वाहन छीनने की घटनाओं को अंजाम दे रहे थे। पुलिस ने आरोपियों से लूट में प्रयुक्त 1 मोटरसाइकिल (एचएफ डीलक्स), 05 मोबाइल फोन एवं नकद राशि बरामद की गई है। गिरफ्तार आरोपियों में से 2 के विरुद्ध पूर्व में हत्या का अपराध पंजीबद्ध होना पाया गया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 20 जनवरी 2026 को अथर्व दुबे की स्प्लेंडर मोटरसाइकिल एवं मोबाइल लक्की ढाबा के पास शाम लगभग 5.16 बजे छीना गया। 30 जनवरी को फुलेसिंह की मोटरसाइकिल, मोबाइल एवं 150 रुपये हाईवे फोरलेन से शाम लगभग 7 बजे लूटे गए। इसी तरह तीसरी घटना 9 फरवरी 2026 को हुई। सुरजू का बैग, जिसमें 5000 रुपये थे, टिगारिया से लापाझिरी मार्ग पर छीना लिये थे। आरोपियों द्वारा बैतूलगंज के भी एक किराना व्यवसायी को लूटने की योजना बनाई थी। पुलिस

ने इन अलग-अलग वारदातों का खुलासा करते हुए 4 नाबालिगों को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि इन आरोपियों ने गंज के एक व्यापारी को भी लूटने की योजना बनाई थी। उक्त कार्रवाई अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी एवं एसडीओपी श्री सुनील लाटा के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। संपूर्ण कार्यवाही में थाना कोतवाली प्रभारी निरीक्षक देवकरण डेहरिया के नेतृत्व में उप निरीक्षक उत्तम मस्तकार, उप निरीक्षक वसंत अहाके, प्रधान आरक्षक शिव उईके, प्रधान आरक्षक तरुण पटेल, आरक्षक अनिरुद्ध यादव, आरक्षक नितिन चौहान, आरक्षक विशाल, आरक्षक दीपेन्द्र सिंह एवं आरक्षक राजेंद्र धाड़से की सराहनीय भूमिका रही।

चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स पर आवश्यक सुधार और मरम्मत के दीर्घ कालिक कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराएं : संभागायुक्त

बैतूल। संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी की अध्यक्षता में बैतूल में संभागीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में पुलिस महानिरीक्षक मिथलेश कुमार शुक्ला, मुख्य वन संरक्षक मधु वी. राज, वन संरक्षक अशोक कुमार, कलेक्टर बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना, कलेक्टर हरदा सिद्धार्थ जैन, पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन, पुलिस अधीक्षक हरदा, पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम, डीएफओ नवीन गर्ग, डीएफओ लक्ष्मीकांत वासनिक सहित बैतूल, हरदा एवं नर्मदापुरम जिलों के जिला पंचायत सीईओ तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में संभागायुक्त श्री तिवारी ने संभाग के तीनों जिलों में राहवीर योजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए, ताकि सड़क दुर्घटनाओं में घायलों को त्वरित सहायता मिल सके तथा जीवन बचाने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहन प्राप्त हो। कैशलेश स्कीम और राहत योजना पर विस्तृत प्रेजेंटेशन भी दिया ज्ञान उन्होंने कलेक्टरों एवं पुलिस अधीक्षकों को निर्देशित किया कि ऐसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों की पहचान कर जोनल प्लान तैयार करें, जहां आपातकालीन वाहनों के आवागमन में बाधा आती है। बैठक में तीनों जिलों में चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स तथा सुधारात्मक कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई। संभागायुक्त ने निर्देश दिए कि ब्लैक स्पॉट्स पर दीर्घकालिक सुधार एवं आवश्यकतानुसार रिमूवल कार्य किया जाए। संबंधित सडक़ निर्माण विभाग आवश्यक प्राक्कलन तैयार कर प्रस्ताव शासन को प्रेषित करें। उन्होंने कहा कि प्रमुख सडक़ों से जुडने वाली गौण सडक़ों के जंक्शनों पर सुरक्षा मानकों के अनुरूप सुधार एवं मरम्मत कार्य किए जाएं। परिवहन विभाग, लोक निर्माण विभाग तथा सडक़ विकास निगम द्वारा सेफ्टी ऑडिट के प्रमुख बिंदुओं पर नियमित समीक्षा कर सडक़ सुरक्षा समिति की बैठकें आयोजित की जाएं। संभागायुक्त श्री तिवारी ने गत वर्ष तीनों जिलों में हुई सडक़ दुर्घटनाओं एवं मृत्यु के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए आवश्यक निर्देश दिए।

पेयजल अंतराल का विवाद नगर पालिका अध्यक्ष के दखल के बाद थमा

पार्षदों के विरोध पर एक दिन के अंतराल से जारी रहेगी पेयजलापूर्ति

आमला। नगर पालिका में जल शाखा द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों और नगर पालिका परिषद की सहमति के बिना वर्तमान में पूरे शहर में एक दिन के अंतराल से की जा रही पेयजलापूर्ति को बदलकर 2 दिन के अंतराल से करने पर और पार्षदों के विरोध के बाद बुधवार को नगर पालिका अध्यक्ष ने पूरे मामले में दखल देकर फिलहाल विवाद का पटाक्षेप कर दिया है।

इस मामले में मीडिया में प्रमुखता से खबर प्रकाशित होने के बाद नगर पालिका आमला के अध्यक्ष नितिन गाडरे ने नगर पालिका पहुंचकर पार्षदों के साथ चर्चा की और जलशाखा के एक तरफा निर्णय पर फिलहाल रोक लगा दी है। जल शाखा के एक तरफा निर्णय का विरोध दर्ज कराने नपा पहुंचे पार्षद अलका मानकर, पद्मिनी भूमरकर, नीलम साहू, खुशबू अतुलकर,सुधीर अंबाडकर और राकेश शर्मा ने नगर पालिका अध्यक्ष को कर्मचारियों की निरंकुशता और बिना परिषद की सहमति के निर्णय लेने पर घोर आपत्ति दर्ज की थी। नगर पालिका में पार्षदो के विरोध के बाद नगर पालिका अध्यक्ष ने जल शाखा के विभाग के एकतरफा निर्णय लेने पर फटकार भी लगाई है। इस मामले में फिलहाल शहर में अध्यक्ष के दखल के बाद एक दिन के अंतराल से पेयजलापूर्ति होती रहेगी, इस दौरान शहर के लोगों ने पार्षदों का आभार भी जताया है।

नगर पालिका अध्यक्ष ने 27 फरवरी को बुलाई परिषद की आपात बैठक

इधर पर जलापूर्ति पर 1 दिन के अंतराल को बढ़ाकर 2 दिन करने पर छिड़े घमासान के बाद मामले की गंभीरता को समझते हुए नगर पालिका अध्यक्ष ने परिषद की 27 फरवरी को आपात बैठक बुलाई है, यहां उपस्थित पार्षदों के आग्रह पर आगामी जल संकट से निपटने के लिए रणनीति बनाई जाएगी। बैठक में शहर के कई स्थलों पर नलकूपों में मोटर लगाने पर भी विचार किया जाएगा, इसके अलावा संभवतः

बैठक के बाद सभी पार्षद शहर के सबसे पुराने और परंपरागत जल स्त्रोत चिकना नाला का भी निरीक्षण करेंगे। माना जा रहा है, कि यहां चिकना नाला को लेकर परिषद कोई बड़ा फैसला भी ले सकती है।

एक दर्जन से ज्यादा नलकूपों का अधिग्रहण करेगी नगर पालिका

आगामी जल संकट से निपटने के लिए नगर पालिका अपने सभी परंपरागत जल स्त्रोतों के अलावा कोई दर्जन भर निजी नलकूपों का भी अधिग्रहण करने जा रही है,इसके लिए नगर पालिका में वरिष्ठ अधिकारियों की सहमति से नलकूपों के अधिग्रहण की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। अगर नगर पालिका चिकना नाला एवं नए नलकूपों का अधिग्रहण करती है तो, शहर में गर्मी के मौसम में भी पेयजल व्यवस्था को बेहतर चलाया जा सकता है। मौके पर नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाडरें ने बताया है कि शहर की जनता की प्राथमिकता और समस्याएं सबसे पहले हैं, हम शहर को बेहतरी की ओर ले जाने के लिए भरसक प्रयास कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में 820 गर्भवती महिलाओं की जांच, 349 हाई रिस्क मिली

बैतूल। गर्भावस्था से संबंधित जटिलताओं का पता लगाने और समय रहते उनका उपचार सुनिश्चित कर सुरक्षित प्रसव करवाने प्रतिमाह 9 एवं 25 तारीख को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का आयोजन किया जाता है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि 25 फरवरी को जिले में आयोजित प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में 820 गर्भवती महिलाओं की जाचं एवं 349 हाई रिस्क चिन्हित तथा 75 महिलाओं की सोनोग्राफी की गई। शिविर में महिलाओं की खून की जांच एवं जीडीएम की जांच की गई। जिला चिकित्सालय बैतूल में आयोजित शिविर में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ. भावना कवडकर द्वारा 58 गर्भवती महिलाओं की चिकित्सकीय जांच की गई, जिसमें 14 गर्भवती महिलाओं को हाई रिस्क के रूप में चिन्हित किया गया। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. वंदना धाकड द्वारा 75 गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी की गई। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अम्बेडकर वार्ड शहरी क्षेत्र बैतूल में चिकित्सा अधिकारी डॉ कृष्णा मौसिक द्वारा 74 गर्भवती महिलाओं की चिकित्सकीय जांच की गई, जिसमें 31 गर्भवती महिलाओं को हाई रिस्क के रूप में

चिन्हित किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र घोडाडोंगरी में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ कविता कोरी द्वारा 60 गर्भवती महिलाओं की जांच जिसमें 35 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ सरिता कालभोर द्वारा 73 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 41 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सेहरा में चिकित्सक अधिकारी डॉ अश्विन सागरे द्वारा 96 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 26 महिलाएं हाई रिस्क पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भैंसदेही में चिकित्सा अधिकारी डॉ सरस्वती कंगाले मरकाम द्वारा 46 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 20 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र शाहपुर में चिकित्सा अधिकारी डॉ नीलम महाजन द्वारा 65 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 20 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभात पट्टन में चिकित्सक अधिकारी डॉ सोनाली द्वारा 47 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 25 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आठनेर में चिकित्सक अधिकारी डॉ माधुरी वहाने द्वारा 76 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 26 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सिविल अस्पताल आमला में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ अशोक नरवरे एवं महिला चिकित्सक डॉ ईवान जेम्स द्वारा 71 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें हाई रिस्क 34 महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भीमपुर में महिला चिकित्सक डॉ तरूणा काकोडिया द्वारा 90 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 46 हाई रिस्क महिलाएं पाई गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ शिवानी इवने द्वारा 64 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें हाई रिस्क 31 महिलाएं पाई गई। शिविर का उद्देश्य गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व स्वास्थ्य संस्था में आवश्यक जांचे, चिकित्सकीय परीक्षण, परामर्श और हाई रिस्क महिलाओं का उचित प्रबंधन कर संस्थागत सुरक्षित प्रसव करवाना है, जिससे मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम किया जा सके।

संक्षिप्त समाचार

आयुष्मान भारत योजना की धीमी प्रगति पर नाराजगी, सभी बीएमओ को अधिक से अधिक कार्ड बनवाने के निर्देश

विदिशा (निप्र)। जिले में आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत आयुष्मान कार्ड बनाने की धीमी प्रगति पर वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा नाराजगी व्यक्त की गई है। इस संबंध में आयोजित समीक्षा बैठक में सभी खंड चिकित्सा अधिकारियों (बीएमओ) को निर्देशित किया गया कि वे अपने अधीनस्थ अमले के माध्यम से अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनवाना सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान अधिकारियों ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना शासन की महत्वाकांक्षी योजना है, जिसके माध्यम से पात्र परिवारों को प्रतिवर्ष निशुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। इसके बावजूद कई क्षेत्रों में अपेक्षित प्रगति नहीं होना चिंता का विषय है। इस पर वरिष्ठ अधिकारियों ने बीएमओ को लक्ष्य के अनुरूप प्रगति लाने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैदानी स्तर पर कार्यरत एएनएम, आशा कार्यकर्ता, स्वास्थ्य कार्यकर्ता एवं अन्य संबंधित कर्मचारियों को सक्रिय करते हुए घर-घर संपर्क कर पात्र हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनाए जाएं। साथ ही जिन क्षेत्रों में प्रगति कम है, वहां विशेष शिविर आयोजित कर कार्य में तेजी लाई जाए। अधिकारियों ने यह भी निर्देश दिए कि आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति की नियमित समीक्षा की जाएगी तथा लापरवाही पाए जाने पर संबंधितों के विरुद्ध कार्रवाई भी की जा सकती है। बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि शासन के निर्देशानुसार अभियान चलाकर पात्र हितग्राहियों को योजना से लाभान्वित किया जाएगा, जिससे जरूरतमंद परिवारों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें।

मातोश्री वृद्धाश्रम में स्वास्थ्य जागरूकता शिविर आयोजित

बैतूल (निप्र)। उड़दन स्थित मातोश्री वृद्धाश्रम में सोमवार 23 फरवरी को स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन कर योग और आयुर्वेद के माध्यम से स्वस्थ जीवन का संदेश दिया गया। शिविर का उद्देश्य आमजन एवं वृद्धजनों को स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना रहा। कार्यक्रम में आयुष विभाग ने सक्रिय भूमिका निभाते हुए कैसे आपका परिवार स्वस्थ रह सकता है विषय पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। शिविर में संतुलित भोजन, स्वच्छ पेयजल, योग और आयुर्वेद के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान पर विस्तार से चर्चा की गई। योग हेतु जिला नोडल अधिकारी डॉ. वीरेंद्र सिंह शाक्य ने उपस्थितजनों को बताया कि नियमित योगाभ्यास से शारीरिक ही नहीं, मानसिक स्वास्थ्य भी सुदृढ़ होता है। इसके बाद योग सहायक भूपेन्द्र द्वारा विभिन्न योगासन और प्राणायाम का व्यावहारिक अभ्यास सत्र आयोजित किया गया, जिसमें वृद्धाश्रम के बुजुर्गों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने आयुर्वेद पद्धति की विस्तृत जानकारी देते हुए दैनिक जीवन में आयुर्वेदिक दिनचर्या, आहार-विहार और घरेलू उपचारों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद अपनाकर अनेक रोगों से बचाव संभव है और दीर्घकालीन स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की गई। शिविर के अंत में उपस्थितजनों को नियमित योग करने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और आयुर्वेदिक सिद्धांतों को दैनिक दिनचर्या में शामिल करने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम ने विशेष रूप से वृद्धजनों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रेलवे-सड़क सहित अन्य अधोसंरचनात्मक कार्यों की नियमित समीक्षा होगी

सीहोर (निप्र)। मध्यप्रदेश में चल रहे रेलवे, सड़क सहित अन्य अधोसंरचना के बड़े प्रोजेक्ट की प्रतिमाह प्रगति की समीक्षा की जाएगी। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन और भारत सरकार के कैबिनेट सचिवालय में सचिव समन्वयक श्री मनोज कुमार गोविल ने सोमवार को मंत्रालय में संयुक्त रूप से पी.एम मॉनिटरिंग ग्रुप की बैठक में केंद्र के महत्वपूर्ण 11 प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समय-सीमा अनुसार परियोजनाओं का क्रियान्वयन करें और पी.एम गति शक्ति पोर्टल पर प्रगति रिपोर्ट से नियमित अवगत कराएं। मुख्य सचिव श्री जैन ने जबलपुर में प्रस्तावित 100 बिस्तरीय ई.एस.आई अस्पताल के लिए शीघ्र ही भूमि आवंटन के लिए आवेदन देने के श्रम विभाग को निर्देश दिए और कहा कि आवेदन प्राप्त होने के दो-तीन माह में भूमि आवंटन की प्रक्रिया पूर्ण कर ली जाए। इस दौरान इंदौर-बुधनी नई रेललाइन, रामगंज मंडी से भोपाल नई रेललाइन परियोजना, सतना-रीवा रेल्वेलाइन के दोहरी करण कार्य, इटारसी-नागपुर तीसरी रेल लाइन, रतलाम-महू-खंडवा अकोला गेज परिवर्तन कार्यों की गहन समीक्षा की गयी। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वे भूमि अधिग्रहण के सभी प्रकरणों के निराकरण और उनमें पारित मुआवजा राशि के वितरण कार्य को समय-सीमा में पूर्ण करें। उन्होंने विभिन्न विभागों के बीच अनुमतियों आदि के लिए लगने वाले समय को न्यूनतम करने के भी निर्देश दिएं।

सीएम हेल्पलाइन पर शिकायतों को नॉन अटेंडेड रखने पर अधिकारियों पर

अधिरोपित की जाए पेनल्टी : कलेक्टर सोनिया मीना

नर्मदापुरम (निप्र)। आयोजित समय सीमा की बैठक के दौरान कलेक्टर द्वारा जिले में संचालित विभिन्न योजनाओं अभियानों तथा अन्य विभागीय कार्यों की विस्तार पूर्वक समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने समय सीमा की बैठक के दौरान समस्त एसडीएम को निर्देशित किया कि नरवाई प्रबंधन के संबंध में ठोस एवं प्रभावी कार्ययोजना तैयार की जाए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि फसल अवशेष जलाने की घटनाओं पर रोक लगाने के लिए आवश्यकतानुसार प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए जाएं तथा संबंधित विभाग समन्वय के साथ कार्य करें।

बैठक में कलेक्टर ने कृषि विभाग, एसडीएम एवं समस्त जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों (सीईओ) को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का आकलन कर नरवाई प्रबंधन के लिए उपयुक्त योजना तैयार करें। उन्होंने कहा कि गेहूं की कटाई के बाद अवशेषों का वैज्ञानिक प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए भूसा तैयार किया जाए तथा उसके सदुपयोग की भी व्यवस्था की जाए। कलेक्टर ने कृषि अभियांत्रिकी विभाग को निर्देश दिए कि नरवाई प्रबंधन में उपयोग होने वाले यंत्रों की सूची उनके धारकों के नाम एवं संपर्क सूत्र सहित तैयार कर पंचायत भवनों, तहसील कार्यालयों एवं अन्य आवश्यक सार्वजनिक स्थानों पर चस्पा की जाए, जिससे किसानों को यंत्रों की उपलब्धता की जानकारी सहज रूप से प्राप्त हो सके। कलेक्टर ने समय सीमा की बैठक के दौरान सीएम हेल्पलाइन पर लंबित शिकायतों की विभागवार विस्तृत समीक्षा की। समीक्षा के दौरान उन्होंने राजस्व,

नगरीय निकाय, सामाजिक न्याय सहित अन्य संबंधित विभागों की प्रगति की जानकारी ली और अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों के निराकरण पर प्रारंभ से ही गंभीरता के साथ ध्यान केंद्रित किया जाए। कलेक्टर ने कहा कि प्राप्त शिकायतों के अनुपात में उनका समयबद्ध एवं संतोषजनक निराकरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने समस्त अधिकारियों को निर्देशित किया कि सीएम हेल्पलाइन के सभी प्रकरणों की नियमित समीक्षा की जाए। बैठक में कलेक्टर ने नॉन-अटेंडेड शिकायतों पर सख्त नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि जिन अधिकारियों द्वारा शिकायतों को नॉन-अटेंडेड रखा गया है, उन्हें नोटिस जारी कर आवश्यकतानुसार पेनल्टी अधिरोपित करने की कार्रवाई की जाए।

कलेक्टर ने समय सीमा की बैठक के दौरान न्यायालय में लंबित अवमानना प्रकरणों की विभागवार समीक्षा की। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी प्रकरणों में निर्धारित समय सीमा का विशेष ध्यान रखते हुए जवाब- दावे समय पर न्यायालय में प्रस्तुत किए जाएं। कलेक्टर ने कहा कि प्रत्येक विभाग यह सुनिश्चित करे कि प्रकरणों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए तथा आवश्यक दस्तावेजों के साथ समय पर जवाब प्रस्तुत किए जाएं। उन्होंने न्यायालय के अवमानना प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि ऐसे मामलों में न्यायालय में प्रस्तुत किए गए जवाब की अनुपालन रिपोर्ट की अद्यतन स्थिति विधि शाखा में अनिवार्य रूप से दर्ज कराई जाए।

कलेक्टर ने फायर एनओसी से संबंधित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि लंबित मामलों में विस्तृत प्रकरण रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। उन्होंने समस्त एसडीएम को निर्देशित किया कि अपने-अपने क्षेत्र में संचालित होटल, रिजॉर्ट एवं अन्य वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों की जांच कर फायर एनओसी तथा अन्य आवश्यक सुरक्षात्मक प्रमाण पत्रों की विधिवत जांच सुनिश्चित करें। किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाए। बैठक में कलेक्टर ने 'संकल्प से समाधान' अभियान की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि जिले के नगरीय क्षेत्रों में नियमित रूप से शिविर आयोजित किए जाएं। उन्होंने कहा कि शिविरों के माध्यम से अधिक से अधिक आवेदन प्राप्त किए जाएं, ताकि आम नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा सके। कलेक्टर ने समस्त एसडीएम को अभियान की नियमित समीक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही यह भी कहा कि अभियान अवधि में आयोजित होने वाले शिविरों में जनप्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए।

इस दौरान उन्होंने निर्देशित किया कि सभी विभागों में कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 के तहत समितियों का गठन किया जाए। गठित समिति द्वारा नियमित रूप से बैठक आयोजित की जाए साथ ही कार्यालय के कर्मचारियों को भी कार्योन्मुख किया जाए। उन्होंने महिला एवं बाल विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि उक्त संबंध में कार्यशाला आयोजित कर सभी विभागों को प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाए। बैठक के दौरान एडीएम श्री राजीव रंजन पांडे अपर कलेक्टर श्री अनिल जैन डिप्टी कलेक्टर डॉ बबीता राठौर, श्रीमती सरोज परिहार, श्रीमती नीता कोरी सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

खंड स्तरीय सीनियर बालक छात्रावास में विद्यार्थियों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा जिले में संचालित सभी छात्रावासी विद्यार्थियों के लिए हर क्षेत्र में विशेष पहल कु जा रही है उनके निर्देशानुसार विद्यार्थियों के स्वास्थ्य संरक्षण एवं नियमित निगरानी के दायित्वों का विशेष तौर पर मानीटरिंग की जा रही है। छात्रावासी विद्यार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण उद्देश्य से खंड स्तरीय सीनियर बालक छात्रावास नटेरन में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्रावास में निवासरत सभी विद्यार्थियों का चिकित्सकीय दल द्वारा विस्तृत स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल स्टाफ द्वारा विद्यार्थियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए उनकी ऊँचाई, वजन, हीमोग्लोबिन, आँख, त्वचा एवं अन्य सामान्य बीमारियों की जांच की गई। परीक्षण के दौरान कुछ विद्यार्थियों में सामान्य स्वास्थ्य समस्याएं पाई गई, जिन्हें आवश्यक परामर्श एवं उपचार उपलब्ध कराया गया। साथ ही गंभीर समस्या वाले विद्यार्थियों को आगे की जांच हेतु संबंधित स्वास्थ्य केंद्र में रेफर करने की सलाह दी गई। इस अवसर पर चिकित्सकों ने विद्यार्थियों को स्वच्छता, संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या एवं मौसमी बीमारियों से बचाव के संबंध में जानकारी दी।

कृषि रथ जिले के 4,656 ग्रामों में पहुंचकर 17,469 किसानों को किया लाभान्वित

विदिशा (निप्र)। किसानों को आधुनिक खेती, प्राकृतिक कृषि तकनीकों एवं शासन की योजनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से कृषि विभाग द्वारा जिले में 20 जनवरी से 19 फरवरी तक कृषि रथ अभियान संचालित किया गया। इस अभियान के तहत जिले के सभी विकासखंडों में व्यापक स्तर पर गतिविधियां आयोजित कर किसानों को जागरूक किया गया।

अभियान के दौरान जिले में कुल 462 शिविर आयोजित किए गए, जिनके माध्यम से 4,656 ग्रामों तक कृषि रथ पहुंचा। इन शिविरों में 17,469 किसानों ने सहभागिता कर उन्नत कृषि तकनीकों एवं योजनाओं की जानकारी प्राप्त की। अभियान में 122 कृषि वैज्ञानिकों ने उपस्थित होकर किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने, उत्पादन बढ़ाने एवं लागत कम करने के उपाय बताए।

विकासखंडवार प्रगति के अनुसार विदिशा विकासखंड में 66 शिविरों के माध्यम से 780 ग्रामों के 2,608 किसानों को लाभान्वित किया गया। बासौदा में 733 ग्रामों के 2,530, कुरवाई में 739 ग्रामों के 2,454, सिरोंज में 610 ग्रामों के 2,459, ग्यारसपुर में 473 ग्रामों के 2,350, नटेरन में 765 ग्रामों के 2,551 तथा लटेरी में 556 ग्रामों के 2,517 किसानों ने अभियान में भाग लिया।

अभियान के अंतर्गत प्राकृतिक खेती को बढ़ावा

देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। जिले में 1,231 हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया गया। इसके साथ ही 1,004 किसानों द्वारा नरवाई जलाने के बजाय उसका वैज्ञानिक प्रबंधन किया गया तथा 17,400 किसानों को रबी फसल के संबंध में जागरूक किया गया।

इसके अलावा 3,016 किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों की जानकारी दी गई तथा 1,570 किसानों के खेतों में जैविक खाद एवं जीवामृत के उपयोग को बढ़ावा दिया गया। 3,512 हेक्टेयर क्षेत्र में फसल विविधीकरण किया गया तथा 6,914 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए।

कृषि रथ अभियान के दौरान विभिन्न शासकीय योजनाओं के लिए भी आवेदन प्राप्त किए गए। इनमें आयुष्मान कार्ड के लिए 190, किसान क्रेडिट कार्ड के लिए 213, पीएम किसान योजना के लिए 423 तथा फार्म आईडी एवं ई-केवाईसी के लिए 160 आवेदन प्राप्त हुए। कुल 986 किसानों ने विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवेदन किया।

कृषि विभाग के उप संचालक श्री केएस खपेडिया ने बताया कि कृषि रथ अभियान का मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक खेती की तकनीकों से जोड़ना, उत्पादन बढ़ाना एवं उन्हें शासन की योजनाओं से लाभान्वित करना है। इस अभियान से किसानों में जागरूकता बढ़ी है और उन्हें खेती में नई तकनीकों को अपनाने की प्रेरणा मिली है।

ग्रीष्म ऋतु के लिए कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने प्रभावी पेयजल कार्य योजना बनाने के दिए निर्देश

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने समय-सीमा बैठक में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को लक्ष्य अनुरूप प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की समीक्षा कर निर्धारित लक्ष्य हासिल करने पर जोर दिया तथा प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना में प्रगति लाने के लिए श्रम पदाधिकारी एवं सभी जनपद सीईओ को निर्देश दिए। प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना के अंतर्गत बैंक स्तर पर लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण करने को कहा।

राजस्व वसूली की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने राजस्व, खनिज, परिवहन और पंजीयन विभागों को निर्धारित लक्ष्यों की शत-प्रतिशत उपलब्धि सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की नल-जल योजनाओं की समीक्षा में

उन्होंने निर्देशित किया कि सभी एकल ग्राम नल-जल योजनाओं को शीघ्र 'हर घर जल 'घोषित करने की कार्रवाई पूर्ण की जाए। उन्होंने जनपद सीईओ एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को ग्रीष्म ऋतु को ध्यान में रखते हुए ग्रामवार पेयजल प्रबंधन की प्रभावी कार्ययोजना तैयार कर निर्बाध जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

संकल्प से समाधान अभियान की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने कहा कि शिविरों में प्राप्त आवेदनों का प्राथमिकता से निराकरण किया जाए ताकि नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान हो सके। बैठक में फायर स्टेशन हेतु भूमि आवंटन, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना की तिथियों का निर्धारण, किसानों के फॉर्मर आईडी का शत-प्रतिशत निर्माण, आधार नामांकन, फसल सांख्यिकीय संकलन सहित अन्य समसामयिक विषयों की भी समीक्षा की गई। कलेक्टर ने सभी विभागों को निर्देशित किया कि योजनाओं के लक्ष्यों को समय पर पूरा करें तथा प्राप्त वित्तीय आवंटन का सदुपयोग सुनिश्चित करें। लापरवाही से आवंटन लैप्स होने पर संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन से बदली बलराम सिंह गुर्जर की किस्मत

पशुपालन व्यवसाय से प्रतिमाह 25 से 30 हजार रुपये की आय, क्षेत्र के लिए बने प्रेरणास्रोत

नर्मदापुरम (निप्र)। सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से जिले के ग्रामीण अंचलों में आत्मनिर्भरता और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। इस बात को यथार्थ करती कहानी है विकासखंड बनखेड़ी के ग्राम रिछेड़ा निवासी श्री बलराम सिंह गुर्जर पिता श्री हज्जी गुर्जर जिन्हे राष्ट्रीय पशुधन मिशन एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना (पशुपालन) के अंतर्गत वर्ष 2008-09 में लाभार्थी के रूप में पंजीकृत किया गया। योजना से जुड़ने के बाद उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है और आज वे आत्मनिर्भर पशुपालक के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं।

कमज़ोर आर्थिक पृष्टभूमि से आने वाले श्री गुर्जर प्रारंभ में अन्य किसानों से दूध खरीदकर उसका विक्रय कर अपनी आजीविका चलाते थे। लगभग 15-20 वर्ष पूर्व विभागीय अधिकारियों एवं मित्रों के मार्गदर्शन में उन्होंने स्वयं पशुपालन व्यवसाय प्रारंभ करने का निर्णय लिया। उन्होंने 01 भैंस एवं 01 मुर्रा पाड़ा से अपने व्यवसाय की शुरुआत की। भैंस के दूध तथा मुर्रा पाड़ा की सर्विस से उन्हें नियमित आय होने लगी, जिससे उन्होंने धीरे-धीरे अन्य पशुओं की खरीद की।

व्यवसाय के दौरान परिवार पर कठिन समय भी आया। माता की गंभीर बीमारी के कारण उन्हें कुछ पशु बेचने पड़े, किंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। परिवार की महिलाओं एवं अन्य सदस्यों ने भी पशुपालन कार्य में सक्रिय सहयोग दिया। वर्तमान में उनके पास 05 भैंस एवं 06 गाय हैं, जिनसे प्रतिदिन लगभग 70 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। इससे उन्हें प्रतिमाह लगभग 25 हजार से 30 हजार रुपये की आय प्राप्त हो रही है।

कृषि योग्य भूमि एवं घर में पर्याप्त स्थान न होने के कारण वे समय-समय पर पशुओं का विक्रय कर अतिरिक्त आय भी अर्जित करते हैं। आज उनका पूरा परिवार इसी व्यवसाय पर निर्भर है। योजना से जुड़ने के पूर्व उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर थी तथा आय का एकमात्र साधन अन्य किसानों से दूध खरीदकर बेचना था।

जनगणना का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण, गंभीरता से प्रशिक्षण प्राप्त करें अधिकारी, कर्मचारी - कलेक्टर

सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सभाकक्ष में आयोजित टीएल बैठक के दौरान कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने निष्पक्ष, पारदर्शी एवं पूर्ण निष्ठा के साथ मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य को संपन्न कराने पर सभी संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सभी ने टीम भावना के साथ कार्य करते हुए निर्धारित समयसीमा में अपने दायित्वों का सफल निर्वहन किया है। कलेक्टर ने मतदाता सूची के कार्य को लोकतांत्रिक प्रक्रिया की आधारशिला बताया। साथ ही उन्होंने रूद्राक्ष महोत्सव के सफल आयोजन के लिए भी समस्त विभागीय अमले को बधाई दी। उन्होंने कहा कि आयोजन के दौरान बेहतर समन्वय एवं व्यवस्थाओं के कारण कार्यक्रम सफल रहा।

बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने जनगणना के संबंध में निर्देश देते हुए कहा कि जनगणना का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदारीपूर्ण दायित्व है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को गंभीरता से प्रशिक्षण प्राप्त करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि प्रशिक्षण में दी गई सभी जानकारियों को भली-भांति समझकर कार्य करें। उन्होंने जनगणना कार्य को पूरी निष्ठा, सटीकता एवं समयबद्ध तरीके से संपादित करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने बैठक में नेशनल हाइवे एवं रेल परियोजनाओं के लिए भू-अर्जन कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों में विलंब न हो, इसके लिए संबंधित अधिकारी समय सीमा में कार्रवाई सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में संपरिवर्तित करने की प्रक्रिया को गति देने तथा वनाधिकार दावों की नियमित समीक्षा करने के भी निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने गिरदावरी कार्य में सरसों के साथ-साथ उद्यानिकी फसलों को भी शामिल करने के निर्देश दिए, ताकि वास्तविक उत्पादन का सही आकलन हो सके। उन्होंने गेहूं उपार्जन के लिए प्रतिदिन अधिक से अधिक किसानों का पंजीयन कराने तथा प्रगति की सतत मॉनिटरिंग करने को कहा। साथ ही उन्होंने ई-टोकन व्यवस्था के माध्यम से खाद वितरण

सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए, ताकि किसानों को निर्धारित समय पर उर्वरक उपलब्ध हो सके और अनियमितताओं पर रोक लगाई जा सके। बैठक में अपर कलेक्टर श्री वृंदावन सिंह, संयुक्त कलेक्टर सुश्री वंदना राजपूत, श्री जमील खान, श्री रविंद्र परमार, एसडीएम श्री नितिन टाले, श्री तन्मय वर्मा, श्रीमती स्वाति मिश्रा, डिप्टी कलेक्टर श्री प्रेम सिंह गौंड़ सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित थे।

नरवाई जलाने पर सख्ती बरतने और किसानों को जागरूक करने के निर्देश : बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने जिले में नरवाई जलाने की घटनाओं पर सख्ती से रोक लगानें के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि नरवाई जलाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, भूमि की उर्वरता प्रभावित होती है तथा आमजन के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। कलेक्टर ने राजस्व, कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों को संयुक्त रूप से निगरानी रखने तथा ऐसे मामलों में तत्काल दंडात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसानों को जागरूक करना भी आवश्यक है। कृषि एवं संबंधित विभागों द्वारा पंचायतों में बैठकों एवं प्रचार-प्रसार के माध्यम से नरवाई प्रबंधन के वैकल्पिक उपायों की जानकारी दी जाए, ताकि किसान पर्यावरण संरक्षण में सहभागी बन सकें।

संकल्प से समाधान अभियान के प्रभावी संचालन के निर्देश, अभी तक 64802 प्रकरणों का निराकरण : बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि संकल्प से समाधान अभियान के अंतर्गत अधिक से अधिक हितग्राहियों को लाभान्वित किया जाये। उन्होंने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुंचाना है, इसलिए अभियान को परिणाममुखी बनाया जाए। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि क्लस्टर लेवल पर आयोजित किए जाने वाले शिविर सुव्यवस्थित एवं प्रभावी हों। शिविरों में प्राप्त आवेदनों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित किया जाए तथा समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहें। उन्होंने यह भी कहा कि शिविरों में स्थानीय जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाए, ताकि जनसहभागिता बढ़े और आमजन की समस्याओं का समाधान पारदर्शिता के साथ हो सके। बैठक में जानकारी दी गई कि अभियान के तहत अभी तक 69837 आवेदन प्राप्त हुए जिसमें 64802 प्रकरणों का निराकरण किया जा चुका है।

प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन योजना में अधिक से अधिक पंजीयन के निर्देश : कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना के अंतर्गत अधिक से अधिक असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों का पंजीयन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि योजना का उद्देश्य श्रमिकों को वृद्धावस्था में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है, इसलिए पात्र हितग्राहियों तक योजना की जानकारी प्रभावी रूप से पहुंचाई जाए। कलेक्टर ने ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में विशेष कैंप आयोजित कर पंजीयन अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि पंजीयन कार्य की नियमित मॉनिटरिंग करें तथा प्रगति की साप्ताहिक समीक्षा करें। लक्ष्य के अनुरूप उपलब्धि नहीं होने पर जिम्मेदारी तय की जाएगी।

वरिष्ठ कथाकार मृदुला गर्ग, अलका सरावगी सहित सात रचनाकार सम्मानित

भोपाल। सुप्रतिष्ठित कथाकार, शिक्षाविद् तथा विचारक जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली जी' के रचनात्मक योगदान और स्मृति को समर्पित संस्थान 'वनमाली सृजन पीठ' के प्रतिष्ठा आयोजन राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह-2026 का भव्य शुभारंभ स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय, भोपाल के मुक्ताकाश मंच पर सुप्रसिद्ध लोकगायक पद्मश्री प्रहलाद सिंह टिपाणिया के कबीर गायन से हुआ।

यह सम्मान समारोह ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ उड़िया कथाकार प्रतिभा राय के मुख्य आतिथ्य में हुआ।

सम्मान समारोह में 'वनमाली कथाशीर्ष सम्मान' से वरिष्ठ रचनाकार मृदुला गर्ग को एवं 'राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान' से वरिष्ठ कथाकार अलका सरावगी को सम्मानित किया गयाद्य दोनो को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं एक-एक लाख रुपये की सम्मान राशि प्रदान कर अलंकृत किया 'वनमाली कथा आलोचना सम्मान' महेश दर्पण को, 'वनमाली कथा मध्यप्रदेश सम्मान' वरिष्ठ कथाकार उर्मिला शिरीष (भोपाल) को, 'वनमाली युवा कथा सम्मान' युवा कथाकार कुणाल सिंह को, वनमाली कथेतर सम्मान' अयोध्या के यतीन्द्र मिश्र को प्रदान किये गए। साहित्य के क्षेत्र में डिजिटल माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान के लिए पहला वनमाली डिजिटल साहित्य अवदान सम्मान अंजूम शर्मा को प्रदान किया गया। इन सभी सम्मानित रचनाकारों को शॉल-श्रीफल प्रशस्ति पत्र एवं इक्यावन-इक्यावन हजार रुपये की सम्मान राशि प्रदान कर अलंकृत किया।

वनमाली सृजन पीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ कवि कथाकार श्री संतोष चौबे ने सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि 'विश्व रंग' के अंतर्गत वनमाली सृजन पीठ द्वारा प्रदान किए गये 'वनमाली कथा सम्मान' समकालीन कथा परिदृश्य में लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों की तलाश में जुटे कथा साहित्य की पुनः प्रतिष्ठा करने एवं उसे समुचित सम्मान प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित द्विवार्षिक पुरस्कार है।

इस अवसर पर वरिष्ठ लेखिका एवं इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए की कार्यकारी संपादक डॉ. विनीता चौबे, वरिष्ठ कथाकार एवं वनमाली सृजन पीठ, भोपाल के अध्यक्ष मुकेश वर्मा, एस.जी.एस.यू. के कुलगुरु डॉ. विजय सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पत्रिका 'वनमाली कथा' के न फरवरी अंक और वनमाली सृजन पीठ के मुखपत्र वनमाली वार्ता का लोकार्पण किया गया।

साथ ही वनमाली जी के कृतित्व और व्यक्तित्व पर केंद्रित और वनमाली सम्मान समारोह पर केंद्रित लघु फिल्म तथा विश्व रंग के सात वैश्विक आयोजनों पर केंद्रित फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया।

समारोह का संचालन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र के निदेशक विनय उपाध्याय ने किया। सम्मानित रचनाकारों की प्रशस्ति का वाचन डॉ. संगीता पाठक ने किया गया। आभार डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, कुलाधिपति, स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय, भोपाल ने व्यक्त किया। अतिथियों का स्वागत डॉ. नितिन वत्स, डॉ. संगीता जौहरी, डॉ. सितेश सिन्हा, संजय सिंह राठौर ने किया। समारोह का संयोजन वनमाली सृजन पीठ की राष्ट्रीय संयोजक ज्योति रघुवंशी ने किया ।

इस अवसर पर बरकतउल्ला विश्वविद्यालय किया कुलगुरु डॉ. जैन, आर.एन.टी.यू. के कुलगुरु डॉ. आथ.पी. दुबे, वरिष्ठ रचनाकार शशांक, लीलाधर मंडलोई, बलराम गुमास्ता, राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, रामकुमार तिवारी, सविता भार्गव, डॉ. रेखा कस्तवार, डॉ. जवाहर कर्नावट, संजय शेफर्ड, अरुणेश शुक्ल, मोहन सगोरिया, कैलाश मांडलेकर, नीलेश रघुवंशी, निरंजन श्रोत्रिय, घनश्याम मैथिल, सुरेश पटवा, देवीलाल पाटीदार, करुणा राजुरकर, वामनराव, सुदर्शन सोनी आदि सहित सैकड़ों की संख्या में युवा साहित्यप्रेमियों, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराई।

उज्जैन में शंकराचार्य मठ की तीन मंजिला बिल्डिंग पर चला बुलडोजर

सिंहस्थ 2028 से पहले अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई, धर्मशालाएं भी तोड़ी जा रही

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में सिंहस्थ 2028 की तैयारियों के तहत नगर निगम ने बुधवार को अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू की। निगम अमले ने पुलिस बल के साथ नृसिंह घाट से लालपुल ब्रिज मार्ग तक 2016 के बाद बने पक्के निर्माणों को हटाया। यह कार्रवाई जोन क्रमांक 03 क्षेत्र में की गई।

प्रशासन ने बताया कि सिंहस्थ मेले के लिए साधु-संतों के डेरों, टेंट और श्रद्धालुओं की पार्किंग के लिए जगह खाली कराई जा रही है।

आश्रम और धर्मशाला के निर्माण भी हटाए गए

कार्रवाई के दौरान नर्मदा घाट क्षेत्र स्थित शंकराचार्य मठ में पुण्यानंद गिरी महाराज के आश्रम में भी कार्रवाई की गई। यहां 54 कमरों वाला तीन मंजिला भवन बनाया गया था, जिसमें एसी और नॉन-एसी कमरे थे। इस भवन में अवैध रूप से होटल संचालित किया जा रहा था।

प्रशासन के अनुसार तीन मंजिला होटल करीब 10 हजार से 15 हजार वर्गफुट क्षेत्र में बनाया गया था। नगर निगम की टीम ने इसे ध्वस्त करने की कार्रवाई शुरू की।

इधर, नरसिंह घाट रोड पर करीब 60X80 फीट के माधवानंद आश्रम और लगभग 80-150 फीट क्षेत्र में बनी कलोता समाज की धर्मशाला को हटाया गया। इसके अलावा बागली समाज और अन्य स्थानों पर भी अतिक्रमण हटाया जा रहा है।

सिंहस्थ क्षेत्र में स्थायी निर्माण की अनुमति नहीं- नगर निगम आयुक्त अभिलाष मिश्रा ने कहा कि सिंहस्थ क्षेत्र में 2016 के बाद बने सभी स्थायी निर्माण चिन्हित किए गए हैं। इस क्षेत्र में स्थायी निर्माण की अनुमति नहीं है और सभी अवैध ढांचे हटाए जाएंगे।

अपर आयुक्त संतोष टैगोर ने बताया कि जिला प्रशासन से मिली सूची में अवैध निर्माणों की जानकारी थी। सिंहस्थ मेले में व्यवस्था बनाए रखने के लिए इन निर्माणों को हटाया जा रहा है। सिंहस्थ क्षेत्र करीब 180 हेक्टेयर में फैला हुआ है।

महिला ने किया प्रेमी का मर्डर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बीएचईएल स्पोर्ट्स क्लब के नजदीक युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। हत्या की साजिश मृतक की प्रेमिका ने अपने एक साथी के साथ मिलकर रची थी। आरोपी महिला का कहना है कि युवक से उसके अनैतिक संबंध थे। वह उसके साथ मारपीट करता था और अभद्र व्यवहार करता था। इससे परेशान होकर उसने वारदात को अंजाम दिया। 25 फरवरी को एसीपी अदिति भावसार ने बताया कि 21 फरवरी को युवक का शव बरामद हुआ था। मृतक की पहचान ताराचंद पटेल पिता पुरुषोत्तम सिंह पटेल (46) निवासी फेज-1, शीतल टाउन, मंडीदीप के रूप में हुई।

परिजनों ने बताए अवैध संबंध- परिजनों ने पूछताछ में बताया कि ताराचंद पटेल के जहांगीराबाद-बरखेड़ी निवासी रानी अहिरवार से पिछले डेढ़ साल से अवैध संबंध थे। रानी को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई।

बीहर रिवर फ्रंट शेष कार्य को शीघ्र पूर्ण करें : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में रीवा शहर में पुनर्घनत्वीकरण योजना की प्रगति एवं आगामी कार्ययोजना की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने विभिन्न विकास योजनाओं, अधोसंरचना उन्नयन तथा सौंदर्यीकरण कार्यों पर विस्तार से चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विशेष रूप से बीहर नदी के रिवर फ्रंट विकास कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि नदी के पूर्वी तट का सौंदर्यीकरण कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि पश्चिमी तट का कार्य शेष है। उन्होंने पश्चिमी तट पर शेष रिवर फ्रंट कार्य को प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बीहर नदी के दोनों तटों का समग्र विकास होने से रीवा शहर को विशिष्ट पहचान मिलेगी तथा नागरिकों को बेहतर सार्वजनिक स्थल उपलब्ध होंगे। इसके साथ ही पुनर्घनत्वीकरण योजना अंतर्गत अन्य प्रस्तावित कार्यों को भी समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में परियोजनाओं के क्रियान्वयन की गति बढ़ाने, आवश्यक प्रशासनिक एवं तकनीकी स्वीकृतियों को शीघ्र पूर्ण करने तथा समन्वय के साथ कार्य करने पर बल दिया गया। उन्होंने केंद्रीय जेल रीवा में पुनर्घनत्वीकरण योजना के कार्यों की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में मध्यप्रदेश गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल के आयुक्त श्री गौतम सिंह सहित संबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

बड़ा तालाब-कैचमेंट एरिया में 10 साल में सैकड़ों नए निर्माण

भोपाल सांसद- कलेक्टर की फटकार के बाद फिर कार्रवाई, टास्क फोर्स रखेगी नजर

भोपाल (नप्र)। भोपाल की लाइफ लाइन बड़ा तालाब अतिक्रमण की जकड़ में है। पिछले 10 साल में बड़ा तालाब के कैचमेंट एरिया में ही सैकड़ों पक्के निर्माण बन गए। कुछ तो मुनारों से ही सटकर बने हैं। दूसरी ओर, भदभदा की 350 से ज्यादा झुग्गियां ही हटाई जा सकी हैं। इसे लेकर जिला प्रशासन और नगर निगम को एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्राइबल) कई बार फटकार भी लगा चुका है।

हाल ही में सांसद आलोक शर्मा ने अफसरों की बैठक भी ली थी और बड़ा तालाब के अतिक्रमण को लेकर जमकर फटकार लगाई थी। इसके बाद जिला प्रशासन एक्टिव हुआ है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने जिला स्तरीय टास्क फोर्स भी बनाई है, जो कार्रवाई पर नजर रखेगी। ऐसे में प्रशासन जल्द ही बड़े स्तर पर कार्रवाई कर सकता है। बुधवार को जिम्मेदार एसडीएम-तहसीलदारों के बीच कार्रवाई को लेकर चर्चा भी हुई। अब तक 3 बार सर्वे, ठोस कार्रवाई नहीं बता दें कि बड़ा तालाब का बीते दस साल में 3 बार सर्वे हो चुका है। इनमें बड़ी संख्या में अतिक्रमण सामने आए, लेकिन सर्वे रिपोर्ट का आज तक पता नहीं है। इस वजह से बैरागढ़, खानूगांव, सूरज नगर, गौरागांव, बिसनखेड़ी समेत कई जगहों पर अतिक्रमण हुए। कई मैरिज गार्डन, फार्म हाउस, स्कूल-कॉलेज, घरों की सीमाएं बड़ा तालाब में हैं। सांसद आलोक शर्मा ने दो दिन पहले ही अफसरों की बैठक लेकर बड़ा तालाब के अतिक्रमण को लेकर आपत्ति दर्ज कराई थी।

50 मीटर के दायरे में ढेरों अतिक्रमण

एक्सपर्ट राशिद नूर की मानें तो शहरी सीमा में 50 मीटर और ग्रामीण सीमा में 250 मीटर के दायरे में कोई निर्माण नहीं होना चाहिए, लेकिन एफटीएल मुनार से सटकर ही पक्के निर्माण बन गए हैं। ऐसे 1 या 2 नहीं, बल्कि सैकड़ों निर्माण हैं। भदभदा, बिसनखेड़ी, गौरागांव, बील गांव और सूरजनगर में बड़ी बिल्डिंग, फार्म हाउस, रिसॉर्ट भी देखने को मिल सकते हैं। हैरत की बात ये है कि बड़ा तालाब रामसर साइट भी है। बावजूद सालों से सिर्फ फाइलों में ही कब्जे हटे हैं। सूरजनगर में तो जिस जगह पर रामसर साइट है और नगर निगम की मुनार लगी है। ठीक उससे जुड़ी बिल्डिंग की बाउंड्रीवॉल है। यही पर नगर निगम की सीवेज लाइन भी बिछाई गई है। मुनार के पास सड़क भी भरी गई है, जो नियम के विरुद्ध है। दूसरी ओर गौरागांव से बील गांव की तरफ सड़क भी तालाब के बीच से ही गुजरी है।

मुनारों में भी फर्जीवाड़ा...दो तरह की मुनारे मिले

बड़ा तालाब के किनारों पर भू-माफिया सक्रिय हैं, जो कम दाम पर प्लाट देने का वादा कर रहे हैं। उन्होंने और लोगों ने इस दायरे को लेकर ही भ्रम की स्थिति भी खड़ी की है।

जिन मुनारों से एफटीएल की सीमा तय होती है, उन्हीं में फर्जीवाड़ा किया गया है। मौके पर एफटीएल बताने वाली 5 तरह की मुनारे लगे हुए मिले हैं। इनमें से एक में बीएमसी यानी, भोपाल म्युनसिपल कॉर्पोरेशन लिखा है। बाकी पर सफेद रंग है। लिखा कुछ नहीं है। इन्हीं फर्जी मुनारों के आसपास अतिक्रमण और अवैध निर्माण है।

जायका टीम ने किया भोपाल में एमपी ट्रांसको की ट्रांसमिशन लाइन एवं महावड़िया सब स्टेशन का सूक्ष्म मूल्यांकन

- सब स्टेशन बनने से हुए लाभ के संबंध में स्थानीय व्यापारियों से किया वार्तालाप

भोपाल (नप्र)। जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (जायका) द्वारा मध्यप्रदेश के ट्रांसमिशन नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण के लिये मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) में संचालित जायका-2 वित्त पोषित विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत भोपाल में हुए कार्यों का विस्तृत निरीक्षण कर उनका सूक्ष्म मूल्यांकन किया गया। जायका जापान की इवैल्यूएटर सुश्री हिसाए ताकाहाशी एवं जायका के भारतीय प्रतिनिधि श्री कुनाल गुप्ता ने निर्माण कार्यों, उनकी गुणवत्ता, उपयोगिता तथा अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप क्रियान्वयन की बारीकी से जांच-पड़ताल की।

महावड़िया सब स्टेशन एवं लाइन का किया निरीक्षण- निरीक्षण के दौरान टीम ने सर्वप्रथम 132 केवी सब स्टेशन महावड़िया तथा इसके लिए निर्मित 132 केवी महावड़िया-मुगलियाछाप डबल सर्किट ट्रांसमिशन लाइन का निरीक्षण कर सूक्ष्म मूल्यांकन किया। इवैल्यूएटर सुश्री ताकाहाशी ने लोन स्वीकृति के समय प्रस्तुत प्रारंभिक योजना, परियोजना के क्रियान्वयन, स्थापित उपकरणों की गुणवत्ता, लागत एवं रखरखाव से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

सब स्टेशन के संचालन-संधारण की जानकारी प्राप्त

जायका टीम ने सब स्टेशन के संचालन एवं संधारण कार्यों की जानकारी, पदस्थ कर्मचारियों की योग्यता और उनके दैनिक कार्यों का विवरण, आपातकालीन स्थिति से निपटने की कार्ययोजना तथा सब स्टेशन से पर्यावरण को होने वाले वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण के संबंध में भी जानकारी ली। निरीक्षण उपरांत जायका टीम ने सब स्टेशन एवं ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप पाए जाने पर संतोष व्यक्त किया।

उपयोगिता जानने के लिए व्यापारियों से की चर्चा- जायका द्वारा वित्त पोषित फंड से निर्मित महावड़िया सब स्टेशन की उपयोगिता के संबंध में अधिकारियों से जानकारी लेने के साथ जायका टीम ने सब स्टेशन के नजदीक स्थित व्यापारियों के प्रतिष्ठानों में जाकर उनका प्रत्यक्ष फीडबैक भी लिया। व्यापारियों ने बताया कि सब स्टेशन के निर्माण से क्षेत्र में बिजली आपूर्ति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। अब उन्हें पर्याप्त एवं निर्बाध बिजली मिल रही है, जिससे व्यापार के संचालन करने में अब उन्हें आसानी हो रही है। इससे उनके आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सकारात्मक बदलाव आया है।

उपभोक्ताओं ने बताये फायदे

जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (जायका) की टीम ने भोपाल स्थित महावडिया सब स्टेशन के मूल्यांकन एवं निरीक्षण के दौरान सबस्टेशन के निर्माण से आसपास के क्षेत्रों में हुए बदलावों की जानकारी ली गई। सबस्टेशन के सामने स्थित डेयरी के संचालक श्री दिनेश यादव (यादव डेयरी) ने बताया कि सन् 2021 के पूर्व में बिजली सप्लाई मंडीदीप सबस्टेशन से आती थी, जिसमें लाइन की लंबाई अधिक होने से अनेक बार ट्रिपिंग एवं वोल्टेज में उतार-चढ़ाव (फ्लक्चुएशन) की समस्या रहती थी।

किसान ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

- पिता बोले पत्नी धमकाती थी, केस भी दर्ज करा रखा था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ईंटखेड़ी में रहने वाले एक किसान ने मंगलवार रात घर में सल्फास की गोली खा लीं। इलाज के दौरान बुधवार सुबह उसकी मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पत्नी से विवाद के चलते आत्महत्या की बात पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आई है। गोलू साहू (28) हुकुचंद साहू रायपुर गांव ईंटखेड़ी का रहने वाला था। वह किसानी करता और मारवाड़ी रोड पर एक कॉस्मेटिक्स शॉप पर काम भी करता था। उसकी पत्नी ने दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज करा रखा था। बीते एक साल से पत्नी अपने मायके में रह रही है। लगातार कॉल पर दूसरे केस में फंसाने की धमकी देती थी।

बच्चों से नहीं मिलने देती थी पत्नी

गोलू साहू के दो बच्चे हैं। पत्नी गोलू को बच्चों से भी नहीं मिलने देती थी। इस बात को लेकर वह तनाव में रहते थे। मृतक के पिता का आरोप है कि बहू की आए दिन की धमकियों से तंग आकर बेटे ने मंगलवार रात को सल्फास खा लिया। इलाज के दौरान बुधवार की सुबह उनकी मौत हो गई।

बदमाशों ने युवकों को बेहोश होने तक पीटा..

भोपाल में पत्थर से मुंह-नाक को कुचला, 38 सेकंड में 12-15 वार, केस वापस नहीं ले रहे थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के भीम नगर में 6 से ज्यादा नकाबपोश बदमाशों ने मंगलवार रात दो युवकों को बेहोश होने तक पीटा। चाकू-छुरी, पत्थर से मुंह-नाक को कुचल दिया। लात-घूंसों से भी मारा। हमले में दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जानकारी के मुताबिक घायलों में रावेंद्र सेन और सौरभ विश्वकर्मा शामिल हैं। 38 सेकंड के भीतर करीब 12-15 वार किए गए। हमला पुरानी रंजिश के चलते किए गया है। मारपीट करने का वीडियो भी सामने आया है। पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अक्कू गैंग ने की वारदात

पुलिस के मुताबिक, अक्कू उर्फ आकाश और विशाल चपटी ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर रावेंद्र सेन पर हमला किया। यह हमला एक पुराने केस में समझौता करने से मना करने पर गुस्से में किया गया। राघवेंद्र और उसके साथी को आरोपियों ने जमकर पीटा है।

दोस्त की ओर से एफआईआर दर्ज की गई- राघवेंद्र के दोस्त सौरभ विश्वकर्मा ने पुलिस को बताया कि वे हनुमान मंदिर के पास खड़े होकर बात कर रहे थे, तभी अक्कू, विशाल और उनके साथियों ने अचानक हमला कर दिया। हमले में राघवेंद्र के सिर में गंभीर चोट आई, जबकि बीच-बचाव करने की कोशिश में उसे भी गंभीर चोटें आईं।

इलाके में दबदबा बनाए रखने के लिए हमला

आरोपी अक्कू और विशाल इलाके के जाने-माने क्रिमिनल हैं। उनके डर की वजह से आमतौर पर कोई शिकायत नहीं करता। हालांकि, राघवेंद्र ने उनके खिलाफ मारपीट का केस दर्ज कराया है। बार-बार कहने पर भी राघवेंद्र ने केस वापस नहीं लिया।

इसके बाद आरोपियों ने दहशत फैलाने के इरादे से हमला कर दिया। आरोपी दिखाना चाहते थे कि उनके खिलाफ एक्शन लेने वालों का क्या होता है।

पूर्व विवाद के चलते हमला

एडिशन डीसीपी गौतम सोलंकी ने बताया कि सौरभ और राघवेंद्र का अरोपियों से पूर्व से विवाद है। इसी रंजिश के चलते हमला किया गया है। दो नामजद सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। मामले की जांच की जा रही है। जल्द गिरफ्तारी की जाएगी।